

गोलापूर्व जैन

» वर्ष : 14 » अंक : 57 » जुलाई-सितंबर 2020 » मूल्य : 15 रु.

अ.भा. गोलापूर्व महासभा महिला इकाइयों की विभिन्न गतिविधियाँ



अपील

शाशवत् तीर्थक्षेत्रराज श्री 1008 सम्मोद शिखर जी (मधुवन) में

बुन्देलखण्ड भवन जोकि झारखंड भवन के बाजू में लगभग 20000 वर्गफुट जगह में अपना स्वरूप ले रहा है।

हमारी कार्य योजना

1. भव्य जिन मन्दिर
2. पूर्ण सुविधायुक्त यात्री निवास
 - ए.सी. रूम
 - एयर कूल्ड रूम
 - सामान्य रूम
 - हाल
3. संत निवास
4. भोजनालय
5. वृद्धाश्रम/त्यागी
6. जनरेटर रूम
7. कर्मचारी आवास
8. पुस्तकालय
9. वाहन

बुन्देलखण्ड भवन, श्री सम्मोद शिखरजी मधुवन में निर्माणाधीन जिनमंदिर का कार्य बेसमेन्ट एवं मंदिर का हॉल का कार्य पूर्ण हो चुका है। डोम का कार्य चालू है, वेदी एवं शिखर का कार्य शीघ्र प्रारंभ होने जा रहा है।

ऐसे शाशवत् तीर्थ क्षेत्र पर बन रहे जिन मंदिर में एवं समूचे बुन्देलखण्ड का गौरव 'बुन्देलखण्ड भवन' में अपने खुले मन से अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग कर पुण्य लाभ अर्जित करें। जो सदियों तक अविस्मरणीय रहेगा। कृपया सदस्यता ग्रहण करें।

बुन्देलखण्ड भवन सदस्यता स्वरूप निम्नानुसार है-

● परम शिरोमणी सदस्य	- 1,01,000.00	● शिरोमणी सदस्य	- 51,000.00
● विशिष्ट सदस्य	- 21,000.00	● सामान्य सदस्य	- 11,000.00

बुन्देलखण्ड भवन सोसायटी

बैंक ऑफ इण्डिया, सागर

खाता क्रमांक : 942010110000685 IFSC Code - BKID0009420

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा के निम्न श्रेणी में सदस्य बनें। आप हमारी वेबसाइट www.golapurvajainsamaj.com पर सदस्यता फार्म एवं राशि वेबसाइट पर उपलब्ध है।

- शिरोमणी संरक्षक
- परम संरक्षक
- विशिष्ट संरक्षक
- गौरव संरक्षक
- संरक्षक
- विशिष्ट सदस्य
- सहयोगी सदस्य
- आजीवन सदस्य
- वार्षिक सदस्य

सदस्यता राशि आप सीधे हमारे निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं-

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

बैंक ऑफ बड़ौदा (विजया बैंक) शाखा-सागर

खाता क्रमांक : 6489020000137

IFSC Code - BARB0VJSAMP

श्री वर्णी चिकित्सा निधी

बैंक ऑफ इंडिया शाखा-सागर

खाता क्रमांक : 942010110003460

IFSC Code - BKID0009420



दिगम्बर जैन युवक-युवती परिचय पुस्तिका



आप हमारे निम्न QR CODE को स्कैन कर सीधे मोबाइल एप एवं वेबसाइट पर जा सकते हैं

For- Mobile App



For- Website



के फार्म वेबसाइट एवं मोबाइल एप पर सीधे भरें एवं राशि 450/- सीधे हमारे निम्न बैंक खाते में जमा करें।

Website - www.golapurvajainsamaj.com

Mobile App - <http://golapurvajainsamaj.com/public/DJGPMs.apk>

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

बैंक ऑफ बड़ौदा (विजया बैंक) शाखा-सागर

खाता क्रमांक : 6489020000137

IFSC Code - BARB0VJSAMP

फार्म भेजने की
अंतिम तिथि

10 सितम्बर 2020

दीपावली तक
परिचय पुस्तिका
डाक द्वारा आप तक
भेज दी जावेगी।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा का मुखपत्र : 1918

गोलापूर्व जैन

(त्रैमासिक)

■ वर्ष : 14 ■ अंक : 57 ■ जुलाई-सितंबर 2020 ■ मूल्य : रु. 15 ■ आजीवन : रु. 501

ॐ संस्थापक संपादक ॐ

स्व. पं. मुहलालजी रांधेलीय न्यायतीर्थ
(1893-1993, सागर)

ॐ परामर्श प्रमुख ॐ

डॉ. शीतलचंदजी जैन
जयपुर (मो. 09414783707)



ॐ मार्गदर्शक ॐ

डॉ. नेमिचंदजी जैन
खुरई (मो. 09406538295)

ॐ प्रबंध सम्पादक ॐ

सुरेन्द्र खुर्देलीय
(मो. 9893198459)

ई-मेल : gkhurdelia@gmail.com



ॐ प्रधान सम्पादक (मानद) ॐ

राजेन्द्र जैन 'महावीर'
सनावद

(मो. 9407492577, 9826299568)

ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com



ॐ सह सम्पादक (मानद) ॐ

श्रीमती (डॉ.) रंजना पटोरिया
कटनी

(मो. 9827279009)

ॐ प्रकाशक एवं प्रधान कार्यालय ॐ

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा
(रजिस्ट्रेशन नं. 06/09/01/06188/07)

द्वितीय तल, तीर्थकर परिसर, डॉ. पं. पल्लाल जैन साहित्याचार्य मार्ग

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.), फोन : 07582-243101

ई-मेल : golapurvmahasabha@gmail.com

महासभा की सदस्यता शुल्क

■ शिरोमणि संरक्षक :	1,00,000.00
■ परम संरक्षक :	51,000.00
■ विशिष्ट संरक्षक :	31,001.00
■ गौरव संरक्षक :	21,000.00
■ संरक्षक :	11,000.00
■ विशिष्ट सदस्य :	5,101.00
■ सहयोगी सदस्य :	2101.00
■ आजीवन सदस्य :	501.00
■ वार्षिक सदस्य :	240.00

अनुरोध

कृपया महासभा के उपरोक्तानुसार श्रेणी में सदस्य बनें एवं जिन सम्माननीय सदस्यों की सदस्यता राशि/विज्ञापन राशि बकाया है, कार्यालय में शीघ्र भेजकर सहयोग प्रदान करें।

आवश्यक : ● लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ रचनाएँ कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर स्वच्छ हस्तलिखित अथवा टाइप की हुई आना चाहिए। समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भिजवाना आवश्यक है। आयोजनों तथा अन्य अवसरों के समाचार संक्षेप में भेजें। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ, लेख, कविता, कहानी, समाचार एवं समीक्षार्थ पुस्तकें राजेन्द्र जैन 'महावीर', 217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.) 451111, ई-मेल rjainmahaveer@gmail.com, पर भेजें। (पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र सागर ही रहेगा।)

निवेदन पाठकों से

'गोलापूर्व जैन' पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को स्थायित्व प्रदान करने के लिए आजीवन रु. 500 या वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 कार्यालय में नकद या ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करते रहने की कृपा करें। घर में होने वाले मांगलिक कार्यों में घोषित दान भेजें। -संपादक

प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा, प्रधान कार्यालय : तीर्थकर परिसर, नमक मंडी, कटरा बाजार, सागर के लिए अरिहंत ऑफसेट, सागर से मुद्रित। लेआउट/डिजाइन : नितिन पंजाबी, वी.एम. ग्राफिक्स, इंदौर (मो. 098931-26800)



जैन दर्शन के नजदीक ले जाता कोरोना वायरस

वर्ष 2016 में जब आधी रात से नोटबंदी लागू हुई तो घरों में रखे वे कागज के टुकड़े जो कभी बहुत अच्छे लगते थे, काटने को दौड़ने लगे। एक कागज के आदेश ने अरबों-खरबों मौद्रिक कागजों को निर्मूल कर दिया था। हमारे आगम ग्रंथ ऋषि-मुनि हमें समझा-समझा कर थक गए वह बात एक आदेश ने समझा दी कि असली धन तो आप स्वयं हो। लेकिन थोड़े दिन हुए वह घटना भी श्मशान के वैराग्य जैसी ही निकली जो 500-1000 के नोट इकट्ठे कर रहे थे, वे अब 2000 के नोट इकट्ठा कर रहे हैं।

हम संसारी जीवों की हालत ऐसी ही है। हम घटनाओं से सीखते व समझते नहीं हैं। हम घटनाओं को याद कर लेते हैं, उन्हें दूसरों को सुनाने में हमें बहुत आनंद आता है। लेकिन हमें वे घटनाएँ क्या कुछ सीख दे जाती हैं, हम उन घटनाओं से कुछ परिवर्तन लाते हो तो पता चलेगा नहीं। फिर क्या मतलब है? हम कितना भी अभिषेक कर लें, पूजन, धर्म ध्यान, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, आलोचना पाठ, सामायिक, समाधिमरण पाठ, एकीभाव स्तोत्र सहित अनेक पाठ हैं, स्तुति है। उन्हें नियमित करते हैं लेकिन क्या हमने उनसे ग्रहण किया है कुछ, तो पता चलेगा नहीं। हमें अभिषेक पाठ, पूजन, प्रतिक्रमण, आलोचना आदि कंठस्थ हैं, लेकिन कंठ के नीचे नहीं उतर रहे हैं। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी का कथन है- “अपने धर्म का प्रचार करने का बेहतरीन तरीका उसे अपने जीवन में उतारना है।” हमें समझने के लिए एक लाइन में व्याख्या सार्थक है।

कोरोना काल चल रहा है। दशलक्षण धर्म 23 अगस्त से प्रारंभ हो रहे हैं। क्या कभी चिंतन किया है कि कोरोना ने हमें जैन दर्शन से दूर किया है या नजदीक? बहुत से लोग जवाब देंगे कि हम भगवान से बहुत दूर हो गए, मंदिर नहीं जा पा रहे, अभिषेक-पूजन नहीं कर पा रहे। आदि बहुत सारी बातें हैं। लेकिन मेरा मानना है कि कोरोना ने हमें जैन दर्शन व भगवान से बहुत नजदीक ला दिया है। मैं दश धर्मों की व्याख्या में ही अपनी बात समाहित करता हूँ कि कैसे हम धर्मों के नजदीक आए हैं।

उत्तम क्षमा धर्म के नजदीक लाता है कोरोना

क्षमा धर्म का पालन लॉकडाउन के दौरान प्रेक्टिकली हुआ कि नहीं। हमने लगभग तीन-चार महीने घर पर निकाले। उस दौरान जो मिला, जैसी परिस्थिति बनी, हमने खाया-पिया या नहीं? सब किया। क्योंकि ये सब मजबूरी थी। हमारा स्वार्थ था, जीवन जीने का लोभ था। क्षमा भी हम तीन तरह से करते हैं- मजबूरी में, स्वार्थ वश और



राजेन्द्र जैन 'महावीर'

वास्तविक रूप से। मैं समझता हूँ मजबूरी व स्वार्थ वश क्षमा करना कोरोना ने सिखा दिया है। अब वास्तविक रूप से क्षमा करना सीखना है। यही तो उत्तम क्षमा है। आइये, मजबूरी, स्वार्थवश, लोभवश क्षमा के बाद वास्तविक क्षमा यानी क्रोध को उत्पन्न ही नहीं होने देना, यही वास्तविक क्षमा है।

उत्तम मार्दव का ज्ञान और कोरोना

हमारे अंदर मृदुता का भाव उत्पन्न होना यानी अंदर से अहंकार मुक्त होना मार्दव धर्म है। बड़े-बड़े नेता, नौकरशाह, कारोबारी, उद्योगपति, मुनिराज से लेकर श्रावक सब क्वारंटीन हो गए। जो जहाँ जैसा मिल रहा है वह सब सम भाव से हमने स्वीकार किया। मैं इतना बड़ा हूँ? यह सब कोरोना ने भुला दिया। यह कोरोना की मजबूरी थी लेकिन क्या हम इसे जीवन भर के लिए छोड़कर अहंकार मुक्त नहीं हो सकते?

मन की कुटिलता को हरता कोरोना

उत्तम आर्जव कपट मिटावे पढ़ते-पढ़ते अनेक वर्ष व्यतीत हो गए लेकिन मन में कपट कुंडली मारकर बैठा था। घर में चार माह रहकर यह तो समझ में आया होगा कि घर में यदि कुटिल रहेंगे तो ज्यादा दिन नहीं चलेगा, इसलिए घर में कौन रोज झगड़ा करता है इसलिए 'जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये' की भावना बनी कि नहीं? भले ही मजबूरी में बनी हो बनी तो है। आइये, उसे स्थायित्व प्रदान करें।

शुचिता के प्रति जागृत करता कोरोना

हम लोग लोभी हैं। लोभ बड़ा तस्कर है। हमें दिखाई नहीं देता। ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते हैं, लोभ निरंतर हमसे दो कदम आगे ही रहता है। लोभ तीन प्रकार का बताया है- वित्तेषणा, लोकेषणा, पुत्रेषणा। कोरोना ने समझा दिया कि कितना भी धन हो, सब यहीं पड़ा रह जाएगा। कितना भी बड़ा पद हो, कितने ही पुत्र सगे-संबंधी हों, कोरोना हुआ तो कचरे जैसे जला दिये जाओगे। पद, धन के कारण आगे-पीछे घूमने वाले देखने भी नहीं आएँगे। इसलिए यदि थोड़ा बहुत भी चिंतन करते हो तो समझें और जीवन को शुचितापूर्ण बनाएँ।

सारे धर्मों को समझा गया कोरोना

कहावत है- समझे तो अपने आप से नहीं तो किसी के बाप से। यदि समझना हो तो एक ही धर्म में सारे धर्म समाहित हैं। उत्तम सत्य,

संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य सभी को मजबूरी में ही सही लेकिन सिखा गया है कोरोना।

हमें यह समझ लेना चाहिये कि मंदिर हम भगवान के दर्शन करने नहीं, स्वयं को भगवान के स्वरूप में देखने जाते हैं। यानी कि अपने आत्मिक रूप का दर्शन जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा में करते हैं। कोरोना काल में मंदिर न जा पाए तो घबराएँ नहीं। हम हर जीव को अपना समझें। जो हमने पढ़ा है, सीखा है, उसे अपने अंतर में स्वीकार करें। जो कंठस्थ है उसे हृदयस्थ करते हुए आचरण में लाएँ। धर्म मजबूरी से नहीं। उत्तम क्षमा आदि धर्मों का पालन दस दिन ही नहीं, हमेशा पालन करें। कोरोना की मजबूरी में धर्म का पालन नहीं, धर्म का पालन मजबूती से करने का संकल्प लें।

मेरा यह मानना है कि जब हमारी मजबूरी हमारी मजबूती बन जाती है तब हमारा निखार होना प्रारंभ हो जाता है। आचार्य विनोबा भावे जिन्होंने जैन धर्म अनुरूप समाधि को धारण किया था, उनका कथन है- मनुष्य से यही भूल होती है कि वह दुनिया को सुधारना चाहता है पर स्वयं सुधारना नहीं चाहता। बहुत ही सार्थक पंक्तियाँ हैं।

अतः मेरे उपकारी विद्वत् जगत के श्रेष्ठ मनीषी डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली ने कोरोना संकट पर जो भेजा वह जैन दर्शन के नजदीक ले जाता है-

*‘उत्तमा स्वात्म चिन्ता स्यात्
देह चिन्ता च मध्यमा।
अधमा काम चिन्ता स्यात्
पर चिन्ताऽधमा धमा।।’*

कोरोना के दौरान इन पंक्तियों का चिंतन बड़ा ही सार्थक है। स्वयं यानी अपनी आत्मा की चिन्ता करना उत्तम चिन्ता है। अपने शरीर की चिन्ता करना मध्यम चिन्ता है। अपने काम, व्यवसाय आदि की चिन्ता अधम चिन्ता है लेकिन दूसरे की चिन्ता (परचिन्ता) करना तो अधम से भी अधम काम है।

बड़ा ही मार्मिक है। इन पंक्तियों में बहुत सारा मोटिवेशन होता है या यूँ कहें कि हम इस संकट से ही सीख जाएँ क्योंकि अपने आत्मा की चिन्ता करें। स्वयं को बहिरंग से बचाकर अंतरात्मा में

आइसोलेट करें। अपने शरीर को होम क्वारंटाइन करें। अपने काम-व्यवसाय की चिन्ता छोड़ें। 2020 में स्वयं को बचाने की चिन्ता करें और दूसरों की चिन्ता जो अधर्म ही है, उसे करना छोड़ें क्योंकि आप यदि स्वयं में आइसोलेट नहीं हुए, आपने अपने शरीर को होम क्वारंटाइन नहीं किया तो फिर आपको कोई नहीं बचा सकता है। इसलिए जैन दर्शन में वर्णित जैन जीवन पद्धति अपना ले। बाह्य वस्तुओं को छोड़कर घर पर ही स्वयं के दर्शन, स्वयं का स्वाध्याय करते हुए वास्तविकत दशलक्षण पर्व मनाएँ। बिना किसी दिखावे के बिना किसी जुलूस के।

जीवन में पहली बार मौका आया है कि आज तक हमने प्रभावना के नाम पर अपनी भावना दूसरों को थोपी है। इस बार के दशलक्षण में अपने आचरण के प्रति सद्भावना से ही प्रभावना होती। इसलिए ध्यान रखें-

‘घड़ी में समय देखने की सार्थकता तभी है जब आप समय पर चलने की कोशिश करें।’

समय की सार्थकता है। पर्व मनाएँ स्वयं के लिए, भावना भाएँ स्व-पर हित के लिए, स्वयं को बचाएँ सभी के लिए। नित सकारात्मक सोचें।

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन, जिन्होंने अपनी प्रयोगशाला में भगवान महावीर की फोटो लगा रखी थी। जब उनसे पूछा गया कि भगवान महावीर की फोटो क्यों? तो उन्होंने जो उत्तर दिया कि “अभी तक जितनी भी खोजें की हैं वे बाहरी थी, अब जब भी मौका मिलेगा, अपने अंतर की खोज करूँगा। भगवान महावीर ने भी बाहर की खोज बंद कर स्वयं को अंतरंग में स्थापित किया था।”

उन्हीं का बहुत सुंदर कथन है-

*अव्यवस्था के बीच सहजता खोजिये,
शोर-शराबे के बीच समन्वय खोजिये,
परेशानियों के बीच अवसर खोजिये,
लेकिन हार मत मानिये।*

हम सब भी कोरोना के बीच अपने दश धर्मों को मन की मजबूती से स्वीकार करें। हार न मानें।

सभी से उत्तम क्षमा की भावना के साथ...।

वेवसीन व शिक्षक

रूस में एक प्रेस मीट में एक पत्रकार ने राष्ट्रपति पुतिन से सवाल किया। “आप पहले डॉक्टरों और शिक्षकों को वैक्सीन क्यों देना चाहते हैं? शेष 30 करोड़ आम लोगों के बारे में क्या? क्या देश को उनकी और प्रशासकों की आवश्यकता नहीं है?”

पुतिन का जवाब- “उनकी रक्षा करके मैं आम लोगों की रक्षा करना चाहता हूँ। अगर एक डॉक्टर की मृत्यु हो जाती है, तो दूसरे डॉक्टर को बनाने के लिए हमें 30 साल की जरूरत होती है और जनता के करोड़ों रुपये खर्च करने पड़ते हैं, यह लोगों का पैसा है। यदि डॉक्टर की मृत्यु हो जाती है, तो

उन 30 वर्षों के दौरान उनकी अनुपलब्ध सेवाएं कई आम लोगों की मृत्यु हो सकती हैं। इसी तरह शिक्षक तैयार करने के लिए भी समय और जनता का पैसा बर्बाद होगा। अगर एक शिक्षक मर जाएगा तो डॉक्टर कौन तैयार करेगा? वे दोनों राष्ट्र के लिए अतुलनीय संपत्ति हैं। इसलिए वे मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं। आप, मैं और तथाकथित आम लोग तभी सुरक्षित हैं जब वे मौजूद हैं।”

क्या यह पर्याप्त है? या अभी भी किसी और की जरूरत है? एक महान व्याख्या। शिक्षक इस दुनिया में एक जीवित भगवान है।



दशलक्षण धर्म

प्रवचन : प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज

पूर्वराज पर्युषण की पावन बेला साल भर के कचरे को निकालने का महान अवसर है। यह एक ऐसा आध्यात्मिक पर्व है जिसमें व्यक्ति अपनी आत्मा को दस धर्मों द्वारा पवित्र करता है। ये दश धर्म विश्व के समस्त प्राणी, सम्प्रदाय, मत, परंपरा, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के संसारी प्राणी तथा मुक्त जीव सभी में पाए जाते हैं।

बंधुओं! धर्म को पाना कठिन नहीं। जिस प्रकार पानी को पाने के लिए कुएँ की परतों को हटाना पड़ता है उसी प्रकार धर्म को पाने के लिए भी हमें हमारी आत्मा में लगी हुई कषाय रूपी परतों को हटाना होगा तो धर्म सहजता से प्राप्त हो जाता है। आचार्य भगवन कहते हैं कि शब्दों से कहना जितना सरल होता है, उसे पाना उतना ही कठिन है। शब्द या अक्षर मात्र धर्म नहीं, उस धर्म को पाने व समझने का तरीका भी होता है।

उत्तम क्षमा

आज सर्वप्रथम हम उत्तम क्षमा धर्म को समझने का प्रयास करें। यहाँ क्षमा के साथ उत्तम विशेषण दिया गया है। जहाँ क्रोध कषाय का शनैः-शनैः शमन होता चला जाता है वहाँ से ही क्षमा का उद्गम होता है। क्षमा ही श्रेष्ठ है, क्षमा ही पूजा है, क्षमा ही सुख, दान व पवित्र उत्तम मंगल है तथा क्षमा व्यक्ति के जीवन में आते ही आनंद व खुशियों की वर्षा करती है 36 को 63 में बदल देती है। किसी श्लोक में कहा- एक करोड़ पुष्प चढ़ाओ या एक स्तोत्र पढ़ो, दोनों का फल बराबर है। एक करोड़ स्तोत्र पढ़ने के बराबर एक माला का फल, एक करोड़ जाप के बराबर एक बार ध्यान का फल और एक करोड़ ध्यान के फल के बराबर एक बार की क्षमा का फल मिलता है।

संसार में प्रायः झगड़ा शांत करने वाले कम, ईंधन डालने वाले अधिक मिलते हैं। सास-बहू, देवरानी-जेठानी के उदाहरण प्रसिद्ध हैं। जिन्हें बनाने वाले हम ही हैं जबकि तू-तू मैं-मैं और भी रिश्तों के बीच होती है। समस्याओं का प्रारंभ ज्यादा बड़ा नहीं होता, जितना उनका विशाल रूप देखने में आता है। जिस प्रकार नदी का उद्गम बहुत छोटा नल के पाइप की तरह होता है लेकिन रूप विशाल होता है, उसी प्रकार समस्याओं, झगड़ों का प्रारंभ केवल शब्दों से होता है।

और हमारे क्रोध के कारण बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों से होने वाले युद्ध का विशाल रूप ले लेता है। जैसे महाभारत का कारण मात्र शब्द ही थे कि अंधों के पुत्र अंधे होते हैं। इसलिए क्रोध एक क्षण का भी हानिकारक माना गया है। यदि तत्काल क्षमा भाव आ जाए तो वही वास्तविकता में क्षमा धर्म है।

क्रोध कभी भी अकेले व्यक्ति में नहीं आता बल्कि दो या दो से अधिक व्यक्तियों में उत्पन्न होता है। इसलिए मुनिजन सदैव अपनी आत्मा में रमने का प्रयास करते हैं। कदाचित् उनमें क्रोध का सद्भाव भी पाया जाए तो वे संज्वलन कषाय होती है जो निरंतर परिवर्तित होती रहती है। अतः

अंतर्मुहूर्त मात्र ही कषाय मुनियों को अपने छोटे गुणस्थान से च्युत नहीं होने देती तथा उनकी मुक्ति का कारण बनती और अनंतानुबंधी असंख्यात गुणित क्रम से बढ़ती हुई अनंत संसार को बाँधती है।

अतः हम अपने जीवन में क्रोध कषाय को छोड़ उत्तम क्षमा धर्म को धारण करें।

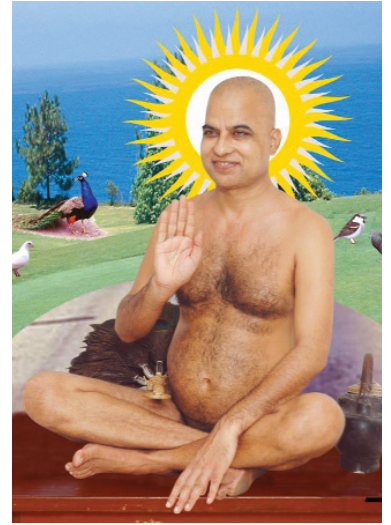
उत्तम मार्दव

'मृदोर्भावः मार्दवं' भावों की मृदुता का नाम ही मार्दव धर्म है। यानी शरीर से झुकने मात्र का नाम मार्दव धर्म नहीं है। संसार में प्रायः शरीर से झुकने वालों की अपेक्षा मन से झुकने वाले कम मिलते हैं। दो व्यक्तियों के बीच होने वाले विवाद में एक के कमजोर पड़ने पर भी व्यक्ति कहने लगा है- हाथ जोड़े भैया बात बंद करो। यहाँ से जाओ। ऐसा व्यक्ति बाहर से तो हाथ जोड़ लेता है लेकिन उसके परिणाम या भाव हाथ जोड़ने के नहीं होते। कहते हैं-

*'नमन-नमन में फेर है, अधिक नममें नादान।
दगाबाज दूना नममें, चीता चोर कमान।'*

सामान्य रूप से व्यक्ति जितना झुकता है उससे दुगुना दगाबाज अपना कार्य सिद्ध करने के लिए झुक जाता है और चीता, चोर भी कार्य सिद्ध हेतु झुक जाते हैं। लेकिन यहाँ परिणामों से झुकने को धर्म कहा है और यह धर्म वचनों से नहीं होता। प्रायः व्यक्ति वचनों से तो क्षमा माँग लेता है किंतु हृदय नम्र न हो तो झुकना व्यर्थ है। धर्म के लिए विनय भाव का होना आवश्यक है और विनय से मान नष्ट होता है। भारत देश में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक मात्रा में भगवान के मंदिर-तीर्थक्षेत्र आदि हैं क्योंकि मंदिर, भगवान, गुरु आदि ऐसे स्थान हैं जहाँ से व्यक्ति झुकना सीखता है। कभी-कभी बच्चे मंदिर में जीन्स आदि ऐसे कपड़े पहनकर आते हैं जिससे उन्हें बैठने में परेशानी होती है और वे खड़े-खड़े ही सिर झुका लेते हैं। यानी उन्होंने अभी धर्म की, भगवान की कीमत नहीं की है। मान लीजिये गुरु तो फिर भी आशीर्वाद दे देंगे किंतु ध्यान रखना बिना झुके आज तक किसी की बाल्टी नहीं भरी।

मार्दव धर्म एक ओर खाली होने की और दूसरी ओर भरने की शिक्षा देता है। यानी आप कषाय, अहंकार, राग-द्वेष, मोह के कचरे को खाली कर दीजिये क्योंकि ये हमारे धर्म के विनाशक हैं और दूसरे की अपेक्षा स्वयं की गलतियों को देखने का प्रयास करें व संभलने की ओर अपने कदम बढ़ाएँ। संसार में 'अहमेदं ममेदं' ये दो ही आत्मा को स्वभाव से च्युत करने वाले हैं। झगड़े को बढ़ाने वाले हैं। बस इनको दूर कर दो तो भगवत स्वरूप



आत्मा का रसास्वादन अनुभूति हो सकती है जो आपके जीवन को सुख-शांति प्रदान करने वाली है। अतः हम मार्दव धर्म का आश्रय लेकर अपने जीवन को सार्थक करें।

उत्तम आर्जव

उत्तम आर्जव धर्म आचरण में लाने का विषय है जो हमें यह सिखाता है कि सरल व सच्चे मार्ग की ओर कदम बढ़ाओ। सच्चा मार्ग ही मुक्ति पथ का हेतु है। आपने अपने जीवन में कितनी पूजा की, कितने प्रतिक्रमण, स्वाध्याय किये अथवा कितने मुनिराजों को और कितनी बार आहार दिया यह महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि महत्व इस बात का है कि आपकी ये सारी क्रियाएँ कितने भाव सहित व सम्यक् रूप से हुई हैं। क्योंकि जिस प्रकार नीबू की एक बूँद पड़ते ही दूध दूध रूप न रहकर छैना अथवा दही में परिवर्तित हो जाता है, उसी प्रकार संसार की लौकिक प्रशंसा, लोक पूजा, प्रतिष्ठा, सम्मान की भावना रूपी नीबू की बूँद साधक की साधना, त्याग, तपस्या को सत्य से असत्यता में परिवर्तित कर देती है। फिर असलियत नहीं रह पाती। इसलिए इस प्रकार की बड़ी साधना की अपेक्षा छोटी साधना करना अच्छा है। साधना छोटी हो लेकिन सच्ची होनी चाहिये।

प्रायः संसारी प्राणी ऊपर से अच्छा दिखने के लिए तरह-तरह के साबुन, क्रीम, पावडर आदि का प्रयोग करता है किंतु वह अपने शरीर की दुर्गन्धी को दूर नहीं कर पाता क्योंकि ये सारी लौकिक सामग्रियाँ तत्कालता में जितनी अच्छी होती हैं उनका असर कालान्तर में उतना ही हानिकारक भी होता है। तो फिर 'चार दिन की जिंदगी में मायाचारी किसलिए' बाहर की सुंदरता के लिए हम कितनी भी परिश्रम करें, वह क्षणिक ही होता है।

बंधुओं! बाहर की अच्छाई, प्रशंसा सब कुछ नकली ही होती है। बाहर की अच्छाई से आपको प्रशंसा मिल सकती है, प्रसन्नता नहीं। पद मिल सकता है, प्रतिष्ठा नहीं। व्यक्तित्व मिल सकता है, विश्वास नहीं और शक्ति मिल सकती है शांति नहीं। लेकिन जो कुछ भी मिलता है वह सब क्षणिक ही होता है क्योंकि झूठ, छल-कपट, झूठा सम्मान-प्रतिष्ठा आदि अधिक समय नहीं चल सकते हैं। जैसे आग को कितना भी कपास से ढँकने का प्रयास करो किंतु वह धीरे-धीरे बाहर आ ही जाती है। उसी प्रकार मायाचारी को भी आप कितना भी छिपाने का प्रयास करो, वह एक न एक दिन दुनिया की नजरों में आकर व्यक्ति के सम्मान-प्रतिष्ठा-इज्जत सबको समाप्त कर देती है।

अतः हम संसार की माया को छोड़ जिनगुण सम्पत्ति रूप अपने आत्मिक सम्पत्ति वैभव (माया) को प्राप्त करने का प्रयास करें। कहते हैं सत्य के बिना आत्मा की पवित्रता नहीं होती और बिना लोभ के घटे सत्यता का उद्भव नहीं होता। किंतु चार कषायों के क्रम से लोभ कषाय अंत तक जाती है। आश्चर्य यह है कि सबसे पहले आने वाली कषाय अंत में जाती है। अतः पर्युषण पर्व के चौथे दिन उत्तम शौच धर्म को समझें।

उत्तम शौच धर्म

संसार में प्रायः लोभी प्राणी कभी संतुष्ट नहीं होता। व्यक्ति सोचता है धनवान ही लोभी हो सकता है लेकिन ऐसा नहीं है। कभी ऐसे भी प्राणी देखे जाते हैं कि सब कुछ होने पर भी लोभ नहीं रहता। जिनके पास कुछ नहीं उनमें अधिक लोभ देखा जाता है कि मेरा कुछ चला न जाए। जो स्वयं दूसरे

की सुख-शांति-कल्याण की भावना रखता है सर्वप्रथम सुख-शांति उसके पास ही आती है। शांतिधारा में हम देश, राष्ट्र, पुर, नगर, राजा, प्रजा, यति, तपस्वी सभी की शांति की कामना करते हैं। देश के नेता चुनाव के समय बड़ी-बड़ी बातें करते हैं किंतु कुर्सी मिलते ही सब भूल जाते हैं। यानी उनकी देशवासियों के प्रति उन्नति, उत्थान के कोई भाव नहीं होते, मात्र धन का लोभ रहता है।

धन का लोभी खेत के बिजूके की तरह न स्वयं खाता है न ही खाने देता है। धन की दान, भोग व नाश ये तीन गति कही है। यदि दो कार्य न हुए तो तीसरी गति यानी धन का नष्ट होना निश्चित है। केवल धन संग्रह का नाम ही नहीं अपितु इच्छा कांक्षा भाव भी सबसे बड़ा लोभ है। ऐसा कुंदकुंद आचार्य ने वारसाणुवेक्खा ग्रंथ की 75वीं गाथा में कहा है।

संसार के प्रत्येक प्राणी के अंदर इतनी इच्छाएँ रहती हैं जो कभी समाप्त नहीं होती। एक की पूर्ति होते ही दूसरी उत्पन्न हो जाती है। इच्छाएँ ही हमारी जीवन में हानिकारक होती हैं। व्यक्ति कहता आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। किंतु जो साधक मोक्ष की इच्छा को भी छोड़कर आत्मा की साधना करते हैं फिर उन्हें किसी चीज की आवश्यकता भी नहीं होती।

हमारे जीवन अपवित्रता की कारण केवल इच्छाएँ या लोभ होता है। जैसे-जैसे पवित्रता बढ़ती है, वैसे-वैसे इच्छाएँ समाप्त होती जाती हैं।

जो मुनि संतोष गुण के द्वारा लोभ रूपी मैल को धो देते हैं उनके अंदर ही शौच धर्म पाया जाता है।

बंधुओं! इच्छाएँ समाप्त नहीं होती, उन्हें समाप्त करना पड़ता है। इच्छाओं की समाप्ति ही सच्ची निर्वाणकारी दीक्षा है और दीक्षा ही उस पवित्र शौच धर्म प्राप्ति का साधन है। अतः शौच धर्म को अंगीकार कर हम भी अपने जीवन को पावन पुनीत करें।

उत्तम सत्य

सत्य वचन और सत्य धर्म दोनों में इतना अंतर है कि सत्य धर्म तो प्राणी मात्र का है लेकिन सत्य वचन प्राणी मात्र का नहीं क्योंकि भाषा का प्रारंभ दो इन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय तक रहता है। इसके आगे नहीं। जबकि सत्य धर्म सिद्ध जीवों में भी पाया जाता है। सत्य धर्म के लिए हमारे आचार्यों ने 'सत्ता' या 'अस्तित्व' शब्द का भी प्रयोग किया है। यानी सत्य धर्म का स्वभाव है और उसकी आधारशिला पर ही सारा संसार टिका है। यदि सत्य धर्म का अभाव माना जाए तो द्रव्य ही नहीं रहेगा और इस दृष्टि से संसार का कोई भी पदार्थ असत्य नहीं है। इसलिए धर्म को शब्दों से नहीं बाँधा जा सकता। वह वचनातीत होता है। जैसे शकर का धर्म तो मीठापन है लेकिन मीठे के धर्म को वचनों से नहीं कहा जा सकता।

सत्य धर्म है और वचन उसके साधन। सत्य अथाह असीम होता है। हाथ, पैर, इंजी टैप, फुट आदि की सीमा तो हो सकती है। सत्य धर्म की नहीं।

प्राचीन काल में सत्य धर्म के पालन हेतु मुनिजन अधिकतर अखंड मौन साधना करते थे और आज भी वह परंपरा कायम है। अंतर इतना कि 24 घंटे रहें या नहीं किंतु अहिंसा, सत्य महाव्रत की रक्षा हेतु वे रात्रि में वचनालाप नहीं करते। दिन में बोलते समय अपनी गुप्ति समिति का ध्यान रखते हैं कि कहीं कठोर, कटु, असत्य वचन न निकल जाए। अतः सदैव हित-मित-प्रिय वचनों का प्रयोग करते हैं। प्रायः आध्यात्मिक साधक निर्जन

एकान्तवास में साधना करते हैं। एकान्त वास यानी जहाँ गृहस्थों का आना-जाना न हो। हजार संयमियों के एक साथ रहने पर भी एकान्त वास ही कहलाता है क्योंकि जहाँ असंयमी के रहने पर वचनों पर कंट्रोल होना मुश्किल हो जाता है और वचनों के साथ चित्त भी उसी में जाता है। इसलिए आचार्यों ने ऐसे असंयमी का संसर्ग संयमियों के लिए त्याज्य माना है।

बंधुओं! अशक्य परिस्थितियों में भी सत्य का पालन करना यानी व्यवहार में भी झूठ बोलना सत्य धर्म है। अज्ञानता वश प्राणी अपनी बात पर अड़ जाता है कि 'माइट इज राइट' जो मैं कह रहा हूँ वही सत्य है। लेकिन जैसे-जैसे ज्ञान में वृद्धि होती है वैसे-वैसे मान्यता भी बदल जाती है। 'राइट इज माइट' यानी जो सत्य है वही मेरा है। आज जिनेन्द्र देव की वाणी को विज्ञान भी सत्य स्वीकार करता है क्योंकि अनेक वर्ष पूर्व विज्ञान के कोई आविष्कार न होने पर भी उन्होंने अनछने जल में असंख्यात जीवों की घोषणा कर दी थी।

अल्बर्ट आइंस्टीन वैज्ञानिक ने कहा- "जो छोटी बातों में असत्य की परवाह नहीं करते उसकी महत्वपूर्ण बातों पर भी कोई विश्वास नहीं करता।"

झूठ व्यक्ति के आदर, सम्मान, विश्वास को खो देता है। सत्य शक्ति के जीवन को ऊँचा उठाता है। आज भी सत्य जीवित है। अतः उस पर विश्वास रखकर हम सत्य पथ के पथानुगामी बनें जो हमें एक दिन मोक्षगामी बना देगा।

उत्तम संयम

आज उत्तम संयम का पावन दिन है। वास्तविकता में देखा जाए तो आत्मा का स्वभाव उत्तम संयम नहीं, चारित्र है क्योंकि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक चारित्र आत्मा को छोड़कर अन्य किसी में नहीं पाया जाता। कहा भी है 'चारितं खलु धम्मो' चारित्र ही धर्म है। लेकिन प्रश्न उठता है कि उत्तम संयम क्या है? तो उत्तम संयम चारित्र प्राप्ति का साधन है जो समय सीमा में प्राप्त होता है और समय सीमा में ही समाप्त हो जाता है।

सम्यग्ज्ञान के लिए आचार्यों ने मध्य दीपक की उपमा दी है। जैसे मध्य दीपक बीच में रहकर दो कमरों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शन व सम्यक चारित्र दोनों को प्रकाशित करता है। ज्ञान के होने पर ही सम्यग्दृष्टि जीव के भावों में निर्मलता, परिवर्तन आता है। तभी वह ज्ञानपूर्वक चारित्र का पालन सम्यक् रूप से कर पाता है। क्योंकि अज्ञानपूर्ण चारित्र मोक्ष मार्ग में कारणभूत नहीं है। कहा भी है- अज्ञानी जीव करोड़ों भवों की तपस्या के द्वारा जितने कर्मों की निर्जरा करता है, ज्ञानी जीव के उतने कर्मों की निर्जरा एक उच्छ्वास मात्र की तपस्या से हो जाती है। तात्पर्य यह कि ज्ञान बिना चारित्र और चारित्र बिना ज्ञान दोनों अधूरे हैं।

मनुष्य जीवन को पाना अत्यंत दुर्लभ माना गया है। उसे पाकर यूँ ही विषय वासना, शराब, अंडे, मांस आदि दुर्व्यसनों में गँवाना उसी प्रकार है



जैसे किसी अज्ञानी के द्वारा कौवे आदि को भगाने के लिए रत्नों की पोटली खाली कर देना। अज्ञानता में प्राणी के दुर्लभ संयम प्राप्ति के भाव भी नहीं होते और भाग्य से मिल भी जाए तो वह उसकी कीमत नहीं कर पाता। संयम यानी लगाम लगाना, हमारे यहाँ दो प्रकार का संयम कहा- इन्द्रिय व प्राणी।

मानव जीवन में सर्वप्रथम मन पर संयम रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि जिसने मन को वश में कर लिया तो सारी इन्द्रियों उसके वश में हो जाती है।

मन के जीते जीत है,

मन के हारे हार।

जाने याको वश कियो,

सो पहुँचो भवपार।।

अतः हम अपने जीवन को यूँ ही व्यर्थ में न गँवाएँ, मन पर विजय पाकर एक बढ़ाएँ कदम संयम, साधना, तप-त्याग की ओर।

उत्तम तप

यह नर भव एक बहुमूल्य अवसर है जिसे प्राप्त कर हम सर्वव्यापी पद को प्राप्त कर सकते हैं। वास्तव में हम जिसे बाह्य में तलाश रहे हैं वह हमारे अंतर में है। तलाशने की अपेक्षा तराशना प्रारंभ करें, यही समझदारी है। जिस प्रकार सोने को सोलह ताव द्वारा तपाकर तराशते हैं वैसे ही हम निजात्मा को तप धर्म में तपायें तो कुंदन सा जीवन निखरेगा और जिस परीषह-उपसर्ग से हम डरते रहे हैं उन्हीं में हमें आनंद आने लगेगा। पारसनाथ भगवान कहने को आसान नाम है परंतु पुराण पढ़िये, ज्ञात होगा कि क्या तप है। आसान नहीं है कथनी को करनी में उतारना। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि-तपस्वी हुए। वे मृत्यु तक से नहीं डरे। तभी तो भवसागर की पतवार बन गए। यानी तरण-तारण नौका बन गए। गालियाँ, संस्तुतियाँ, विष-अमृत, अनुकूलता - प्रतिकूलता में समता भाव और निखारा और तभी तो जीवन सार्थक किया है। हम वचनों के पंडित नहीं बनें, सार्थक पंडित बनें। जो भगवान महावीर स्वामी ने जीयो और जीने दो का नारा दिया उसके शाब्दिक अर्थ पर तो दुनिया अमल करती है पर आध्यात्मिक गहराई में उतरें तो विश्व मंगलमय नजर आए क्योंकि अर्थ यह है- जीकर बताओ। पहले अपनी दाढ़ी की आग बुझाओ फिर दूसरे की आग बुझाने चलो। हम अपनी अज्ञानता को आभ्यंतर तप द्वारा खपाएँ। विनय धारण करें। यही मोक्षमार्ग का द्वार है। उत्तम तप धारो और तन ही नहीं, आत्मा को भी उस अग्नि में जला दो तो विश्वास है परमात्म पद यानी निर्वाण पा सकोगे।

उत्तम त्याग

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा।

औषध शास्त्र अभय आहारा।।

त्याग से ही व्यक्तित्व निखरता है। लेने वाला नीचे होता है देने वाला ऊपर। बादल ऊपर हैं, धरती नीचे। हम श्रावक हों या साधु, त्याग बिना नहीं

रह सकते। यह जिनेन्द्र भगवान ने कहा है। हमारे जिनशासन में रक्त, कन्या इत्यादि व्यर्थ के दान स्वीकृत नहीं किये गये हैं क्योंकि यह धर्म शरीर का नहीं आत्मा का है। श्रावक साधु को आहारादि देता है पर तात्पर्य यह रहता है कि साधु उसे लेकर आराम न करे बल्कि परमार्थ में लगा रहे। मोक्षमार्ग आराम का नहीं आराधना का है। हमारे यहाँ सुविधा नहीं दी जाती। केशलॉच नग्न रहना, बाईस परीषह सहना, पिच्छी कमंडल शास्त्र तीन उपकरण रखना, घर ही नहीं संसार मात्र से मोह तजना, शरीर से भी ममत्व त्यागना जैसी उच्च तपस्या-त्याग की कीमत है। एक घर छोड़ा और मोबाईल आदि जोड़कर सोचा कि हम परमात्मा को पा लेंगे तो भूल जाओ। निजात्मा की पहचान हेतु त्याग आवश्यक है। अंत में तो शरीर भी छूटता है पर छूटना और छोड़ने में जमीन-आसमान का अंतर है। साधु का छूटता नहीं वह छोड़ देता है। यही उत्तम त्याग है। इसे ही सारा संसार सिर नवाता है और आचरण में धर्म ने इसलिए विश्व पर राज किया है क्योंकि उपदेश पांडित्य दुर्लभ नहीं पर जीवन का पंडित बनना बहुत दुर्लभ है।

उत्तम आकिंचन

उत्तम आकिंचन 'न किंचन इति आकिंचन'। मेरा कुछ नहीं है, यह भी महान धर्म है। जग के विनाटवर धन-दौलत आदि वैभवों में छॉट-छॉटकर देखते जाओ तो आपके हाथ खाली नजर आएँगे। न कुछ लेकर आया था न कुछ लेकर जाएगा। धन-दौलत और माल-खजाना पड़ा यहीं रह जाएगा। सिकंदर जैसा महान सम्राट विश्व विजय हेतु निकला। जब मंत्र में भारत आया तब दिगंबर मुनि कल्याण ने उसकी आँखें खोल दीं। वह उन्हें गुरु बनाता है और जीवन का अंत उनके चरणों में करता है।

सिकंदर जब चला भू से, सभी हाली बहाली थे।

पड़ी थी पास में माया, मगर दोनों हाथ खाली थे।।

जब व्यक्ति का जन्म होता है तब मुट्टी बँधी रहती है। लोग कहते हैं कि वह किस्मत साथ लाता है। हम व्यक्तित्व निर्माण के जिम्मेदार स्वयं हैं पर आश्चर्य है, दोष माता-पिता-रिश्तेदारों-गुरु आदि पर देते हैं। उपादान प्रत्येक का स्वतंत्र है। चाहे तो तू तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकता है। चाहे तो दर-दर का भिखारी बन सकता है। पर याद रखना, अंत भला तो सब भला। अतः हमारा जैन धर्म जीवन की नहीं मरण की कला सिखाता है क्योंकि आहार, भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञा से पशु भी जीता है पर मानव होकर इसी में फँसा रहा तो तेरा जीवन व्यर्थ है। तीर्थंकर भी राज-पाट छोड़ देते हैं क्योंकि आत्मा की शोध हेतु निर्जन वन चाहिये। अर्थात् भीड़ में नहीं रहें या भीड़ में भी आत्मा की शरण ले सकें तो उत्तम आकिंचन सार्थक है।

उत्तम ब्रह्मचर्य

उत्तम ब्रह्मचर्य का अर्थ है आत्मा का आत्मा में रमण करना। अंतिम धर्म है यह। जो पहले नंबर का तत्व है वह अंत में मिला। पकड़ने के तरीके हैं। आत्मा तो क्षमा आदि में भी था। प्रथमतः परनारी का त्याग करो अंततः विवाह भी न कर बाल ब्रह्मचारी रहो, यह महान धर्म। लोग कहते हैं शादी नहीं हो रही तो ब्रह्मचारी बन जाओ। पर यह उत्तम ब्रह्मचर्य नहीं है। भगवान महावीर ने स्वेच्छा से शादी नहीं की। भगवान वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ की भी यही परंपरा थी। जैन दिगंबर परंपरा में इन्हें

बालयति कहते हैं। फिर करो क्या तो रमो। यानी आत्मा में रमो। सबसे प्रिय आत्मा है। यह योगी कहता है। वह दिखती नहीं, अनुभव, ध्यानगम्य होती है। उसका स्वाद ले लिया, प्रत्यक्ष कर लिया तो आपको एकाकीपन नहीं सताएगा। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना व्यवहार में रहे पर ध्यान में अर्षमक्को 'खलु सुद्धो' यही परम चिंतनीय अवस्था है। अकेले में व्यक्ति उठता है। अतः वह भी उचित है। गुरु होना चाहिये पर आत्मा को दिखाने वाला। वही सच्चा गुरु है जो आत्म शक्ति जगा दे। तू तो स्वयं में भगवान है फिर क्यों दर-दर की भीख माँगता है। बाहर मत देख, अंतर में देख तो वेष दिगंबर भी समझ में आने लगेगा और पूजते-पूजते तुम्हें अंतर में दिगंबरत्व मिलेगा। व्यक्ति नंगा ही आता और जाता है। अतः दिगंबर स्वरूप धारण करो यही ब्रह्मचर्य का तात्पर्य है।

क्षमावाणी महापर्व

'बैरं करेदि छत्तीसं, मिती तेसट्ट सया करेदि'। बैर के कारण जब दो व्यक्तियों में परस्पर विसंवाद, तनाव, विरोध हो जाता है तो वह 36 की स्थिति पर ला देता है और मैत्री 36 की दिशा को बदलकर 63 यानी प्रेम भाव, आनंद, खुशी, हर्ष भाव को उत्पन्न कर देती है। मेरी भी सदैव यही भावना रहती है कि सारा संसार 63 के रूप में नजर आए।

जब किसी के बीच 36 की स्थिति बन जाए तो मंगल भी दंगल (झगड़े) में बदल जाता है। ऐसे दिनों में समझना चाहिये कि अब लक्ष्मी, क्षमा, शांति, बुद्धि, श्री आदि-आदि देवियों के प्रस्थान का समय आ गया है और 63 की स्थिति में व्यक्ति की ताकत दूनी हो जाती है। यानी दो भी 200, 2000 या 200000 के बराबर हो जाते हैं। उसी ताकत के बल पर तो राम लक्ष्मण ने त्रिखंडी रावण को जीता था।

बंधुओं! धन्य है हमारा जैन धर्म, गौरव है कि हमारे जीवन में एक दिन ऐसा आता है कि हमें साल भर की गंदगी साफ करने का मौका मिलता है। मनुष्य हैं तो कषाय, बैर, विरोध हो सकता है लेकिन उसे सदा बनाए रखना अच्छा नहीं है। बुद्धिमान समझदार व्यक्ति जैसे घर के कचरे को प्रतिदिन निकालते रहते हैं क्योंकि झाड़ू लगती रहती है तो घर साफ रहता है। यदि एक दिन भी धुले कपड़े न पहनो तो व्यक्ति बोलना तो दूर, पास में बैठना भी पसंद नहीं करता। यानी उसका आदर-सम्मान कम हो जाता है। लेकिन घर, कपड़े, बर्तन आदि की सफाई के साथ मन को भी साफ रखें।

साधुजन सदैव तीर्थंकर की वाणी का पालन करते हुए प्रतिदिन 'खम्मामि सव्व जीवाणं' की प्रार्थना करते हैं। अतः साधुओं की प्रतिदिन क्षमावाणी होती है। किसी ने कहा- क्षमा वाणी में नहीं हृदय में होना चाहिये। मैंने कहा- वाणी रूपी सुई के बिना हृदय का काँटा नहीं निकलता। वाणी में क्षमा आ जाए तो निश्चित ही एक दिन हृदय में भी क्षमा आ जाएगी।

मैंने प्रमादवश दुःख तुम्हें दिया हो, किं वा कभी अनादर भी किया हो। न शल्य मान मन में रखता मुधा मैं, हूँ माँगता हृदय से सबसे क्षमा मैं।। प्रत्येक काल सबको करता क्षमा मैं, सारे क्षमा मुझे करें नित माँगता मैं। मैत्री रहे जगत के प्रति नित्य मेरी, हो बैर भाव किससे जब हो न बैरी।।

बंधुओं! मेरी ऐसी भावना है कि हमारे इस क्षमावाणी महापर्व को ऐसा सम्मान मिले कि यह धर्म सारे विश्व के प्राणीमात्र का बन जाए।

ॐ नमः...! सबसे क्षमा... सबको क्षमा...



» डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'
महामंत्री, अ.भा. दिगांबर जैन विद्वत परिषद,
इंदौर (म.प्र.)
मो. 6826061247

सिरि भूवलय में आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार

सिरि भूवलय अपने आप में अनूठा और आश्चर्य चकित कर देने वाला अंकात्मक अद्भुत ग्रन्थ है। यह के अंकों ही अंकों में लिखा गया में लिखा गया है। आठवीं-नवीं शताब्दी में दिगम्बराचार्य कुमुदेन्दु ने इसमें 1 से 64 तक के अंकों को लिया है। इससे निर्गत होने वाली सभी 718 भाषाओं के वर्णमाला इन्हीं 64 अंकों से बनती है। सभी एक अंकचक्र में 27 कॉलम खड़े और 27 कॉलम पड़े, इस तरह से कुल 726 खाने बनाये गये हैं, उनमें विशेष विधि से अंक लिखे गये हैं। इस तरह के 1270 अंकचक्र उपलब्ध हैं जिनमें 56 अध्यायात्मक मंगल प्राभूत गर्भित है। ये अध्याय वर्णयमान सभी विषयों का सूत्ररूप में संकेत करते हैं। 1270 अंकचक्रों से ही विशेष विधि से प्रत्येक के 81-81 गुणित करके एक लाख 2870 अंक चक्र बनेंगे और एक-एक अंकचक्र से लगभग 10-12 श्लोक बनते हैं। इस तरह द्वितीय स्तर की डिक्कोडिंग से सभी 64 आर्ट्स और साइंस, भाषाएँ, धर्म, कला, विज्ञान 363 दर्शन व्यवस्थित रूप से पूर्ण विवेचित होंगे।

इसके श्रुतावतार नामक अध्याय के अन्तराधिकार के प्रत्येक श्लोक का प्रथम अक्षर पंक्ति रूप में लिखते जाने से कुन्दकुन्दचार्य द्वारा रचित समयसार की प्राकृत भाषात्मक गाथाएं बनती हैं। अर्थात् लगभग 56 पद्यों के एक एक अक्षर लेने से समयसार की एक गाथा बनती है। चूँकि सिरि भूवलय की आधार भाषा कन्नड है अर्थात् कन्नड को मूल में लेकर यह निर्मित है इसलिए हम जो शोध प्रस्तुत करते हैं उसका मुख्य अंश कन्नड-मूल रूप में अवश्य रखते हैं, यद्यपि सभी को कन्नड समझ में नहीं आती लेकिन उसे गौण नहीं किया जा सकता है।

ಸಿರಿಭೂವಲಯದಲ್ಲಿ ಕುಂದಕುಂದಚಾರ್ಯದ
ಸಮಯಸಾರ

ವಂದಿಕ್ಕು ಸವ್ಯಸಿದ್ಧೇ ಭವವಚಲಮುಕ್ತೋವಮಂ ಗೃಣಂ ಪತ್ಯೇ
ಪೋಷ್ಯಾಮಿ ಸಮಯ ಪಾಪಹರಮೀವೇ ಸುಯಶೇವರೀ ಭಕ್ತಿಯಂ ||೧||

ಜೀವೋ ಚರಿತ್ರೆ ದಂಸಣ ಕಾಣಕ್ಕಿಲು ತಂ ಹಿ ಸಮಯಂ ಚಾಣೇ
ಪುಗ್ಗಲ ಕಮ್ಮ ಪರೇಚ್ಚಿಯ ಚ ತಂ ಚಾಣ ಪರಸಮಯಂ ||೨||

ಎಯತ್ಕ ಚಿಚ್ಚಯಗುಃ ಸಮಹಿ ಸವ್ಯತ್ಕ ಸುಂದರೋ ಲೋವ |
ಬಧಕಹಾ ಎಯತ್ಕೇ ತೇ ಣ ವಿಮಂದಾರೀ ಹೋಕು ||೩||

ಸುಂದರೇಚಿವಾಣಭೂದಾ ಸವ್ಯಸ್ತ ವಿ ಕಾಮಭೋಗಬಧಕಹಾ |
ಎಯತ್ಕೇಸುಪಲಭೋ ಣವರಿ ಣ ಸುಲಹೋ ವಿಹತ್ತಸ್ತ ||೪||

ತಂ ಎಯತ್ಕ ವಿಹತ್ತಂ ದಾವಹಂ ಆಪ್ಪೇ ಸವಿಹವಣ |
ಜದಿದಾಪ್ಪ ಪಯಾಣ ಚುಕ್ಕಿಚ್ಚಲ್ಲಂ ಣ ಭೆತ್ತವ್ವ ||೫||

समयसार सिरिभूवलय में कुन्दकुन्दाचार्य कृत समयसार

समयसार के अलग अलग संस्करणों में विद्वानों ने अपनी बुद्धि, व्याकरण, श्रुति परम्परा के अनुसार पाठ में परिवर्तन किये हैं। सिरि भूवलय में प्राचीनतम शुद्ध पाठ प्राप्त होता है। पहले निम्नांकित प्रारम्भिक गाथाएं देखें-

गदित्तु साठा सिद्ध शुगमाचलमाणोठामा गई पत्ते।
वोच्छामि समय पाहु डमिणो सुयके वली भणियं ||1||

मैं ध्रुव, अचल, निर्मल और अनुपम गति को प्राप्त समस्त सिद्धों को नमस्कार कर श्रुतकेवलियों द्वारा कहे हुए इस समयपाहुड नामक ग्रन्थ को कहूँगा।

जीवो चरित्त दंसण गाणट्टित्तं तं हि ससमयं जाण।
पुगल कम्म पदेसट्टिय च तं जाण परसमयं ||2||

जो जीव चरित्र, दर्शन और ज्ञान में स्थित है निश्चय से उसे स्वसमय जानो और जो पुद्गल कर्म के प्रदेश में स्थित है उसे पर समय जानो।

एयत्थ णिच्छ यगओ समओं सव्वत्थ सुदरो लोए।
बधाक हा एयाते ते ण विसांवादिणी होई।।3।।

एकत्व निश्चय को प्राप्त हुआ समय ही समस्त लोक में सुंदर है। एकत्व के प्रतिष्ठित होने पर उस आत्म पदार्थ के साथ बंध की कथा विसंवादपूर्ण है।

सदपरिचिदाणु दा सास्स वि कामाभागबध कहां।
एटाते स्वला गारि ण सुलो विह तस्स।।4।।

काम, भोग और बंध की कथा सभी जीवों के श्रुत है, परिचित है और अनुभूत है, परंतु पर पदार्थों से पृथक् एकत्व की प्राप्ति सुलभ नहीं है।

त एयात्त विहत्त दाएह अण्णो सगिह तो ण।
जदिदाए ज्ज पयाणां चुक्कि ज्जछलं ण घेतन।।5।।

मैं अपने निज विभव से उस एकत्व विभक्त आत्मा का दर्शन करता हूँ। यदि दर्शन करा सकूँ, उसका उल्लेख करा सकूँ तो प्रमाण मानना और कहीं चूक जाऊँ तो मेरा छल नहीं ग्रहण करना।

इसमें से गाथा सं. 3 और 4 में 'बंधकहा' की जगह 'बधकहा', पाठ आया है। गाथा संख्या चार में प्रकाशित संस्करणों में कामभोग बंध कहा पाठ ही लिया गया है और उसका अर्थ किया है काम, भोग और बंध की कथा जबकि काम, भोग की कथा स्वयं ही बंध की कथा है अतः अलग से बंध कहने की आवता नहीं थी, बल्कि काम, भोग और जीव बंध की कथा उपयुक्त बैठता है। गाथा संख्या 3 के प्रकाशित 'एयत्त' के स्थान पर 'एयत्थ' पाठ मिला है। इस तरह और भी अनेक पाठभेद हैं जिन्हें आगामी शोध में प्रस्तुत करेंगे।



एक विलक्षण इतिहास-पुरुष का संक्षिप्त परिचय



» डॉ. श्रीमती रंजना पटोरिया
कटनी (म.प्र.)

लेखक ने आचार्य कुमुदेन्दु जी का परिचय दिया है जो इतिहास के पृष्ठों से लगभग विस्मृत से हैं। उनकी प्रखर प्रतिभा को आलौकिक किया है। प्रस्तुत पुस्तक उस ऐतिहासिक अभावपूर्ति हेतु प्रयासरत है। इस ग्रन्थ के विभिन्न पक्षों पर लेखक द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। इस विस्मयकारी धरोहर का परिचय ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के उद्देश्य से सिरि भुवलय वेबसाइट परियोजना भी तैयार की है। ऐसे असाधारण अप्रतिम प्रतिभा के धनी लेखक को बहुत बहुत साधुवाद।

आचार्य कुमुदेन्दु जी का ग्रन्थ सिरि भुवलय मुख्य रूप से तीर्थंकरों द्वारा उपदिष्ट जैन सिद्धांतों के वर्णन के साथ अन्य आगम विषयों की मीमांसा एवं विश्लेषण है। यह ग्रन्थ जैनों का अद्भुत विश्वकोश है जो अन्यत्र देखने नहीं मिलता। यह ग्रन्थ दूसरे ग्रंथों की तरह एक ही लिपि में नहीं अपितु अंकों में लिखा गया है। इस ग्रन्थ में 18 लिपियाँ और इसे 718 भाषाओं में पढ़ा जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य कुमुदेन्दु की अप्रतिम बहुआयामी प्रतिभा की झलक प्रस्तुत की है। प्रखर गणितज्ञ, सर्वभाषा, कोविद, काव्यकला सम्राट, समावेशीदर्शन व्याख्याकार और पुष्पायुर्वेद परिपोषक की भूमिका में उनके अनन्य अवदान की गौरवपूर्ण स्वीकृति प्राप्त हो इस उद्देश्य के साथ प्रस्तुत किया है। मूल कन्नड़ काव्य में अंतर्गर्भित बहुभाषा काव्यों को संकलित करना सर्वभाषामयी काव्य को विशेषता प्रदान करता है। उन्होंने 6 लाख श्लोकों की अकल्पनीय संख्या को लिखने के लिए

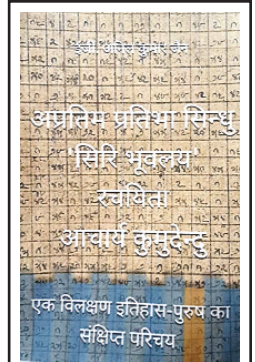
अक्षरों के स्थान पर अंकों का उपयोग किया। 27 अंक प्रति पंक्ति में रखकर 27 पंक्ति को समायोजित कर 27×27 अंकों की एक मैट्रिक्स को एक चक्र कहते हैं। किसी भी चक्र में सिर्फ 1 से लेकर 64 तक के अंकों को ही प्रयुक्त किया जाता है। एक अनुमान के अनुसार उन चक्रों में 6 लाख श्लोक समाहित हैं। अंकों के माध्यम से श्लोक निकालना अत्यंत रुचिकर है।

हमारे भारत के ज्ञान भण्डार में इतनी ज़बरदस्त एवं, चमत्कारिक बातें छिपी हुई हैं कि इन्हें देख-सुन-पढ़ कर मन हक्का-बक्का हो जाता है। इसी श्रेणी का ग्रन्थ है यह सिरि भुवलय। कितना विराट है..! यह सब और कितना अद्भुत भी.....! हमें सिर्फ एक छोटा

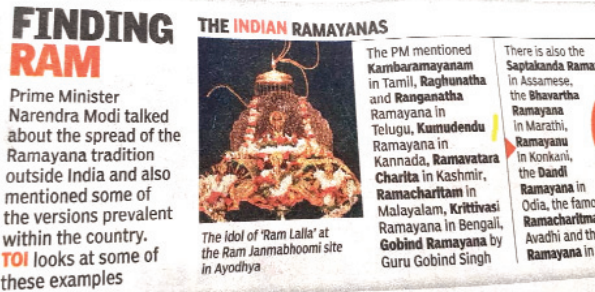
सा सुडोकु चौकोर तैयार करने में

कंप्यूटर की सहायता लेनी पड़ती है और इस ग्रन्थ में आचार्य कुमुदेन्दु जी ने लगभग 1200 वर्ष पूर्व अपनी कुशाग्र एवं अद्भुत बुद्धि का परिचय देकर केवल अंकों ही अंकों में विश्वकोश तैयार कर दिया। यह सब कुछ

अनूठा है। मैं चाहूँगी इस विस्मयकारी धरोहर को समझने के लिए 'सिरि भुवलय' वेबसाइट परियोजना का उपयोग करें। सभी जिज्ञासु शोधार्थी विद्वान सुधीजन चक्रों और बंधों को उद्घाटित कर स्वयं लाभान्वित हों। लेखक द्वारा समावेशी डिक्कोडिंग प्रणाली की सहायता ग्रंथ को पढ़ने में आसानी होगी। वर्तमान में 5 अगस्त को अयोध्या में राम मंदिर के आयोजन में प्रधानमंत्री ने इस ग्रंथ का उल्लेख किया। अत्यंत श्रेष्ठ, रुचिकर पुस्तक पढ़ें व लाभ लें।



पुस्तक
अप्रतिम प्रतिभा सिंधु
'सिरि भुवलय'
रचयिता
आचार्य कुमुदेन्दु
लेखक
इंजी. अनिलकुमार जैन



प्रधानमंत्री द्वारा अयोध्या में जैन संस्कृति का उल्लेख

» सुधीर जैन, सतना (म.प्र.)

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 अगस्त 2020 को अयोध्या में आयोजित श्री राम मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर जो भाषण दिया उसमें दो बार जैन संस्कृति का उल्लेख किया। यहां प्रस्तुत है उनके भाषण के वे संबंधित अंश :-

“सदियों से अयोध्या नगरी जैन धर्म की आस्था का भी केंद्र रहा है? राम की यही सर्वव्यापकता भारत की विविधता में एकता का जीवन्त चरित्र है। कन्याकुमारी से क्षीरभवानी तक, कोटेश्वर से कामाख्या तक, जगन्नाथ से केदारनाथ तक, सोमनाथ से काशी विश्वनाथ तक, सम्मेद शिखर से श्रवणबेलगोला तक, बोधगया से सारनाथ

तक, अमृतसर साहब से पटना साहब तक, अंडमान से अजमेर तक, लक्षद्वीप से लेह तक, आज पूरा भारत राम मय है।” शिलान्यास कार्यक्रम में सीमित अतिथियों को आमंत्रित किया गया था जिसमें जैन धर्मगुरु जम्बूदीप के पीठाधीश्वर स्वस्तिश्री रविंद्रकीर्ति स्वामीजी भी आमंत्रित थे। उन्होंने कार्यक्रम में भाग लिया।



क्षमावाणी महापर्व 2 सितंबर 2020 पर विशेष

क्षमावाणी पर्व

मनो-मालिन्य दूर कर मजबूत करें आत्मबल



» डॉ. सुनील जैन 'संचय'

(पी-एच.डी., एम.ए. "जैनदर्शनाचार्य", बी.एड., नेट)

गाँधी नगर, नई बस्ती, ललितपुर (उप्र)

मो. 9793821108

क्षमावाणी का पर्व सौहार्द, सौजन्यता और सद्भावना, मनो-मालिन्य धोने का पर्व है। आज के दिन एक दूसरे से क्षमा मांगकर मन की कलुषता को दूर किया जाता है। मानवता जिन गुणों से समृद्ध होती है उनमें क्षमा प्रमुख और महत्वपूर्ण है। क्षमावाणी पर्व, जो राग-द्वेष, अहंकार से भरे इस संसार में अपने-अपने हितों और अहंकारों की गठरी को दूर करने का मौका हमें देता है। क्षमा शब्द मानवीय जीवन की आधारशिला है। जिसके जीवन में क्षमा है, वही महानता को प्राप्त कर सकता है। भारत की प्राचीन श्रमण संस्कृति की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जैन परम्परा ने क्षमा को पर्व के रूप में ही प्रचलित किया है। जैनों के प्रमुखतम पर्व में 'क्षमापर्व' है। इसे क्षमावाणी भी कहते हैं।

क्षमावाणी पर्व के दिन सभी जैनधर्मावलंबी अपने जान-पहचान वाले और अनजान बंधुओं से क्षमा माँगते हैं। यह पर्व हमें यह शिक्षा देता है कि अगर आपकी भावना अच्छी है तो दैनिक व्यवहार में होने वाली छोटी-मोटी त्रुटियों को अनदेखा करें और उससे सीख लेकर फिर कोई नई गलती न करणे की प्रेरणा देता है। पूरी दुनिया इस समय कोरोना महामारी से जूझ रही है। इस महामारी से आत्मबल बहुत कारगर साबित हो रहा है। कोरोना काल में चिंता, भय, विषाद से दूर रहने और शांतचित्त रहने, आत्मबल मजबूर करने की विशेषज्ञ सलाह दे रहे हैं। 'क्षमावाणी' आत्मबल को मजबूत करने में बहुत बड़ी सहायक हो सकती है, क्षमावाणी को चरितार्थ करने का सुअवसर हमें मिला है। बिना किसी दिखावे के सच्चे-मन से हम एकदूसरे को क्षमा करें और आपसी मनो-मालिन्य दूरकर मन को कषायमुक्त बनाने की चेष्टा करें। यह प्रक्रिया आत्मबल को मजबूत करेगी। नितान्त-अकेलेपन में भी हम भय, चिन्ता, विषाद, घबराहट से दूर रहकर प्रसन्नचित्त और शांत रह सकेंगे। इससे इम्यूनिटी पावर भी बढ़ेगी। यदि हम ऐसा कर सके तो यह आध्यात्मिक-ऊर्जा हमें ऊर्जस्वित करके इहलोक एवं परलोक में भी सुखी एवं स्वस्थ होने का दिव्य जीवन-मंत्र दे सकेगी।



माफी मांगने का मतलब ये नहीं है कि आप गलत हैं और दूसरा व्यक्ति सही। क्षमा मांगना और क्षमा कर देना साहस का काम होता है। क्षमा से अंतस की शुद्धि होती है और वैरभाव समाप्त होता है। दिल से मांगी गई क्षमा हमें सज्जनता और सौम्यता के रास्ते पर ले जा?ती है। आइए इस क्षमा पर्व पर हम अपने मन में क्षमा भाव का दीपक जलाएं उसे कभी बुझने न दें। कहते हैं माफी मांगने से बड़ा माफ करने वाला होता है। अतः हम दोनों ही गुण स्वयं में विकसित करें।

कषाय के आवेग में व्यक्ति विचार शून्य हो जाता है और हिताहित का विवेक खोकर कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। लकड़ी में लगने वाली आग जैसे दूसरों को जलाती ही है, पर स्वयं लकड़ी को भी जलाती है। इसी तरह क्रोध कषाय को समझ पर विजय पा लेना ही क्षमा धर्म है। हम जिस समाज में, जिस मोहल्ले, जिस स्थान पर रहते हैं वहाँ लड़ाई-झगड़े, मनमुटाव होते रहते हैं। लेकिन उसका मतलब यह कतई नहीं निकलता कि आप घर के, आसपास के सदस्यों, रिश्तेदारों का सम्मान करना ही भूल जाए। दिन-रात होने वाली गलतियों से सबक लेने के लिए ही क्षमावाणी पर्व एक ऐसा अवसर आता है जब हम क्षमा और प्रेम की सीढ़ी चढ़कर, मन में प्यार, शांति, सम्मान, और क्षमा का भाव रखकर अपनी भूलों का प्रायश्चित्त कर सकते हैं।

अपने से जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए खुद को क्षमा करना और दूसरे के प्रति भी इसी भाव को रखना इस पर्व का महत्व है। क्षमावाणी पर्व हमारी वैमनस्यता, कलुषता बैर-दुश्मनी एवं आपस की तमाम प्रकार की टकराहटों को समाप्त कर जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा को बहाने का नाम है। हम अपनी कषायों को छोड़ें, अपने बैरों की गाँठों को खोलें, बुराइयों को समाप्त करें, बदले, प्रतिशोध की भावना को नष्ट करें, नफरत-घृणा, द्वेष बंद करें, आपसी झगड़ों, कलह को छोड़ें।

यह पर्व हमें ज्ञात कराता है कि हम अपने में सुधार का प्रयास सदैव जारी रखें, स्वयं की अच्छाइयों व अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करके ऐसी ही सकारात्मक सोच दूसरों के प्रति भी रखते हुए समता और संयम का भाव अपने जीवन में उतार कर सभी को एक नजरिए से देखने की प्रेरणा देता है। भूल को स्वीकार करें और उसे सुधारने का प्रयास करें। सभी के प्रिय बनने

के लिए दूसरों की निंदा करना बंद करें।

“वसुधैव कुटुम्बकम्” की उक्ति वास्तव में क्षमा पर्व जैसे आयोजनों में ही चरितार्थ होते दिखती है। क्षमावाणी पर्व हमें “आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्” की शिक्षा प्रदान करता है। क्षमावाणी के पावन पर्व पर “सत्वेषुमैत्री” और मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे” जैसी पंक्तियों को चरितार्थ होते देखा जा सकता है। हमें यह पर्व सद्भावना का संदेश देता है। यह पर्व ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तुः निरामयाः’ की भावना भाणे की प्रेरणा प्रदान करता है।

भूल को स्वीकार करें और उसे सुधारने का प्रयत्न करें। सभी के प्रिय बनने के लिए दूसरों की निंदा करना बंद करें। क्षमा तो आत्मा का पर्व होता है। क्षमा मन, वचन और काया से होती है। क्षमा हमारे खुद के लिए है, भले ही दूसरा व्यक्ति उसे मांगे या नहीं, वह अपनी भूल स्वीकारे या नहीं। परन्तु हममें से हर एक के लिए क्षमा स्वयं के लिए है।

तीर्थकरों ने सम्पूर्ण विश्व में शांति की स्थापना के लिए सूत्र दिया है-

**खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मिती मे सव्वभूदेषु, वेरं मज्झम ण केणवि।।**

अर्थात् मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ। सभी जीव मुझे भी क्षमा करें। मेरी सभी जीवों से मैत्री है। किसी के साथ मेरा कोई वैर भाव नहीं है।

**महक उठेगी दुनिया सारी,
यदि क्षमा के फूल खिला लो।
वैर-विरोध मन के मिटाकर,
भीतर स्नेह के दीप जला लो।।**

व्यक्ति पक्षी है और साधु एक वृक्ष : जनसंत विरंजन सागर

गुढ़ा। श्री दिगम्बर जैन मंदिर गुढ़ा में चातुर्मास परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य जनसंत मुनि श्री विरंजन सागर जी महाराज ने ऑनलाइन मंगल प्रवचनों के माध्यम से कहा कि व्यक्ति एक पक्षी के समान है और साधु एक विशाल वृक्ष है। जैसे साधु चाहें मंदिर में विराजमान हो या जंगल में या धर्मशाला में, तीर्थ क्षेत्र पर लेकिन भक्त अपने मुनिराज साधु के दर्शनार्थ ढूँढते-ढूँढते पहुँच ही जाता है। भक्त चारों दिशाओं से आते हैं और साधु के विशाल वृक्ष के नीचे ज्ञान की शीतलता पाने को बैठ जाया करते हैं और वह ज्ञान की शीतलता पाते हैं। उसके बाद सभी अपने-अपने दिशा की ओर उड़ जाते हैं, चले जाते हैं। इसलिए कहा जाता है मनुष्य पक्षी है साधु एक विशाल वृक्ष है। उक्त जानकारी अंशुल भैया संघस्थ व डॉ. सुनील संचय ने दी।



पुरस्कार

निबंध प्रतियोगिता
प्रथम : 51,000 रु
द्वितीय : 21,000 रु

भाषण प्रतियोगिता
प्रथम : 51,000 रु
द्वितीय : 21,000 रु

निबंध प्रतियोगिता की नियमावली-

- शब्द सीमा - 500 शब्द।
- निबंध हिन्दी में टाइप करके या लिखकर भेज सकते हैं।

भाषण प्रतियोगिता की नियमावली-

- भाषण हेतु अधिकतम समय सीमा 5 मिनट है।
- भाषण का वीडियो रिकॉर्ड करना है।
- भाषण केवल हिन्दी भाषा में होना चाहिए।

प्रायोजक-

- श्रीमती चिंतामणी सवाईलाल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट एवं प्रशस्ति कंपनी समूह
- श्री विनोद जैन- श्रीमती रजनी जैन काला, मुंबई
- श्री दिलीप जैन- श्रीमती नीता जैन घेवारे, ठाणे, (उप-कलेक्टर, ठाणे जिला, महाराष्ट्र)
- श्री के. सी. जैन (सीए)- श्रीमती अंजना जैन, मुंबई
- गरुड़ प्रकाशन, नोएडा

निर्णायक मंडल



श्रीमती सुरशीला पाटनी
विद्युपी उर्दा भविष्य,
विचारक व सामाजिक कार्यकर्ता
आर के मार्बल



डॉ. वेद प्रताप वैदिक
स्वातंत्र्य संग्राम,
विचारक व निरंक
भारतीय क्रिडा नोडि पब्लिश



राहुल देव
प्रख्यात लेखक,
विचारक एवं वक्ता
सम्यक काउन्सिलर



संगत समु
आजमाई कल्पवृक्ष व पैकान पिपि के
साथक विज्ञान में आकाश,
सुख काव्यविज्ञान, मूड प्रकाशन,
प्रकाशन विचारक,
भारतीय भाषा विज्ञान, लेखक

अंतर्राष्ट्रीय निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता स्वर्णिम भारत

संयोजक-

श्रीमती इंदु प्रभात जैन
डॉ. श्रीमती सुजाता जैन आदित्य
श्रीमती वंदना सालगिया
श्रीमती विधि प्रवीण जैन (आकाशवाणी, मुंबई)

सामान्य नियम -

- निबंध व भाषण का विषय है स्वर्णिम भारत (अतीत में भारत स्वर्णिम था और भविष्य में स्वर्णिम कैसे बनेगा)
- निबंध व भाषण केवल व्हाट्सएप संदेश के रूप में भेजे। (व्हाट्सएप नंबर - 7977892664)
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।
- निबंध व भाषण जमा करने की अंतिम तिथि 30 सितंबर 2020 है। ● अंतिम परिणाम 25 अक्टूबर 2020 को घोषित किये जायेंगे।



आहार दान विधि

» पं. कैलाशचंद्र जैन शास्त्री

जैन दर्शनाचार्य, एम.ए. हिन्दी, संस्कृत रा.वि.

सहायक निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9460674306

मुक्ति के मार्ग पर चलने वाले भव्य जीवों को धर्म क्षेत्र में त्याग भावना से, मुदीन दुखी जीवों को करुणा भाव से, आवश्यकतानुसार उपयोगी वस्तु समर्पित करना, निस्वार्थ, निष्काम भाव से, ख्याति लाभ की कामना न करते हुए पवित्र मन से अपने परिश्रम व ईमानदारी से कमाये तथा एकत्र किये हुए धन को सतपात्रों के लिए औषधि, शास्त्र, अभय, आहार रूप से दान करना ही सर्वोत्तम दान है। क्योंकि 'दान हमेशा सत्पात्र को ही देना चाहिए; कुपात्र को दान देने से पुण्य व धन क्षीण होता है' दान से पुण्य बंध होता है जो इस भव में यश और परभव में सुख का दाता है :-

“दान देय मन हरष विशेखे, इह भव जस परभव सुख देखे।”

उक्त चारों दानों से प्रशस्त पुण्य बंध होता है जो भाव धर्म की और अग्रसर करने में सहायक होता है धर्म मार्ग पर चलते रहने से मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा वर्तमान में हमारा जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

दान के चार प्रकार; चार संघ को दीजिये

चार प्रकार के दान चार संघ (सत्पात्र) मुनि; आर्थिका; श्रावक; श्राविका को देने से व्यक्ति भोग भूमि के सम्पूर्ण सुखों को भोगते हुए परम्परा से मोक्ष प्राप्त करता है, उक्त चार संघ के अलावा धर्म मार्ग पर चलने वाले ब्रह्मचारी; ब्रह्मचारिणी साधर्मिन्-बन्धुओं को भी शुद्धिपूर्वक शुद्ध मन, वचन, काय से दान दिया जाये तभी उसका योग्य फल प्राप्त होता है तथा उनके धर्मसाधना में निमग्न रहने के लिए शारीरिक असमर्थता को दूर करने कर पुण्य अर्जन होता है। आहार दान की परंपरा राजा श्रेयांस के द्वारा मुनिराज आदिनाथ को अक्षय तृतीया के दिन इक्षुरस से प्रारम्भ हुई थी।

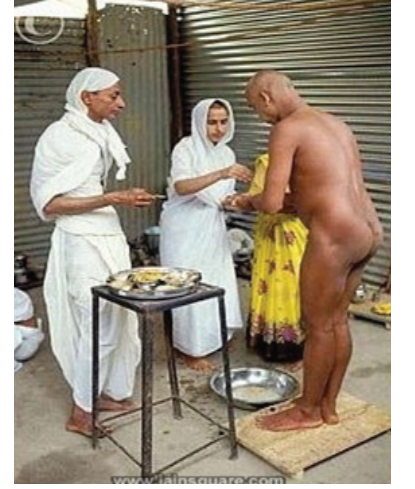
पात्रता : (आहार दाता) मुनिराज आर्थिका को वह व्यक्ति आहार दे सकता है जिसने अणुव्रतों को धारण किया हो, पालन करता हो, निरोगी हो, मादक पदार्थों का सेवन नहीं करता हो, गृहस्थ के षट आवश्यक कर्तव्यों का पालन करता हो, तथा आठ वर्ष बाद का बालक, स्वस्थ बालिका, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष जैन श्रावक आहार दे सकता है आहार देते समय निष्पाप रहने की प्रतिज्ञा करें निष्काम भावना रखें शुद्ध वस्त्र (धोती,दुपट्टा) धारण करें दुपट्टे से शिर ढका हुआ हो वस्त्र ज्यादा तंग व ढीले नहीं पहने, अपवित्र वस्तुओं का स्पर्श न करें। शरीर के किसी भाग में खुजली न करें, सप्त व्यसनों का त्याग जीवन पर्यंत किया हुआ हो, अंडा, मांस, शराब, धूम्रपान तम्बाकू

का भी जीवन पर्यन्त त्याग किया हो, इत्र लिपस्टिक, नेलपॉलिस, पाउडर इत्यादि न लगायें। लाल या काला वस्त्र नहीं पहने सिल्क के वस्त्र नहीं पहने, मात्र सूती वस्त्र ही पहने बालक युवा धोती दुपट्टा व बालिकायें महिलायें साडी ब्लाउज पहने। विजातीय व विधवा विवाह न हुआ हो।

भोजन शुद्धि :

साधारणतः श्रावक के भोजन शाला में शुद्ध रूप से ही भोजन

बनाया जाता है फिर भी भोजन बनाने में कुएं का पानी छान कर लायें उसी समय छत्रे की जीवाणी को सावधानी पूर्वक कुएं में डाल देना चाहिए उस छत्रे हुए जल को गर्म करें तथा उससे भोजन बनायें, हाथ की चक्की से पीसा हुआ आटा शुद्ध दूध, मर्यादित घी व अन्य मसाले आदि हो मौसम के अनुसार ही फल व सब्जी आदि का ध्यान रखें बाजार में निर्मित फलरस, सब्जी, मसाले तथा तुच्छ फल व बड़ाफल बहुबीजक फल व सब्जी काम में न लेवें रेफ्रिजरेटर (फ्रिज) की रखी कोई वस्तु काम में न लेवें। बर्फ का उपयोग न करें।



आहार की चीजों की मर्यादा

क्र.	वस्तु	वर्षा	ग्रीष्म	शीत
1	दलिया, रवा, आटा, मैदा, मिर्च मसाला, कुटे व गर्म किये	3 दिन	5 दिन	7 दिन
2	मिठाई मावा, पेड़ा, बर्फी, लड्डू	1 दिन	1 दिन	1 दिन
3	बूरा बताशा	6 दिन	15 दिन	30 दिन
4	पापड़, बड़ी, सेंवइया, पूरी-पराठा हलुवा, शाक, सेंव, बूँदी, तेल-घी से तले पदार्थ, अचार, मुर्ब्बा दही, छाछ आदि	12 घंटे	12 घंटे	12 घंटे
5	खिचड़ी, दाल-भात, कढ़ी,रोटी	6 घंटे	6 घंटे	6 घंटे
6	घी तेल	1 वर्ष	1 वर्ष	1 वर्ष
7	सेंधा लवण (पिसा हुआ)	48 मिनट	48 मिनट	48 मिनट

नोट :- जिस वस्तु की मर्यादा का ज्ञान न हो उसकी मर्यादा 48 मिनट ही समझें।

चौका शुद्धि : चौका (भोजन बनाने का स्थान) प्रकाश युक्त हो सूखा हो जीवों से रहित हो, स्वच्छ चंदेवा तना हो, शोरगुल रहित हो, प्लास्टिक से निर्मित कोई चौकी चटाई बर्तन न हो, कूलर पंखा, ए.सी. न हो, पर्याप्त स्थान हो।

अंतराय : चार संघों को आहार में अंतराय नहीं आये इसका विशेष ध्यान रखें अंतराय कैसे व किस प्रकार होता है :- केश, (बाल) मरा हुआ जीव, सचित बीज, नाखून, चर्म, रक्त, मांस, आदि के आहार में आने पर

और रास्ते में मांस, शव देखने पर, जीव मरने पर, मांस भक्षी पशुपक्षी मनुष्य, स्त्री के छूने पर, बर्तन गिरने पर, मनुष्य को चक्कर आकर गिरने पर, वमन की हुई दिखने पर, अभक्ष्य भक्षण होने पर अग्निदाह होने पर करुण रूदन सुनने पर, दूसरों की मारकाट आदि कर्कश शब्द सुनने पर, पंचेन्द्रिय जीव-चूहा, बिल्ली कुत्ता आदि के पैर के बीच से निकलने पर, मक्खी, मच्छर गिरने व मरा हुआ दिखने पर आदि कारणों से अंतराय हो जाता है।

पडगाहन विधि

1. मुनियों के लिए पडगाहन विधि - हे स्वामिन! नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, अत्र, अत्र, अत्र, तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, आहार जल शुद्ध है।

2. आर्यिकाओं के लिए पडगाहन विधि- हे माता जी! वन्दामि, वन्दामि, वन्दामि, अत्र, अत्र, अत्र, तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, आहार जल शुद्ध है।

3. क्षुल्लक/ऐलक के लिए पडगाहन विधि- हे महाराज जी इच्छामि, इच्छामि, इच्छामि, अत्र, अत्र, अत्र, तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, आहार जल शुद्ध है।

विशेष : जैन आम्नाय में पंच परमेष्ठी ही पूज्य है अन्तिम तीन परमेष्ठी आचार्य, उपाध्याय और साधु (मुनि) पूज्य है इनकी पूज्यपने का स्वरूप शास्त्रों में वर्णित है। मुनिराजों के पडगाहन के बाद परिक्रमा, पूजन आदि होगी। आर्यिका, क्षुल्लक, ऐलक आदि के परिक्रमा पूजा आदि नहीं होगी क्योंकि ये पंचम गुणस्थान वर्ती है महाव्रतों के पालक नहीं है अतः मुनिवत स्थान व पूज्यपना नहीं होगा।

पडगाहन शुद्धि : मुनिराज के विधि मिलने के बाद जब आपके सामने खडे हो जाते हैं तब तीन प्रदक्षिणा देना चाहिए। उसके बाद “नमोऽस्तु, महाराज! मनशुद्धि वचनशुद्धि, कायशुद्धि आहार जल शुद्ध है भोजनशाला में प्रवेश कीजिए” ऐसा कहना चाहिए। आर्यिका के लिए वन्दामि, क्षुल्लक के लिए इच्छामि कहें तथा क्षुल्लक व ऐलक के खडे होने पर प्रदक्षिणा नहीं लगावें। भोजनशाला के पास गरम पानी रखें। उससे अपने पैर अच्छी तरह धोकर मुनिराज को भोजनशाला में प्रवेश करने के लिए प्रार्थना करें। पुनः “हे महाराज! नमोऽस्तु, उच्च आसन पर विराजमान होइये।” ऐसा कहें। आसन पर विराजमान होने के बाद थाली में मुनिराज के पैर गरम पानी से धोकर गंधोदक शिर में लगावें। आर्यिका, क्षुल्लक, ऐलक का गंधोदक नहीं माना जाता है एवं ना ही लगाया जाता है ना ही पूजन होती है।

पूजा विधि

आवाहन : हे मुनिराज अत्र अवतर अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा : ऐसा कह कर पुष्प क्षेपण करें।

1 **जल** - ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

2 **चन्दन** - ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

3 **अक्षत**- ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

4 **पुष्पं** - ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो काम वाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

5 **नैवेद्य**-ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6 **दीप**- ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

7 **धूप**- ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

8 **फल**- ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकै, चरु सुदीप सुधूप फलाध्यकैः।

धवल मंगल गान रवांकुले, मम गृहे मुनिराज महं यजै।।

9 **अर्घ्य**- ऊँ ह्रींश्री मुनिराज(नाम..) चरणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसके बाद शांतिधारा, पुष्प क्षेपण करें एवं पंचांग नमोऽस्तु, करें।

आहार देने के लिए शुद्धि : हे स्वामिन् नमोऽस्तु, मनशुद्धि वचन शुद्धि काय शुद्धि आहार जल शुद्ध है मुद्रिका छोडकर अंजुली बांधकर भोजन ग्रहण कीजिये फिर नमोऽस्तु करें। (मुनिराज के मुद्रिका छोडने पर गरम जल से हाथ धुलावें)



भोजन विधि

चौके में बनाई गई समस्त वस्तुओं को एक थाली में रख कर मुनिराज के सामने लायें और एक-एक वस्तु का नाम बतायें। फिर मुनिराज जिसे निकलवाना चाहें उसे थाली से हटा देना चाहिए। महाराज के खडे होकर मंत्र बोलने के बाद पहले पानी दें, फिर दूध दें, फिर सुपाच्य भोजन दें। भोजन के मध्य में थोडा-थोडा पानी देते रहें। दूध के बाद खट्टी एवं खट्टी के बाद दूध नहीं देवें, फलरस व फल के बाद पानी नहीं देवें पानी के बाद फल व फलरस नहीं देवें तथा मुनिराज की प्रकृति का भी ध्यान रखें। मुनिराज को आहार कराने के भाव अन्य श्रावकों के होते हैं उचित यही है कि जो पडगाहन में थे वे ही आहार करायें। यह तथ्य आज किसी को ज्ञात नहीं है। श्रद्धा भाव के कारण घर के अन्य सदस्य शामिल हो जाते हैं। आहार देने के बराबर अनुमोदना का भी फल मिलता है। आहार में अन्य चौके से या घर से चलित वस्तु को नहीं देना चाहिए। आहार देते समय मुनिराज के अंतराय नहीं हो इस बात का विशेष ध्यान रखें।

आहार दान का फल

चार प्रकार के दानों में से आहार दान से आत्म स्वरूप में दृढता, आत्म विशुद्धि, गुरु सेवा, ज्ञान में प्रवीणता, संक्लेश परिणामों की हीनता, पाप का नाश, पुण्य की प्राप्ति, यश प्राप्ति, देव पर्याय या उच्च कुल की प्राप्ति, लौकिक सुख समृद्धि, वीतरागी भाव होने पर अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है। आहार दान से उत्कृष्ट औषधि दान है, औषधि दान से अभय दान उत्कृष्ट है, अभय दान से सर्वोत्कृष्ट शास्त्र दान है। अतः अपनी क्षमतानुसार चारों प्रकार



के दान प्रतिदिन करना चाहिए, गृहस्थ के षट आवश्यक कर्तव्यों में दान एक आवश्यक कर्तव्य माना गया है। दान हमेशा उपयोगी वस्तु का किया जाता है। दान देने वाले की नजर नीची रहती है अहंकार पूर्वक दान देने वाले सीना तान कर चलते हैं। जिसका फल अल्प होता है कुपात्र को दान देने वाले कुभोग भूमि में या तिर्यच गति में पैदा होते हैं वर्षों, सागरों तक दुःख को भोगते रहते हैं। दान की अनुमोदना करने का फल दान देने से कम नहीं माना गया है। दान देने वाले में अहंकार आ भी सकता है मगर अनुमोदना करने वाला में अहंकार नहीं होता है हीनता के परिणामों से बचना चाहिए अन्यथा अहंकार और हीनता दोनों ही आत्म लीनता में बाधक है।

स्मृति शेष

1. श्रीमती मालतीबाई ध.प. स्व.वीरेन्द्र कुमार जैन 'लॉ' ऑफिसर, सागर
2. श्रीमती कस्तूरीबाई ध.प. हीरालाल, फुटेर
3. श्री रमेशचंद्रजी जैन (सोडपुर वाले), सागर
4. श्री रमेशचंद्रजी मलैया, सागर
5. श्री कोमलचंद्रजी जैन (पिपरिया वाले), रहली
6. श्री ब्रजलालजी जैन (हीरापुर वाले), दमोह
7. श्रीमती चमेली रांधेलिया ध.प. स्व. श्री कोमलचंद्रजी रांधेलिया, सागर
8. श्री नेमीचंद्र जैन 'विनम्र', सागर
9. श्री सेठ सुरेश कुमार जैन बंडा वाले (कुमार पेपर मार्ट), सागर
10. श्री नेमीचंद्र मलैया, सागर
11. पं. निर्मलचंद्रजी जैन, सतना
12. श्री निर्मल कुमारजी जैन, बरायठा
13. श्री सेठ ताराचंद्रजी (रजवांस वाले), सागर
14. श्री संजय कुमार जैन (खटौरा वाले), सागर
15. श्री सुरेशचंद्र जैन (बिनेका वाले), सागर
16. श्री आनंद कुमारजी जैन (सोडरपुर वाले), सागर
17. श्रीमती सुधा जैन (सोडरपुर वाले), सागर
18. श्रीमती रत्नप्रभा रांधेलिया ध.प. स्व. कमलकुमार रांधेलिया, सागर
19. श्री अशोक कुमार जैन (जासौड़ा वाले), टीकमगढ़
20. श्रीमती सुधा जैन (बिनेका वाले), सागर
21. श्री मनोज जैन (हटा वाले), सागर

दिवंगत समाजजनों को महासभा परिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सकारात्मक सोच का महत्व!

एक व्यक्ति ऑटो से रेलवे स्टेशन जा रहा था। ऑटो वाला बड़े आराम से ऑटो चला रहा था। एक कार अचानक ही पार्किंग से निकलकर रोड पर आ गई। ऑटो ड्राइवर ने तेजी से ब्रेक लगाया और कार, ऑटो से टकराते-टकराते बची। कार चला रहा आदमी गुस्से में ऑटो वाले को ही भला-बुरा कहने लगा जबकि गलती उसकी थी। ऑटो चालक एक सत्संगी (सकारात्मक विचार सुनने-सुनाने वाला) था। उसने कार वाले की बातों पर गुस्सा नहीं किया और क्षमा माँगते हुए आगे बढ़ गया। ऑटो में बैठे व्यक्ति को कार वाले की हरकत पर गुस्सा आ रहा था और उसने ऑटो वाले से पूछ- "तुमने उस कार वाले को बिना कुछ कहे ऐसे ही क्यों जाने दिया? उसने तुम्हें भला-बुरा कहा जबकि गलती तो उसकी थी। हमारी किस्मत अच्छी है, नहीं तो उसकी वजह से हम अभी अस्पताल में होते।"

ऑटो वाले ने बहुत मार्मिक जवाब दिया- "साहब, बहुत से लोग गार्बेज ट्रक (कूड़े का ट्रक) की तरह होते हैं। वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में भरे हुए चलते हैं। जिन चीजों की जीवन में कोई ज़रूरत नहीं होती उनको मेहनत करके जोड़ते रहते हैं। जैसे क्रोध, घृणा, चिंता, निराशा आदि। जब उनके दिमाग में इनका कूड़ा बहुत अधिक हो जाता है तो, वे अपना बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूँढ़ने लगते हैं। इसलिए

मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ और उन्हें दूर से ही मुस्करा कर अलविदा कह देता हूँ। क्योंकि अगर उन जैसे लोगों द्वारा गिराया हुआ कूड़ा मैंने स्वीकार कर लिया तो, मैं भी कूड़े का ट्रक बन जाऊँगा और अपने साथ-साथ आसपास के लोगों पर भी वह कूड़ा गिराता रहूँगा। मैं सोचता हूँ जिंदगी बहुत खूबसूरत है। इसलिए जो हमसे अच्छा व्यवहार करते हैं उन्हें धन्यवाद कहो और जो हमसे अच्छा व्यवहार नहीं करते उन्हें मुस्कुरा कर भुला दो। हमें यह याद रखना चाहिए कि सभी मानसिक रोगी केवल अस्पताल में ही नहीं रहते हैं कुछ हमारे आसपास खुले में भी घूमते रहते हैं।"

प्रकृति के नियम : यदि खेत में बीज न डाले जाएँ तो, कुदरत उसे घास-फूस से भर देती है। उसी तरह से यदि दिमाग में सकारात्मक विचार न भरें जाएँ तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना ही लेते हैं।

दूसरा नियम है कि जिसके पास जो होता है वह वही बाँटता है। सुखी सुख बाँटता है, दुखी दुख बाँटता है, ज्ञानी ज्ञान बाँटता है, भ्रमित भ्रम बाँटता है और.... भयभीत भय बाँटता है। जो खुद उरा हुआ है वह औरों को उरता है, दबा हुआ दबाता है, चमका हुआ चमकाता है।

इसलिए नकारात्मक लोगों से दूरी बनाकर खुद को नकारात्मकता से दूर रखें। और जीवन में सकारात्मकता अपनाएं।



रक्षाबंधन कथा का प्रतीकार्थ

एक अनुचिंतन



» प्रेषक : डॉ. सुजाता जैन 'आदित्य'

आध्यात्मिक परामर्शकर्ता, मुंबई
मो. 9870952514

बलि के यज्ञ के विध्वंस के साथ सात सौ मुनियों के उपसर्ग का निवारण हुआ। विष्णुकुमार महामुनि की जय-जयकार के साथ लोगों ने रक्षाबंधन का महोत्सव मनाया, जिसकी परंपरा कल्पांत तक चलती रहेगी। किंतु जरा ठहरिये, रक्षाबंधन की कथा यहीं समाप्त नहीं होती। उस कथा का एक प्रतीकार्थ भी तो है, आज उस पर भी विचार कीजिये।

प्रतीकों की भाषा में समझना चाहें तो यह हमारी अपनी ही कथा है। बलि, नमुचि, बृहस्पति और प्रह्लाद हमारे भीतर बसे क्रोध, मान, माया और लोभ के प्रतीक हैं। विकारी परिणति के नाते चारों कषायें एक रूप हैं परंतु आवेग में हर कषाय अपना अलग-अलग रूप दिखती चलती हैं। उनके दंश जुदा-जुदा (अलग-अलग) हैं पर पीड़ा एक है। माया उन सबमें बलिष्ठ है। अतः कथा का बलि वही है।

हमारा पुरुषार्थ ही पद्मराय है। जब तक वह अपने साम्राज्य का शासन करता हुआ जागत है, तब तक मन के सारे विचार उसके दास बने रहते हैं। उनकी धार भोथरी बनी रहती है। परंतु जब पुरुषार्थ का पद्मराय कषाय की चौकड़ी को अपनी सत्ता समर्पित कर देता है, तब वह स्वयं निष्क्रिय बनकर अनुत्साह के रनिवास में जा बैठता है। तब माया और मोह हमारी चेतना के सिंहासन पर बैठकर स्वच्छंद हो जाते हैं। धर्म के लिए यही आपातकाल होता है। यही हमारी साधना पर सबसे बड़ा उपसर्ग है। उस उपसर्ग के धुएँ में सारे ही सद्गुणों का कंठाव रोध हो जाता है। उनकी वाणी रुंध जाती है।

अकम्पनाचार्य हमारी आस्था को रूपायित करते हैं। भक्ति, संकल्प और समता, धीरज, माध्यस्थ, मैत्री और क्षमा इन सात गुणों का समुदाय ही आस्था के अकम्पन का संघ है। बड़े से बड़े कष्ट में भी अकंप रहना आस्था का लक्षण है। कैसी भी परीक्षा हो, उससे तिल भर भी डिगना नहीं है। यही उसकी महानता है।

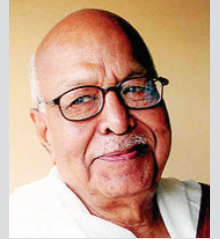
सारचंद्र आचार्य अनुकम्पा और वात्सल्य के प्रतीक बनकर हमें दर्शन देते हैं। अकम्पन जिस पीड़ा को भोगते हुए भी कम्पित नहीं होते, सारचंद्र उस कष्ट के चिंतन मात्र से कम्पित हो जाते हैं। उनके मुख से आह निकल जाती है। पर-परिताप से द्रवित होना, कम्पित हो उठना, संतों का गुण माना गया है-

निज परिताप द्रवहि नवनीता,

पर-परिताप सु संत पुनीता।

हमारे अध्यवसाय का ही दूसरा नाम है 'पुष्पदंत'। गुरु से मार्ग का संकेत मिल जाने पर तत्काल सक्रिय हो जाना और आगे बढ़ जाना पुरुषार्थ का सहज धर्म है। संकल्प कर लेने पर आचरण के सर्वोच्च शिखर तक

रक्षाबंधन पर्व की कथा हम सभी बहुत अच्छे से जानते हैं। परंतु इस कथा को प्रतीकार्थ रूप में देखने के लिए स्व. पं. नीरजजी जैन सतना द्वारा लिखित पुस्तक 'रक्षाबंधन कथा' से लिए गए कुछ सारगर्भित अंश प्रस्तुत हैं।



पहुँचने की विद्या कभी उससे जुदा नहीं होती। शक्ति रूप में वह कला सदा उसके भीतर विद्यमान रहती है।

महामुनि विष्णुकुमार हमारी आत्मा के प्रतिबिम्ब बनकर कथा में उभरते हैं। साधना के पथ में जैसे-जैसे राग-द्वेष के बाँध टूटते जाते हैं वैसे-वैसे आत्मशक्ति की अनगिनत ऋद्धियाँ स्वयं ही प्रकट होती जाती हैं। पुरुषार्थ का पुष्पदंत जब झकझोरता है तब मोह-माया के हिंसक अनुष्ठान का ध्वंस करने में फिर उसे अधिक समय नहीं लगता। यद्यपि मान के मद में ऐंठता हुआ छल का बलि भगवती आत्मा को पहचान नहीं पाता, बार-बार उसका तिरस्कार करता है। पर आत्मा बल का पदाघात होते ही उसके छल पुरुष की कमर टूट जाती है। वह सदा के लिए सत्वहीन हो जाता है।

विराट पुरुष विष्णुकुमार के तीन पग रत्नत्रय के प्रतीक कहे जा सकते हैं। मनुष्य लोक को नापते दोनों पग सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान हैं। दोनों एक साथ समानांतर स्थित हो जाते हैं और एक ही स्तर पर अपनी सार्थकता देते हैं। भले ही पूरा लोक इन दो पगों से नप जाए, पर कषायों का मेरुदंड उनसे टूटता नहीं है। उसे तोड़ने के लिए सम्यक चारित्र का तीसरा पग उठाना साधना के लिए अनिवार्य होता है। उसी पदाघात से आश्रव का यज्ञ ध्वंस होता है। यह संकल्पित पग ही सम्यक चारित्र है।

रत्नत्रय के तीन डग भर कर नाप लेने पर ही उस मंगल भूमि का स्वामित्व जीव को प्राप्त होता है, जिस पर उसका अनंत चतुष्टय का निष्कंटक साम्राज्य स्थापित हो सके।

अंत में समता की स्वादिष्ट खीर और विश्व वात्सल्य के रक्षा सूत्र जन-जन तक पहुँचाकर यह प्रतीक आख्यान समापन पर पहुँचता है। इसमें आत्मा ही प्रभावनीय है और वही प्रभावना का सबसे सबल सम्बल है। आत्म रुचि का आकर्षण ही राखी का बंधन है। देखने में सामान्य, किंतु अपने आप में सशक्त, कभी न टूटने वाला.... अनोखा और.... अटूट बंधन...।

कोई भी रोग, वियोग या दुःख आता है तो वह एक अनुभव देकर जाता है, सहनशक्ति बढ़ाकर जाता है तथा ईश्वर का स्मरण कराकर जाता है। जब भी कोई दुःख आए तो घबराएँ नहीं, धैर्य व धर्म को धारण कर ईश्वर को याद करें। यह समय भी बीत जाएगा।

फार्म भेजने की
अंतिम तिथि
10 सितंबर 2020
फार्म की
फोटोकॉपी मान्य है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

द्वारा आयोजित

नवीनतम रंगीन
पासपोर्ट साइज फोटो
फोटो के पीछे
प्रत्याशी का नाम,
पिता का नाम व
स्थान लिखा हो
चस्पा करें।

संस्कार-दिगम्बर जैन युवक-युवती परिचय पत्रिका

दीपावली तक परिचय पुस्तिका आप तक भेज दी जावेगी।

प्रधान कार्यालय: तीर्थकर परिसर, द्वितीय तल, कटरा, नमकमंडी, सागर (म.प्र.)

फोन-07582-243101, मोबा. 9165232417 Website - www.golapurvajainsamaj.com E-mail: golapurmahasabha@gmail.com

कृपया फार्म हिन्दी भाषा में स्वच्छ एवं स्पष्ट भरें तथा अंक अंग्रेजी में भरें ताकि प्रकाशन में त्रुटि न हो।

नोट:- 1. अगर आपका संस्कार 2019 में प्रविष्टि है तो उसका क्रमांक यदि आप उस प्रविष्टि में कोई सुधार चाहते हैं तो केवल वही जानकारी इस फार्म में अंकित करें।

प्रत्याशी विवरण

नाम.....
मोबाइल 0
शिक्षा.....
व्यवसाय/सर्विस.....
मासिक आय रु.
जन्म दिनांक
जन्म तिथि (शब्दों में).....
जन्म समय जन्म स्थान.....
ऊँचाई: फुट इंच वजन कि.ग्रा.
वर्ण (रंग) (✓) करें : गौर गेहूँआ श्याम
कुण्डली मिलान के पक्ष में - हाँ नहीं
मंगली - हाँ नहीं
उपजाति :.....
उपजाति बंधन: (हाँ/नहीं).....
वंश- निज वंश.....
मामा वंश.....
नक्षत्र..... इलड ग्रुप.....
शारीरिक दोष : (यदि हो, तो लिखें).....
चयन में प्राथमिकता :.....

पारिवारिक विवरण

पिता का नाम श्री.....
माता का नाम श्रीमती.....
पता.....
विन
फोन (STD कोड सहित).....
मोबाइल/Whatsapp 0
व्यवसाय/सर्विस.....
मासिक आय रु.
भाई/बहिन (प्रत्याशी के अतिरिक्त, संख्या शब्दों में लिखें)
भाई विवाहित भाई अविवाहित बहिन विवाहित बहिन अविवाहित
आवास - निजी किराये का

चाचा/मामा/फूफा एवं अन्य संपर्क सूत्र

1. श्री.....
पता.....
फोन (STD कोड सहित).....
मोबाइल 0
2. श्री.....
पता.....
फोन (STD कोड सहित).....
मोबाइल 0

वचन पत्र

मैं आवेदनकर्ता वचन देता/देती हूँ कि इस आवेदन पत्र में दिये गये विवरण पूर्णतः सत्य एवं सही हैं तथा इसकी प्रमाणिकता के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ। मैंने इस आवेदन-पत्र के पीछे निर्दिष्ट नियम एवं शर्तें पूर्णतया पढ़ लिये हैं एवं मैं उनका पालन करने हेतु प्रतिबद्ध हूँ। भ्रम अथवा विवाद की स्थिति में अ.भा.दि. जैन गोलापूर्व महासभा सम्मेलन, सागर की आयोजन समिति किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होगी, इसके लिये मैं वचनबद्ध हूँ। उपरोक्त विवरण में अ.भा.दि. जैन गोलापूर्व महासभा में प्रकाशनार्थ एवं सम्मेलन की वेबसाइट पर उपलब्ध कराने हेतु प्रस्तुत कर रहा/रही हूँ। सम्मेलन के दौरान परिचय विवरण हेतु मेरी पूर्ण सहमति है।

हस्ताक्षर : प्रत्याशी

हस्ताक्षर : अभिभावक

शुल्क विवरण - प्रविष्टि+पत्रिका शुल्क (डाक व्यय सहित) - 450 रुपये + सगे भाई/बहिन - 200 रुपये = योग (जो लागू हो) =

नगद राशि आप सीधे हमारे अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा, सागर के विजया बैंक (बड़ौदा बैंक), गुजराती बाजार, सागर के खाता क्रमांक 761001013000028 IFS Code - VIJB0007610 में जमा कर बैंक की काउण्टर स्लिप भेजना अनिवार्य है।

संकलनकर्ता का नाम..... रसीद क्र. दि. रुपये.....

अपील

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा के द्वारा अपनी समाज की आनलाइन जनगणना का कार्य द्रुतगति से वेबसाइट/मोबाइल ऐप के माध्यम से चल रहा है, आप सभी सम्माननीय महानुभाव से विनम्र आग्रह है कि अपने परिवार, रिश्तेदारों एवं समाज के ज्यादा से ज्यादा परिवारों को इस मुहिम से जुड़ने के लिए अपने महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए परिवार की जानकारी वेबसाइट पर समाविष्ट जरूर करें, इस कार्य में किसी भी प्रकार के तकनीक सहयोग के लिए आप संपर्क कर सकते हैं:- संयोजक- राजेश जैन-9303270923, सह संयोजक-विवेक जैन-9754340315, सह संयोजक- दीपेश जैन-9993818201, साथ ही हमारी जनगणना टीम के स्थानीय सक्रिय संयोजक सदस्य भी आपके लिए सहयोग करने के लिए आपके पास उपलब्ध हैं स्थानीय सम्माननीय संयोजक सदस्यों के नाम और मोबाइल नंबर वेबसाइट पर जनगणना वाले विकल्प से प्राप्त किए जा सकते हैं।

जनगणना हेतु वेबसाइट
www.golapurvajainsamaj.com
जनगणना हेतु मोबाइल ऐप
http://golapurvajainsamaj.com/public/DJGPMS.apk
परिचय फार्म एवं चेतना सम्मान फार्म
वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।
अतः फार्म ऑनलाइन भरने का प्रयास करें।



मंदिर क्यों जायें?



» अजित जैन 'जलज'

वीर वर्णी करुणापीठ, ककरवाहा, टीकमगढ़ (मप्र)
मो. 9926565711



मंदिर मन के अंदर का मार्ग है। चलो चर्चा करें। एक मेंढक के मन में भाव बने कि भगवान के दर्शन करने जब सब लोग जा रहे हैं तो फिर भला मैं क्यों नहीं जाऊँ? उसी समय उसने फूल की एक पंखुड़ी को मुँह से दबाकर मार्ग पर चलना चालू किया। महावीर की भक्ति में लीन मेंढक हर्षपूर्वक चला जा रहा है। अचानक एक हाथी के पाँव के नीचे आ गया, मनोभाव की महिमा देखिये। भक्ति भाव से भरा मेंढक देवता बना और जब हाथी पर सवार होकर महाराजा समवसरण में पहुँचे तो देखा कि वही मेंढक देवता बनकर तीर्थंकर महावीर के दर्शन कर रहा है। अहो ये कोई किस्सा कहानी नहीं है दो हजार साल पहले हुए हमारे महान आचार्य भगवंत समंतभद्र का कथन है। मंदिर जाने के लाभ कितने हैं, ये आप गिन भी नहीं सकते। फायदे की बातें हमें हमेशा अच्छी लगती है।

1. मंदिर के नाम से चिड़ने वाले एक आदमी ने मजबूरी में प्रतिदिन गधे को देखने का नियम लिया। ऐसा संयोग बना कि इस नियम से ही उसको ऐसा लाभ हुआ कि उसे प्रतिदिन मंदिर जाकर देवदर्शन का नियम ले ही लिया।
 2. मंदिर जाने से समय बेकार नहीं होता बल्कि समय की बचत होती है क्योंकि अगर मंदिर में 10 मिनट लगता है तो हमारे मन को इतनी शांति एवं प्रसन्नता मिलती है कि दिनभर में कई बार फालतू बकवास से मुक्ति मिल जाती है।
 3. हम सब प्रतिदिन नियमित रूप से कुछ काम करते ही हैं। संसार के सभी मनुष्य लगभग 10-12 घंटे एक जैसे कार्य खाना, पीना, सोना आदि करते ही हैं। इसलिए अगर हम 24 घंटे में 24 मिनट अपने तन को एवं 24 मिनट अपने मन को दे दें तो आप की आयु कम से कम 24 महीने तो बढ़ ही जायेगी।
 4. 24 मिनट तन के - योगासन, ध्यान, प्राणायाम, टहलना
24 मिनट मन के - स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रार्थना (पूजा)
 5. समय को कम बढ़ भी किया जा सकता है, एक प्रयोग के तौर पर आप अष्टमी से लेकर चतुर्दशी तक 7 दिन मंदिर जाने का कार्यक्रम बनायें। प्रातःकाल उठकर णमोकार मंत्र का पाठ-जाप करें।
- घर के आवश्यक कार्यों को निपटा कर अच्छी तरह से नहा धोकर भक्तिभाव से मंदिर जी को प्रस्थान करें।
 - मंदिर में प्रसन्नचित्त होकर सभी वेदियों के सम्मुख झुक झुक कर प्रणाम करिये, परिक्रमा लगाइये, कायोत्सर्ग करिये। आपके अनेक योगासन

एवं प्राणायाम अपने आप हो जायेंगे।

- कुछ देर बैठ कर स्वाध्याय करिये, आत्मचिंतन करिये। समता की साधना होगी, भूलों का प्रतिक्रमण होगा, मन शुद्ध साफ हो जायेगा।
- दूसरे के दोषों को मत देखिये जिनेन्द्र भगवान के गुणों का स्मरण कीजिए। हम पत्थर की प्रतिमा को नहीं पूजते हैं उस मूर्ति में मूर्तिमान जिनेन्द्र भगवान को देखते हैं, उनके अनंतानंत गुणों को देखते हैं, अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख, अनंत वीर्य को देखते हैं और उनके गुणों को गाते गाते बहुत से गुण हममें भी आने लगते हैं, क्योंकि आखिर आत्मा और परमात्मा के बीच मात्र कर्मों का आवरण ही तो पड़ा हुआ है। चिंतन चलेगा कि हे प्रभु आपको इतना सुख इतना आनंद कैसे मिला?
- उत्तर आयेगा - कषायों की कालिमा से लिपटे मानव, अगर तुझे भी यही सुख चाहिए, तो मन के अंदर झाँकना पड़ेगा, मंदिर तो आना ही पड़ेगा।
- आज तेरा पहला दिन है, ध्यान रखना अपने पहले शत्रु क्रोध से सावधान रहना, जब भी आये, बस दो मिनट रुक जाना। कल मान मिटायेगे, परसों माया हटायेंगे और फिर पाप के बाप लोभ को गलायेंगे।
- देखना आनंद आना आज से ही आरंभ हो जायेगा, जैन कुल में पैदा होने का मतलब समझ पायेगा।
- आपने मेरी बातें सुनी, कुछ गुनी और सोचा चलो सात दिन के लिये ऐसा ही कर लेते हैं। फिर भी शंकाओं की विष बेलें इधर उधर से उगीं, उठीं, इतराईं। जब हमारे भगवान हमें कुछ दे ही नहीं सकते तो हम भला उनके दरवाजे क्यों जायें?

मेरे भाई

- हम सैंकड़ों रुपये खर्च करके, सिनेमा देखते हैं, टी.वी. देखते हैं। हजारों रुपये खर्च कर इंटरनेट सोशल मीडिया देखते हैं। ये हमें क्या देते हैं? मंदिर जाने के भाव मात्र से हमारे पापों का कटना शुरू हो जाता है, एक बार देवदर्शन का सुख लेना शुरू तो करो, फिर आपको सब कुछ मिलेगा। आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं
- अंचेमि - अर्चना करता हूँ,
- पूजेमि - पूजा करता हूँ,
- वंदामि - वंदना करता हूँ,

- णमंसाभि - नमस्कार करता हूँ,
- दुक्खक्खओ - दुखों का नाश को,
- कम्मक्खओ - कर्मों के विनाश को,
- बोहिलाओ - बोधि की प्राप्ति को,
- सुगइगमणं - अच्छी गति पाने को,
- समाधिमरणं - समाधि पूर्वक मरण को,
- जिनगुण संपत्ति होइ मज्झं।
- जिनवर के गुणों की सम्पत्ति मुझे मिले।
- अब इससे बढ़कर आप क्या चाहेंगे?

कुछ सांसारिक बातें भी हो जायें

- जैन धर्म एवं समाज मंदिरों के कारण ही, आज विश्व का सबसे सम्पन्न एवं समृद्ध समुदाय बना हुआ है।
- जहाँ जैन होंगे, वहाँ मंदिर होंगे सभी जैनों के मिलने का पावन माध्यम।
- जैन मंदिर में जिनवाणी होगी जिसमें जिनवर की चर्चा होगी।
- हमारे मंदिर मात्र कर्मकाण्ड के स्थान नहीं है बल्कि कर्मकाण्डों के माध्यम से जीवन को उन्नत बनाने का गारेण्टेड स्थान है।
- जैन मंदिरों के साथ ही धर्मशाला जुड़ी रहती हैं जो समस्त समाज के लिए सुलभ सार्वजनिक स्थान हैं।
- जैन मंदिर में जाने पर जैन समाज से संबंधित देश भर के समाचार हमें सहज में ही मिल जाते हैं जो और कहीं नहीं मिल सकते।

- देशभर में अनेक जैन संस्थायें, जैन समाज की उन्नति के लिये जमा कार्य करती हैं इसकी जानकारी भी मंदिर में मिलती है।
- देव शास्त्र गुरु जैनधर्म के प्राण हैं इन तीनों का समागम जिन मंदिर में होता है।

मंदिर ना जाने वालों के अंतिम शानदार सवाल

- मंदिर जाने वालों की कषायें कम कहाँ होती हैं?
 - पाप कहाँ कमते हैं?
 - कुछ मिनटों में मंदिर जाकर गंगा स्नान की तरह पाप धुलेंगे क्या? आपके तीनों प्रश्न मैंने मान लिये -
 - ऐसे बहुत से लोग होते हैं - जो मंदिर आते हैं मन में घर परिवार का बोझ लेकर और घर वापिस हो जाते हैं आत्मवंचना, अहंकार लेकर,
 - आप ऐसे लोगों को मत देखिये।
 - ऐसे लोगों को देखिये जिन्होंने मंदिर से मन को बदला है।
 - और फिर आप स्वयं भी तो उदाहरण बन सकते हैं, मंदिर में खुद को बदलकर बता सकते हैं कि मंदिर पाखंड एवं प्रदर्शन की जगह नहीं समता की साधना स्थली है।
- महाराजा श्रेणिक महावीर के परम भक्त होकर भी अपने पूर्व में बाँधे कर्मों के कारण नरक जाने से नहीं बच पाये थे, जबकि मेंढक का तुच्छ जीव भी सरल भक्तिभाव से भरकर देवता बन गया था।

मंदिर की महिमा मानिये, देवदर्शन को अभी अपनाइये।

पर्युषण महापर्व के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय निबंध (आलेख) प्रतियोगिता

विजयी प्रतिभागियों को दिए जाएंगे
पुरस्कार और प्रमाण-पत्र

ललितपुर। दसलक्षण महापर्व (पर्युषण महापर्व) के अवसर पर अखिल भारतीय निबंध (आलेख) प्रतियोगिता का आयोजन श्रुत संवर्द्धन संस्थान, मेरठ के तत्वावधान में किया जा रहा है। प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. सुनील संचय ललितपुर व मनीष विद्यार्थी शाहगढ़ ने बताया कि प्रतियोगिता में निम्न तीन बिषयों में से किसी एक बिषय पर आलेख लिखना है, जो मौलिक हो।

(1) सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का सामाजिक एकता में योगदान। (2) सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का भारतीय संस्कृति को अवदान। (3) सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का जैन वाङ्मय के लिए अवदान।

प्रतियोगिता में विजेता को प्रथम पुरस्कार के रूप में 11000/-, द्वितीय पुरस्कार 5100/-, तृतीय पुरस्कार 3100/- रुपए एवं 1100/- के तीन सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। साथ ही प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।

प्रतियोगिता की नियमावली इस प्रकार है :- 1. इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के लोग सम्मिलित हो सकते हैं। 2. उपरोक्त तीन विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखकर भेजना है। 3. लेख की अधिकतम शब्द सीमा 3000 है। 4. लेख मौलिक होना चाहिए। लेख की मौलिकता का प्रमाण- पत्र लेख के साथ संलग्न करना अपेक्षित है। 5. लेख की भाषा हिंदी होना चाहिए। 6. लेख ए4 साइज आकार के कागज पर सुवाच्य हस्तलिपि में या कंपोज करारकर दो प्रतियों में भेजना अपेक्षित है। साथ में पासपोर्ट साइज फोटो भेजें। 7. लेख के साथ एक पृष्ठ



पर अपना नाम, पूरा पता, मोबाइल, व्हाट्सएप नंबर, शैक्षिक योग्यता, आयु आदि विवरण लिखकर अवश्य भेजें। 8. लेख डाक, ईमेल अथवा व्हाट्सएप (पीडीएफ में) द्वारा भेज सकते हैं। 9. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। 10. किसी भी विवाद की स्थिति में आयोजन समिति का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। प्रतियोगिता की अंतिम तिथि, परिणाम तिथि एवं अन्य संसोधन करने का अधिकार आयोजन समिति को होगा।

प्रतियोगिता के लिए एक समिति का गठन भी किया गया है जिसमें निर्देशक ब्र. जयकुमार 'निशांत' भैया, टीकमगढ़, मार्गदर्शक मण्डल, डॉ शीतल चंद्र जैन जयपुर, प्रो. नलिन के. शास्त्री बोधगया, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, डॉ अनुपम जैन इंदौर, परामर्श मंडल राजेंद्र जैन 'महावीर', सनावद, डॉ. प्रगति जैन, इंदौर, डॉ. मनीषा जैन, लाडनू को बनाया गया है।

प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर, मनीष जैन 'विद्यार्थी', शाहगढ़ हैं। श्रुत संवर्द्धन संस्थान, मेरठ उ.प्र. अध्यक्ष योगेश जैन खतौली, महामंत्री हंस कुमार जैन मेरठ, कोषाध्यक्ष विवेक जैन गाजियाबाद हैं।

प्रतिभागियों को अपने आलेख 30 सितंबर 2020 तक manish2shastri82@gmail.com, suneelsanchay@gmail.com इन ईमेल पर अथवा डाक से आलेख भेजने हेतु पता है :-

डॉ. सुनील जैन संचय

ज्ञान-कुसुम भवन, नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने,
नई बस्ती, गांधीनगर, ललितपुर-284403 (उत्तरप्रदेश)

विशेष जानकारी के लिए मोबाइल नंबर है 9793821108, 8821965778, 9926409086

हमारे गौरव

सुरेशजी को हीरक जयंती पर अनंत बधाई



» डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

प्राचार्य, भगवां, जि. छतरपुर

मो. 9424672731



श्री सुरेश जैन को औपचारिक रूप से बाल्यावस्था में प्राथमिक और किशोरावस्था में औपचारिक रूप से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला, तदपि उन्होंने युवावस्था में स्नातक की उपाधि प्राप्त कर प्रशासनिक सेवा में प्रवेश किया। छत्र जीवन में उनकी इच्छा थी कि हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी विषयों का अध्ययन कर प्राध्यापक बनें और साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ें, किन्तु उच्च अध्ययन के पूर्ण होने के पहले ही प्रशासनिक सेवा में चयन के कारण यह संभव नहीं हो सका। सेवा में रहते हुए उन्होंने एम.कॉम, एलएल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की। स्वर्ण पदक प्राप्त किए। सेवा में रहते हुए भी वे प्रशासनिक संस्थाओं में युवा अधिकारियों को शिक्षण-प्रशिक्षण देते रहें। विधि शास्त्र के विभिन्न विषयों पर बहुचर्चित पुस्तकें एवं व्यक्तित्व विकास, विविध धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों पर शोध पत्र और लेख लिखते रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् गत वर्षों में उनके शताधिक आलेख प्रकाशित हुए हैं। वे अनुभवी और कुशल रचनाकार हैं।

श्री सुरेश जैन के द्वारा लिखित बड़े भाई की पाती की सहस्रों प्रतियों प्रकाशित और वितरित हो चुकी है। वे अपने परिश्रम की बूंदों से नैनागिरि तीर्थ को विकसित कर रहे हैं। अपने शब्दों में नैनागिरि का इतिहास लिख रहे हैं। प्रत्येक क्षण का उपयोग करने की श्री सुरेश जी की लालसा, निष्ठा और कर्मठता सराहनीय है। अगर सोते समय उनके मन में कोई सपना आ गया या विचार आ गया तो वे सो नहीं पाते हैं। उठ जाते हैं। उस विचार को बिस्तर पर रखी कलम से अपनी डायरी में लिख लेते हैं। उनकी इच्छा है कि वे अपने जीवन भर विद्यार्थी बने रहें। प्रतिक्षण कुछ न कुछ सीखते रहें। मृत्यु की अंतिम सांस तक सीखते रहें। उनकी शाखाएँ और प्रशाखाएँ पूरे विश्व में फैल रही हैं। मूल से जुड़ी रहकर नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ से ऊर्जा गृहण कर रही हैं।

सुरेश जी अपने ग्राम नैनागिरि में बेहद गरीब और वंचित वर्ग के साथ रहते हैं। उन्होंने इस वर्ग के व्यवहार, कामकाज और विचारों को गहराई से जाना है और उनके हालातों को अच्छी तरह से समझा है। उन्होंने अनुभव किया है कि गरीबी से डर और तनाव बना रहता है। गरीबी की वजह से अपमान

झेलना पड़ता है। अनेक कठिनाईयों उठाना पड़ती हैं। हमें गर्व है कि श्री सुरेश जी द्वारा उन्होंने नैनागिरि में वर्ष 1993 में स्थापित सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में गत 27 वर्षों की अवधि में दो हजार से अधिक बच्चों ने बारहवीं तक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर अपनी गरीबी दूर करने की दिशा में सराहनीय सफलता प्राप्त की है।

हमारे बड़े भाई सुरेश जी वर्ष 1973 से न्यासी के रूप में तथा 2010 से न्यासी मण्डल के अध्यक्ष के रूप में जैन तीर्थ नैनागिरि को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। जैन समाज के समूचे बुनियादी सिद्धांतों और परंपराओं के बीच आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से आदर्श सेतु का निर्माण कर संतुलन

स्थापित कर रहे हैं। उनके चिंतन बिन्दु व्यावहारिक जगत में बड़े उपयोगी और अनुकरणीय प्रतीत होते हैं। सुरेश जी कभी अपनी सामाजिक जिम्मेदारियाँ दूसरों की ओर नहीं सरकाते हैं। स्वयं अपना कार्य करते हैं। दूसरों को अपना कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे अपने सहायकों पर कभी चीखते-चिल्लाते नहीं हैं अपितु उन्हें अपना कार्य पूरा करने के लिए नए-नए आइडिया सुझाते हैं। उनकी समस्याओं का समाधान करते हैं। वे अपने साथियों को समझाते हैं कि हमारे सहायक ही तीर्थ प्रबंधन के आधारभूत अंग हैं। अतः उनके साथ सदैव सम्मान जनक व्यवहार करें।

जैन साहब ने नैनागिरि तीर्थ के सहायकों में कार्य करने का स्वस्थ वातावरण निर्मित किया है। वे उन्हें कार्य करने के आदेश नहीं देते हैं अपितु उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन लाने के संकेत करते हैं। सहयोग देते हैं। अपनी सर्वोत्तम शक्तियों की खोज कर उन्हें उद्घाटित करने और अपने दैनिक जीवन में सदुपयोग करने के लिए मदद करते हैं। वे कुछ न कुछ नए विचार, प्रक्रिया और पहल कर अपने दैनिक कार्यों में प्रयोग कर रहे हैं। सुरेश जी सदैव खुशमिजाज रहते हैं। हँसी मजाक करते हुए सबको अपने साथ जोड़कर रखते हैं। उन्होंने अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में सब कुछ प्राप्त कर लिया है। वे पूर्णतः संतुष्ट रहकर अपने उत्तरार्द्ध में समाज को अपना सर्वश्रेष्ठ समर्पण कर रहे हैं। साधना और साध्य की शुचिता बनाए रखते हुए जन-जन को प्रेम, स्नेह और सौहार्द के पाठ पढ़ा रहे हैं। हमें श्री सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के संस्थापन एवं संचालन करने में गत तीन दशकों से आधारभूत एवं महत्वपूर्ण अवदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमें भारत के राष्ट्रपति द्वारा सफल एवं सक्षम शिक्षक के रूप में सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। श्री सुरेश जैन ने मेरी विद्यान्वेषी प्रवृत्तियों एवं सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए मेरे उत्साह को बढ़ाया है।

सुरेश जी की माँ श्रीमती केशरदेवी, प्राचार्य सुमति प्रकाश जैन और हम सबके प्रयासों से नैनागिरि तीर्थ के सहायकों के सभी बच्चों ने इस विद्यालय में पढ़कर बारहवीं की कक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद सुरेश जी की प्रेरणा और सहायता से उन्होंने विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, भोपाल में प्रवेश लिया। उन्होंने इस संस्थान में रहकर बी.कॉम और एम.बी.ए. किया। वे पूरे देश में अच्छे और ऊँचे पदों पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। नैनागिरि की चतुर्मुखी विकास में अपना सहयोग दे रहे हैं। जैन समाज के रत्न और हम सबके आदर्श श्री सुरेश जी 16 अक्टूबर, 2020 को अपने सफलतम जीवन के 75 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस मंगल अवसर पर उन्हें अनंत शुभकामनाएँ।



पर्युषण पर्व की वैज्ञानिकता

» प्रो. सुबोध कुमार जैन

डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि., सागर (म.प्र.)

एक नाव जिसमें छेद हो, उसमें से पानी अंदर आता हो तो अंदर के पानी को उलीचकर बाहर निकालने के स्थान पर बुद्धिमानी यही होगी कि छेद को बंद करें तभी वह नाव सुरक्षित रूप से पार लगा सकेगी।

मनुष्य जीवन में पापों के कारण बहुत अशांति है। भगवान महावीर ने धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप और उसके मनोविज्ञान को समझाया है, उसको कहीं से प्रारंभ किया जाए की ओर संकेत किये हैं। उनमें से एक है पाप के मूल स्रोत की पहचान। सभी चीजें अपने मूल स्रोत पर छोटी होती हैं और हमारी क्षमता के अंदर होती हैं। इस प्रकार नियंत्रण योग्य भी हैं। यह मूल स्रोत है प्रमाद अर्थात् बेहोशी। हमें अपने जिये जाने के बारे में ठीक-ठीक कुछ पता नहीं है। परिवेश के प्रभाव से हमारा जीवन निकलता जाता है जिसमें विवेक का स्थान नहीं है। भगवान महावीर के अनुसार जीवन को विवेक पूर्ण तरीके से जीना चाहिये और इस विवेक का कुछ अर्थ है जागरण।

जैन परंपरा में इस जागरण की शुरुआत के लिए वर्ष में एक बार पर्युषण पर्व मनाते हैं। यह पर्व जीवन की प्रक्रियाओं में जागरण के प्रकाश को प्रारंभ करने की शुरुआत का आयोजन है ताकि जीवन से मोह, लोभ, काम, क्रोध इत्यादि का नाश हो, मन का संघर्ष समाप्त हो, तभी बाहर का संघर्ष समाप्त हो सकेगा और जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत हो सकेगा। यह बात बार-बार ख्याल में रखने की है कि भीतर परिवर्तन हो, चित्त बदले, तब ही बाहर परिवर्तन होता है अपने आप। और पर्युषण पर्व चित्त बदलने की शुरुआत करने में सहायक होते हैं।

विवेक का अर्थ है जो भी कार्य किया जाए, चित्त उसी में लगा हो, यही



होगा जागरण। कार्य कोई भी हो, उठना, बैठना, चलना, खाना, सोना आदि।

विज्ञान में ऊर्जा की बहुत चर्चा होती है। सारा संसार ऊर्जा से चलता है। चाहे प्रकृति हो या जीव-अजीव की सभी क्रियाएँ। ऊर्जा संबंधी एक नियम है कि ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है न ही नष्ट किया जा सकता है। किंतु ऊर्जा के एक रूप को अन्य रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे हमने भोजन किया, भोजन के कण रासायनिक पदार्थ हैं। उनमें निहित ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा है। यह शरीर में परिवर्तित होकर यांत्रिक कार्य संपन्न होते हैं एवं जीवन चलता रहता है। कथन है कि पाप की ऊर्जा अधोगामी और पुण्य की

ऊर्जा ऊर्ध्वगामी होती है। अधोगामी ऊर्जा का ऊर्ध्वगामी ऊर्जा में परिवर्तन संभव है। तप और णमोकार मंत्र की शक्ति से यह ऊर्जा परिवर्तन संभव है। पर्युषण पर्व इसकी शुरुआत का एक बहुत अच्छा अवसर है।

अनुभव यह है कि पर्युषण पर्व का उपयोग रस्म अदायगी की तरह यांत्रिक रूप से चलता रहता है। समस्त यात्रा बाहर की ही रहती है। दस दिवसों में जिन दुकानों पर सत्राटा पसर जाता है, पर्व के समाप्त होते ही लोग टूट पड़ते हैं। सामान्य तौर पर निषिद्ध खाद्य व पेय पदार्थों के साथ भी यही देखने में आता है। अर्थ यह कि पर्युषण पर्व में तप तो होता है किंतु सँवर नहीं होता। यदि हो तो जीवन उत्सव हो सकता है और भीतर की यात्रा का शुभारंभ हो सकता है।

इस वर्ष कोरोना महामारी के कारण हम पर्युषण पर्व विषम परिस्थितियों में मनाएँगे। सम्पूर्ण समाज को विवेक और जागरूकता से कार्य करने की आवश्यकता होगी। शासन-प्रशासन के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए सतर्कता का संदेश समाज में व्यापक रूप से होगा तो हम पर्युषण पर्व का वांछित लाभ ले सकेंगे।

एक श्रद्धांजलि मूक प्राणियों के नाम

कोतमा। पर की पीड़ा अपनी करुणा की परीक्षा लेती है। विगत दिनों मुस्लिम समुदाय द्वारा मनाई गई ईद के दौरान अनेक जीवों की हिंसा हुई। हम अपने जाने-अनजाने लोगों को तो श्रद्धांजलि देने में सदैव तत्पर रहते हैं लेकिन उन अनगिनत मूक प्राणियों को श्रद्धांजलि देने का आयोजन गोलापूर्व महिला इकाई कोतमा की महिलाओं द्वारा किया गया। इसमें जीव हिंसा की शांति के लिए णमोकार महामंत्र का जाप किया और मौन रहकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।





» डॉ. शिखा सौरभ जैन
कटनी (म.प्र.)

त्योहारों का मौसम शुरू हो चुका है। कोरोना संक्रमण के काल में बाजार से मिठाइयाँ खरीदने में सभी संकोच कर रहे हैं। तो फिर आइये, क्यों न घर पर ही बनाई जाए शानदार मिठाइयाँ।

अंदरसा/इंदरसा



सामग्री : चावल 1 कटोरी (3-4 घंटे भीगे हुए), गुड़ 1/2 कटोरी, खसखस या सफेद तिल्ली 1/4 कटोरी, थोड़ा सा दूध, नमक 1 चुटकी एवं तलने के लिए तेल या घी।
विधि : सर्वप्रथम भीगे हुए चावल को एक छत्री में निथार लें। आधे घंटे बाद इसे मिक्सी में सूखा पीस लें। फिर किसी कपड़े या बर्तन में फैलाकर आधे घंटे के लिए रख दें। अब इसमें सूखे गुड़ को अच्छी तरह से मिक्स करें। इसमें चुटकी भर नमक मिलाकर धीरे-धीरे दूध डालकर नरम गूथ लें। अब इसके छोटे-छोटे से लड्डू बनाकर हल्का सा दबाकर इस पर खसखस या सफेद तिल्ली लपेटकर कढ़ाई में मद्धम आँच पर तलें। इसे गरमागरम या ठंडा भी सर्व किया जा सकता है।

बालूशाही



सामग्री : बारीक पिसा हुआ गेहूँ का आटा या मैदा 2 कटोरी, घी 1/2 कटोरी, मलाई 1/2 कटोरी, दही 1 कटोरी, बेकिंग पावडर 1/4 चम्मच, शकर 2 कटोरी (चाशनी बनाने के लिए)
विधि : सर्वप्रथम आटा या मैदा में घी को मिक्स करें। फिर इसमें मलाई मिक्स करें। अब इसमें नमक व बेकिंग पावडर डालकर दही से धीरे-धीरे गूथें और 15 मिनट के लिए ढँककर रख दें। अब शकर की दो तार की चाशनी तैयार कर लें। अब आटे की हल्के हाथ से गोल-गोल लोई बनाकर मद्धम आँच पर कढ़ाई में हल्का ब्राउन होने तक तलें। फिर चाशनी में थोड़ी देर के लिए डालकर निकाल लें। सर्व करने के लिए बालूशाही तैयार है।

ठडूला

सामग्री : खड़े उड़द का मोटा आटा 1 कटोरी, गेहूँ का आटा 1/4 कटोरी, खड़ा धना 1 चम्मच, सौंफ 1 चम्मच, हरी मिर्च 1-2, हींग 1/4 चम्मच, अदरक 1 इंच कुटा हुआ, हरा धनिया बारीक कटा हुआ 1/4 कप, कड़ी पत्ता 10-12 पत्ते, नमक स्वादानुसार एवं तलने के लिए तेल।



विधि : एक बाउल में उड़द का आटा, गेहूँ का आटा, नमक व सभी मसाले डालकर पानी में थोड़ा नरम गूथ लें। इसे दो घंटे के लिए ढँककर रख दें। दो घंटे बाद इसकी छोटी-छोटी लोई बनाकर आटा या तेल की मदद से हाथों से दबाते हुए बड़ा करें। इसे पूरी की तरह बेल भी सकते हैं। अब कढ़ाई में मद्धम आँच पर हल्का ब्राउन होने तक तलें। गरमागरम ठडूला अचार या चटनी के साथ सर्व करें।

लापसी/लपसी

सामग्री : गेहूँ या सिंघाड़े का आटा 1 कटोरी, शकर 1/3 कटोरी (2 कटोरी पानी में घुली हुई), घी 2 छोटी चम्मच, नमक 1 चुटकी, बादाम, काजू, चिरोंजी, पिस्ता कतरे हुए, इलायची 1/2 चम्मच।



विधि : आटे को मद्धम आँच पर थोड़ा सा घी डालकर हल्का ब्राउन होने तक सेंक लें। फिर इसमें शकर का घोल डालकर चम्मच से चलाते हुए पकाएँ। फिर इसमें 1 कटोरी पानी डालकर उबाल आने तक पकाएँ। इसमें इलायची व सारे मेवे मिलाकर गरमागरम सर्व करें।



जुड़ना भी है और तोड़ने वालों की पहचान कर उनसे परहेज भी करना है

» डॉ. निर्मल जैन 'जज'

सेवानिवृत्त न्यायाधीश, दिल्ली, मो. 9810568232

सर पर अगर बाल घने हो तो हमारे लिए मुकुट बन जाते हैं। हमारी रूप-सज्जा में चार चांद लगा देते हैं। लेकिन यही बाल अगर 2-2-4-4 की गिनती में सर पर इधर-उधर बिखरे हुए हों तो हम अपनी इस दुर्बलता को छुपाने के लिए सर पर टोपी पहनना शुरू कर देते हैं। जितना हम हमारे सर पर घने बाल हों, सजे सँवरे हों इधर-उधर बिखरे हुए ना हों इस के लिए सतर्क रहते हैं उतने कभी अपने आप को बिखरने से बचाने में और संगठित करने में जागरूक नहीं रहे। यही कारण है कि हमारे अलग-थलग पड़ने का फायदा उठा कर हर कोई हमारे तीर्थों को हानि पहुंचा कर, हमारे साधू-संतों की अवमानना करके हमें टोपी पहनने के प्रयास में सफल हो जाता है।

कहते हैं जैन कुल में जन्म लेना श्रेष्ठ है। लेकिन अपनी श्रेष्ठता को बनाए रखने के लिए क्या कभी सजग और सतर्क रहे हैं या आज भी हैं? इतिहास कहता है कि हमारी समाज में ऐसी-ऐसी विभूतियाँ थीं जिनसे राज्य-सत्ता चलती थी। लेकिन यह तब की बात है जब हम एक थे, इकट्ठे थे। कुछ परिस्थितियाँ और कारण ऐसे बने कि हम एक से अनेक हो गए, अनेक में से भी अनेक बनते चले गए। यह अलगाव क्यों? जबकि हमारे पूज्य एक हैं, आराध्य एक हैं, हमारा मंत्र एक है, हमारा लक्ष्य एक है। केवल लक्ष्य तक पहुंचने के मार्ग में थोड़ा अंतर है। लेकिन अलग रास्तों पर चलने का मतलब यह तो नहीं कि हम खुद भी अलग हो जाएं। उससे भी कठोर और आत्मघाती बात यह कि इस अलगाव का प्रदर्शन भी करें। अपना झण्डा ऊंचा करने के लिए अपने ही सहयोगी के झंडे के डंडे को काटने लेंगे। टूटते-बिखरते हम लोग करोड़ों से लाखों में रह गए। अगर इस स्थिति को रोकने के लिए प्रयास नहीं किए गए तो एक दिन आएगा कि हम अपने आपको ढूंढते रह जाएंगे।

हम तो अध्यात्म मार्ग के राही हैं। अध्यात्म मार्ग में तो कोई प्रतिद्वंदी नहीं होता। सभी सहयात्री होते हैं। किसी की सफलता दूसरे की विफलता का कारण नहीं बनती। किसी एक को मोक्ष मिलता है, सद्गति मिलती है तो इसका मतलब यह नहीं रेलवे की बर्थ की तरह दूसरे को नहीं मिलेगी। पूरा विश्व मोक्षगामी हो सकता है। तो प्रतिद्वंदिता किस बात की, भेदभाव किस बात का? धर्म-मार्ग की दौड़ में आगे-पीछे होने का मलाल क्यों और किसलिए?

एक और आश्चर्यजनक बात है हम आपस में रिश्ते-नाते, विवाह-शादी, आहार-व्यवहार सब बिना इस बात का भेदभाव किए करते हैं कि तुम कौन से मार्ग के रही हो और हम कौन से मार्ग के पथिक हैं। फिर उस बिंदु पर जाकर जहां सारे किन्तु-परंतु समाप्त हो जाते हैं, सारी विषमताएं, भेद-भाव मिट जाते हैं, हमारे मन में यह क्यों भाव आता है कि कोई हमसे अलग है और हम किसी से अलग हैं। देवालय, धर्म, धार्मिक पर्व सभी जुड़ाव का माध्यम हैं। आइए अतीत से कुछ हट कर करें। दूरियां मिटाने का संकल्प लें।

पर्युषण पर्व वस्तुतः सारे मनभेद को विस्मृत कर अपनों को साथ लेकर, अपने से जुड़ने और विकारों से दूर रहने का पर्व है। यह महापर्व मन-शुद्धि का पर्व है। आत्मा तो सदैव शुद्ध स्वरूपा है। यह तो मन है जो विकारों को आमंत्रित करके कर्मों का बंध करता है। विकारों से दूर रहें, अशुभ कर्मों का बंध न हो, लोक-परलोक दोनों को सँवारने के लिए मन का निर्मल बना रहना जरूरी है। श्री भगवान महावीर देशना समिति द्वारा अठारह दिवसीय पर्युषण पर्व आराधना 2020 नया अभियान शुरू हुआ है। इन 18 दिवस में हम प्रथम 8 दिन हम अपने 8 कर्मों का क्षय कर के अपने अंतर को निर्मल बना लेते हैं। मन में निर्मलता आने पर 10 धर्मों को अपने अंदर आत्मसात कर अपने लक्ष्य मोक्ष मार्ग की एक सोपान और चढ़ जाते हैं।

हम लोग अलग तो कभी नहीं थे लेकिन इस प्रयास से और नजदीक आ जाएंगे। जनबल, धनबल और मनबल तीनों रूप से संगठित और सशक्त बनेंगे। हमें दोहरी सजगता वरतनी है। जुड़ना भी है और तोड़ने वालों की पहचान कर उनसे परहेज भी करना है। कोरोना काल में अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी हमारी शाकाहारी और जीवनपद्धति को सराहा गया है, अपनाया गया है। यही समय है जब हम एक जुटता दिखा कर जैनधर्म को जनधर्म बना दें।

लक्ष्य एक, आराध्य एक है, एक ही मंत्र जपेंगे।
अठ दस मिलकर होंगे अठारह हम नवदीप बनेंगे।।
हम ज्योति, अहिंसा-अनेकांत की रोके नहीं रुकेगें।
पंथवाद के अधियारे को निश्चित दूर करेंगे।।

मान्या जैन को सुयश

टीकमगढ़। मान्या जैन ने 12वीं बोर्ड परीक्षा में 94.4% अंकों के साथ टीकमगढ़ की मेरिट में तीसरा स्थान प्राप्त किया। मान्या जैन ने एक बार फिर बोर्ड मेरिट में स्थान बनाया। सभी विषयों में 90 से अधिक अंक लाते हुये मान्या ने अतिरिक्त विषय जीव विज्ञान में भी 79 अंक प्राप्त किये हैं। उत्कृष्ट उ. मा. विद्यालय टीकमगढ़ की छात्रा मान्या ने कक्षा 11 से ही माध्यम बदल कर अंग्रेजी किया था। मान्या ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरुजनों को दिया है। मान्या जैन के पिताजी अजित जैन जलज शा. उ. मा. विद्यालय पठा टीकमगढ़ में विज्ञान शिक्षक, जैन दर्शन के प्रमुख विद्वान एवं करुणा अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के राष्ट्रीय प्रचारक हैं। माँ श्रीमती मनो जैन ने बच्चों की शिक्षा के लिए सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। मान्या जैन ने 10वीं की बोर्ड परीक्षा में मध्यप्रदेश में छठा स्थान प्राप्त किया था तथा पिछले दिनों राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता में देश में पहला स्थान प्राप्त किया था।





विश्वशांति में श्रावकाचार का योगदान



» डॉ. निर्मल शास्त्री
टीकमगढ़ (मप्र)

भारतीय संस्कृति साधना की तपोभूमि है, जो निःश्रेयस की अंतिम परिणति तक ले जाती है। यह परिणीति आचार- विचार में सदाचार से ओत- प्रोत है। जिसमें सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् का सूत्र मंत्र निहित रहता है। श्रमण संस्कृति राग-द्वेष रूपी कंटक से रहित वीतरागता से परिपूर्ण है। जिसमें सम्पूर्ण चारित्र का पालन किया जाता है। लेकिन यह अणुव्रत रूपी मंगल मंत्र से प्रारम्भ होती है। अणुव्रत मानवी जीवन को समुन्नत तो बनाता ही है, साथ ही विशुद्ध आभा मंडल का निर्माण कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को विकसित करता है। क्योंकि अणुव्रत का लक्ष्य अनीति, अनाचार, असंयम और अप्रामाणिकता से जर्जरित लोक जीवन में नीति, सदाचार, संयम और प्रामाणिकता का संचार करना है। इससे ही राष्ट्रीय एकीकरण, शांति, सौहार्द, वात्सल्य, समानता, प्राणियों के रक्षण, परस्पर सहयोग और समता के स्वरूप का निर्माण संभव है। यही कारण है कि महान ऋषियों और मनीषियों ने अणुव्रत को साधना का प्रथम सोपान माना है।

अणुव्रत आचरण का द्योतक है। जिसे 'चारित्रं खलु धम्मो' सूत्र के माध्यम से स्पष्ट किया है। जैन साधना के क्षेत्र में सम्यक् आचार निर्वाण प्राप्ति के लिए एक विशुद्ध साधन माना गया है। कर्मों की निर्जरा करने और आत्मा को विशुद्ध अवस्था में लाने के, लिए, श्रावक और मुनि आचार (सदाचरण) का पालन करते हैं। जिससे वे आध्यात्मिक विकास, की सीढ़ियां चढ़ते हुए विश्व शांति में अपनी विशुद्ध मंगलमयी भूमिका का निर्वाह करते हैं। श्रावक की आचार संहिता जग शांति एवं आध्यात्मिक क्षेत्र के लिए एक आधार सिला है। इसलिए श्रावक अंतर्दृष्टि से निर्मल, न्यायपूर्ण धनार्जन करने वाला, पाप भीरु, सत्संग पालन करने वाला शिष्टाचारी त्रिवर्ग साधक, परोपकारी और इन्द्रिय जयी होता है। पुरुषार्थसिद्धिपाय में सम्यक् चारित्र के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए आचार्य अमृत स्वामी महाराज कहते हैं कि यह चारित्र समस्त कषायों से रहित निर्मल होता है, जो कि आत्मा का निज स्वरूप है। निज रूप में शांति का सद्भाव होता है। इसी बात को दौलतराम जी भी कहते हैं कि व्यक्ति के सुख को बढ़ाने वाला यह वही है जो कि आत्मिक सुख, शांति और समृद्धि को प्रदान करता है।

'आतम को सुख है, सो सुख आकुलता बिन कहिये।'

अर्थात् आकुलता से रहित ही सच्चा सुख और इसी में सच्ची शांति है। यह सदाचरण से संभव है।

मानव द्वारा एक देश चारित्र का पालन करना ही अणुव्रत है। अणुव्रत अपनी मानवीयता से संलग्न होकर भौतिकवाद के साथ चलने की प्रेरणा तो देता है परन्तु भौतिकवादी बनने की नहीं। यही कारण है कि यह समस्याओं

का समाधान खोजने वाला, अशांति को दूर करने वाला, उन्नति का सहायक, दानवता का दाहक और मानवता का पालक है। इन्हीं कारणों से ज्ञात होता है कि अणुव्रतों से विश्वशांति संभव है। नीतिकारों ने कहा भी है कि -

**संयमः खलु जीवनम्, यह अणुव्रतों का घोष है।
सैकड़ों समस्याओं का, समाधान इसमें ठोस है।।**

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह का एक देश त्याग ही अणुव्रत है। अणुव्रत का लक्ष्य जीवन के हर क्षेत्र में हिंसा के सामने अहिंसा का, स्वार्थ परता के सामने निःस्वार्थता का अब्रह्म के सामने संयम का, धन की लिप्सा के सामने अनासक्ति का और चोरी के सामने पर द्रव्यापहारी रहितता के भाव का विकल्प प्रस्तुत करना है। जिससे व्यक्ति की भावना पवित्र, उन्नत, सदाचरण में संलग्न और संपूर्ण विश्व के लिए समानता, समता की दृष्टि प्रदान करती है।

अणुव्रतों के उद्देश्य

अणुव्रतों का उद्देश्य मानव को विकारों के दलदल से निकालकर सत्य, संयम, शील, संतोष, करुणा, दया और सद्भाव जैसे उत्तम गुणों में स्थापित करना है। अणुव्रत संकल्प पूर्वक त्याग करने का उपक्रम है। इस संबंध में आचार्य श्री भद्रकलंक स्वामी कहते हैं कि 'सर्वसावद्य निवृत्याद्यमणुव्रतम्।' अर्थात् सभी पापों से संकल्प पूर्वक निवृत्ति ही अणुव्रत है। इसी को स्पष्ट करते हुए आचार्य महाराज कहते हैं कि 'प्राणाति- पातवितथ व्यावहार स्तेयकाम मूर्च्छाभ्य स्थूललेभ्यः पापेभ्यो व्युपरमणमणुव्रतं भवति' अर्थात् पापों का संकल्प पूर्वक नियम बद्ध त्याग एवं स्थूल रूप से ममत्व परिणामों का त्याग ही अणुव्रत है। जो कि मुख्य रूप से ये पांच बतलाए गए हैं वे निम्न हैं :- अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अस्तेयाणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत और अपरिग्रहणुव्रत।

1. अहिंसाणुव्रत : अहिंसक दृष्टि, सृष्टि पर, सुधा वृष्टि कर, प्राणी मात्र को अमरता प्रदान करती है, क्योंकि 'सर्व भूयसु संजमो अहिंसा।' अहिंसा प्रत्येक जीव को मृत्युभय से दूर करती है तथा सभी को संरक्षण प्रदान करती है। यह सभी जीवों के लिए अभय दाता है। अहिंसा रूपी अस्त्र अपूर्व शक्ति का भंडार है, जिससे विनाश नहीं, सृजन, ह्रास नहीं उन्नति होती है। इससे कायरता नहीं, वीरता आती है, अशांति नहीं अपितु शांति की स्थापना होती है। यह अहिंसा विलक्षण शस्त्र है, जिसके निर्माण में ना तो साधनों की अपेक्षा होती है। न शरीर में पीड़ादायक परिणाम ही परिलक्षित होते हैं। इसमें मात्र भावों में परिवर्तन करना होता है। जो विशुद्ध दशा को करता है। अहिंसा जीवन की अदम्य शक्ति है। जो कि व्यक्ति के दिल को पवित्र रखती है। एक शायर के शब्दों में-

करूँ मैं दुश्मनी किससे, नहीं दुश्मन कोई मेरा।

मुहब्बत ने जगह दिल में, नहीं छोड़ी अदावत की।।

अहिंसक व्यक्ति आत्मिक क्षमता बाद का अनुयायी होता है वह भय, हिंसा, अशांति, विघटन, विनाश से दूर रहता है। उसकी प्रवृत्ति स्व- पर के लिए हितकारी होती है। उसके परिणाम अशांत नहीं होते हैं, बल्कि उसमें दया, प्रेम, स्नेह, करुणा विद्यमान रहती है जो विश्व शांति को स्थापित करने में सक्षम

होती है।

2. सत्याणुव्रत : सत्याणुव्रत जीवन में निंदा, पैशुन्य, कठिन वचन और विपरीत वृत्ति से दूर करता है। प्रमाद के योग से वस्तु के विपरीत कथन, का त्याग ही सत्याणुव्रत है। आचार्य महाराज कहते हैं कि जो कुछ भी प्रमाद और कषाय के योग से कथन कहा जाता है। वह सब असत्य जानना चाहिए है। परन्तु सद् अभिप्राय से हित, मित, प्रिय भाव सत्य की श्रेणी में आता है। सिद्धांतविज्ञ व नीतिकारों ने पीड़ा देने वाले वचनों को भी असत्य की श्रेणी में रखा है। असत्य से स्व- पर के परिणामों में अशांति हो जाती है। इसलिए सत्य वचन शांति, धर्म और समन्वय के आधारभूत हैं।

‘सत्य’ विश्व सृष्टि का आधार भूत तत्त्व है। क्योंकि सच्चमेव भयवं अर्थात् सत्य ही भगवान है और संसार में सारभूत है।

सत्य मूल सब सुकृत सुहाये, वेद पुराण मुदित मन गाये।

धर्म न दूजा सत्य समाना, आगम, निगम, पुराण बखाना।।

सत्य से व्यक्ति में विश्वास और श्रद्धा का समावेश होता है जिससे विश्वासघात, धोखाधड़ी, मिलावट, वैचारिक दूषण आदि समस्याओं का समाधान होता है। श्रावक घर में रहकर वह अपने जीवन संचालित करने व भोग- उपभोग के क्रियाकलापों से छूट नहीं सकता इसलिए उतने स्थूल रूप वचनों को छोड़कर बाकी बिना प्रयोजन, व्यर्थ के प्रयोग में न आने वाला झूठ, कठोर वचनों को छोड़ता है, यही सत्याणुव्रत है।

3. अचौर्याणुव्रत : अचौर्य व्यक्ति के मन में विद्यमान लोभ के कारण परद्रव्यापहरण की भावना को दूर करता है। लोभ से मायाचार की प्रवृत्ति बढ़ती है। उसके प्रभाव से व्यक्ति अच्छे-बुरे का विचार भूल जाता है, अतः यह व्रत व्यक्ति के लोभ पर अंकुश लगाता है। प्रमाद के योग से बिना, बिना पूछे हुए वस्तु का ग्रहण न करना ही अचौर्य है। आचार्यश्री ने कहा है कि पर द्रव्य ग्रहण के परिणाम होना ही चोरी है। इससे व्यक्ति सदैव चिन्तित और परेशान रहता है, जबकि अचौर्याणुव्रती शांति, सुख और चिन्ता रहित हो परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में शांति स्थापित करता है।

4. ब्रह्मचर्याणुव्रत : यह व्रत अपनी ओर देखने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह व्यक्ति में सुसंस्कारों का सृजन करता है। भोगाशक्ति को कम करके स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। इससे जनसंख्या, अनाचार, व्यभिचार, बलात्कार और असंयम जैसी समस्याओं से छुटकारा मिलता है। ब्रह्मचर्य का ह्रास, जीवन का नाश है, क्योंकि अब्रह्म सेवन से शक्ति, ऊर्जा, क्षमता और बुद्धि का ह्रास होता है। अब्रह्म का लक्षण बताते हुए आचार्यश्री बताते हैं कि - पुरुषवेद, स्त्रीवेद रूप राग परिणाम के संबंध से जो स्त्री पुरुषों की काम चेष्टा होती है, उसको अब्रह्म कहते हैं।

नाम कर्म रूप वेद कर्म से शरीर में द्रव्य रचना होती है, जबकि चारित्र मोहनीय वेद कर्म से स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों, नर-मादाओं में परस्पर रमण करने की वाँछ पूर्वक काम चेष्टा होती है वही अब्रह्म है। अब्रह्म से ही ब्रह्मचर्य दूषित होता है। जिससे व्यक्ति के परिणामों में अशांति रहती है। संकल्प पूर्वक स्वदार (पत्नी) संतोष व्रत का पालन करने वाला अणुव्रती श्रावक अपने परिणामों को शांत बना लेता है। कहा भी है कि-

जो पुरुष चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से अपनी स्त्री मात्र को छोड़ने के लिए समर्थ नहीं है, उन्हें बाकी समस्त स्त्रियों का सेवन करने का भाव नहीं करना चाहिए। गृहस्थाश्रम में रहने वाले जो पुरुष स्वदार संतोषी हैं, वे ही एक देश ब्रह्मचर्य धारण करते हैं, अर्थात् परस्त्री के प्रति होने वाले अशांत परिणामों से बचते हुए शांति का अनुभव करते हैं। जिससे उनके विचारों में दूषण, मन

में प्रदूषण और शरीर में विदूषण नहीं होता है। वह अपनी विकारी विचारधारा को हटाकर स्वस्थ विचारधारा का सृजन करता है। जिससे वर्तमान में व्याप्त वैचारिक प्रदूषण और अशांति की समस्या दूर होती है।

5. परिग्रहपरिमाणानुव्रत : परिग्रह परिमाण की वृत्ति जीवन को मर्यादित भोगोपभोग के लिए प्रेरित करती है, जिससे समाज में सामाजिक समरसता बनी रहती है। जबकि परिग्रह सामाजिक विद्वेष पैदा करता है। उससे सामाजिक असंतुलन भी बढ़ता है। जबकि समाज और देश में आर्थिक समता की स्थापना और विषमता के निवारण में अपरिग्रह अणुव्रत का बहुत बड़ा योगदान है। जो साम्यवाद और पूंजीवाद का निराकरण करता है। यह इच्छाओं का निरोध करके, आत्मिक शांति को स्थापित करता है। कहा भी है कि-

स्वामी इतना दीजिये, जामें कुटुंब समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

यह भावना अपरिग्रही व्यक्ति के ही होती है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह के लिए प्रयास करता है, न कि भौतिक सुख सुविधायें प्राप्त करना उसका लक्ष्य होता है।

आचार्य श्री ने मूर्च्छा को परिग्रह बताते हुए दो उदाहरणों से सिद्ध कर समझाया है कि लालसा, इच्छा ही व्यक्ति को परिग्रही बनाता है। जैसे हरित तृणों के अंकुरों को चरने वाले मृग के बच्चों में मंद मूर्च्छा होती है। जबकि चूहों के समूहों को नष्ट करने वाली बिल्ली में वही मूर्च्छा तीव्र होती है। मूर्च्छा को कम करने के साथ-साथ धन-धान्य आदि को कम करने के लिए भी प्रयास रत होना चाहिए। जो भी धन-धान्य, मनुष्य, घर, द्रव्य आदि छोड़ने के लिए समर्थ नहीं है, तो उसे परिग्रह के प्रति ममत्व परिणाम कम करने चाहिए, क्योंकि तत्त्व तो निवृत्ति स्वरूप है। जिन पदार्थों से अधिक ममत्व है, जिन्हें छोड़ने में यह पुरुष असमर्थ है उन्हें भी कम करना चाहिए। क्योंकि आत्मा का स्वरूप अन्य सब पदार्थों से भिन्न है।

प्राचीन काल में आवश्यकता प्रधान विनिमय था। परन्तु अब आविष्कार प्रधान विनिमय हो रहा है। जो अर्थ साध्य हो गया है। जिससे समाज में असमानता की स्थिति बन गयी है। क्योंकि वर्तमान में अर्थ साम्यवाद, समाजवाद और सर्वोदय के उद्गम का हेतु बन गया है। इसलिए अर्थवान उत्तुंग अट्टालिकाओं का मालिक बन बैठा और अर्थ विहीन व्यक्ति झोपड़ पट्टी के लिए तरस रहा है। यही विषमता अशांति की जनक है। अतएव आर्थिक विषमता का शमन आवश्यक है। एक के लिए सब न होकर, सबके लिए एक का सूत्र होना चाहिए। क्योंकि यही समष्टिवाद का मूल मंत्र है। जो एकता व शान्ति का आधार है।

अणुव्रत राष्ट्र व संस्कृति का नव निर्माण सक्षम है, क्योंकि अनैतिकता की तीखी धूप से अशांत और क्लान्त बना व्यक्ति अणुव्रतों की छतरी हाथ में लेकर अपनी अशांति और क्लान्ति को दूर कर सकता है। अणुव्रत नैतिक चरित्र की उन्नति से लेकर मानवीय गुणों की सम्पूर्ति करने में निष्णात है।

अणुव्रतों से आचार में अहिंसा, विचारों में समन्वय, वाणी में सत्यता, काय की क्रियान्विति में ब्रह्मचर्यत्व एवं जीवन में अपरिग्रह को व्याप्त करता है। जिससे हिंसा, आतंक, भ्रष्टाचार, अनाचार, स्वेच्छाचारिता और अशांति के कारणों को समाप्त कर शांति स्थापित करने के लिए ब्रह्मास्त्र हैं। कहा है कि-

दलित और मर्दित मानवता उठे, करे अपना उत्कर्ष।

व्यापक हो जन जन के मन में, मानव का अणुव्रत आदर्श।।



कोरोना काल की राष्ट्रीय, सामाजिक और पारिवारिक उपलब्धियाँ



» न्यायमूर्ति विमला जैन

30, निशात कॉलोनी, भोपाल (मप्र)
दूरभाष : 0755-2555533

वर्ष 2020 मानव सभ्यता के इतिहास में सबसे बड़ी महामारी कोरोना के लिए जाना जावेगा। इस आपदा में पूरा विश्व अपने अपने पर्व त्यौहार पूरी समझदारी के साथ मना रहा है। इस वर्ष के पर्युषण पर्व भी जैन समुदाय को विषम परिस्थितियों में मनाना है। प्रत्येक वस्तु, समय, व्यक्ति, बीमारी, सभी में बुराई के साथ कुछ अच्छाईयाँ भी विद्यमान रहती है। कोरोना काल बुराईयों से भरा ही है। किसी को कोई सुकून नहीं है। परन्तु इस काल में जो हमारे द्वारा अनुभव किया गया, देखा गया, सुना गया इसकी कुछ अच्छाईयाँ भी प्रकट हुई है, जो हमें अपरिग्रही और संतोषी बनाती है। हमें अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक और पारिवारिक उपलब्धियाँ मिली। इस कठिनतम कोरोना काल में हमें अनुभव हुआ है कि 2-4 जोड़ी कपड़ों में भी जीवन निर्वाह हो सकता है। गहनों की तो आवश्यकता ही नहीं है। बाहर आवागमन नहीं होने से टिकिट, पेट्रोल में होने वाले खर्च न के बराबर हो गए। समारोहों के आयोजन नहीं होने से वर्थडे और शादी की सालगिरह मनाने के खर्च नहीं हुए। शादी समारोहों में होने वाले अनावश्यक खर्चों में बेहद कमी आई। जिन लोगो को

अधिकांशतः घर से बाहर खाने की आदत थी, वह छूट गई। उन्हें आर्थिक लाभ तो हुआ ही है। सादे और सीमित भोजन में आनन्द पूर्वक संतोष के साथ जीना सीख लिया। घर का बना सादा पौष्टिक, स्वास्थ्यप्रद भोजन लेने से पाचन अच्छा रहा। अन्य सभी तरह की बीमारियों से छुटकारा मिला। इस तरह दवाओं का खर्च भी घटा।

बड़ी-बड़ी कंपनियों में कार्यरत युवाओं को घर से काम करने के कारण आने जाने के समय की बचत और आर्थिक लाभ भी हुआ। सड़कों पर वाहनों की संख्या घटी, प्रदूषण घटा, दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर में भारी कमी आई, यहाँ तक सुना गया कि 96 प्रतिशत महिलाओं का प्रसव सामान्य रूप से हुआ। जिनसे लोगों की कार्यक्षमता बढ़ी। परिवार संतुष्ट नजर आए।

सामाजिक संस्थाओं, बड़े-बड़े अधिकारियों-कर्मचारियों, कंपनी के मालिको, नेताओं ने भी अपरिग्रह के महत्व को समझा और जरूरत मंदो की मदद कर आनन्द और संतोष प्राप्त किया। बाजारों की चकाचैंध से दूर रहकर सीमित भोग-उपभोग में संतोष का अनुभव किया। इस तरह सादगी, सात्विकता और आत्म संयम में संतोष का अनुभव होने लगा है।

यहाँ मैं कोरोना काल की व्यक्तिगत उपलब्धि की चर्चा पूरी प्रसन्नता और गर्व के साथ करना चाहूँगी। मेरे दोनों बेटे तथा बेटी के बालक-बालिकाओं - अपने पौत्र-पौत्रियों-जो बैंगालुरु, लंदन और इन्दौर में निवास कर रहे है, को हमने ऑन लाईन भक्तामर (संस्कृत), मेरी भावना, सद्भावना प्रार्थना, शारदा स्तवन का अध्ययन करवाया और सभी ने बड़ी रुचि तथा तन्मयता के साथ पढ़कर मौखिक याद कर लिया। यदि कोरोना काल नहीं होता तो इस उपलब्धि से सभी को वंचित होना पड़ता।

सहयोग राशि

■ सौ. सोनम जैन परिणय पर श्री मुन्नालालजी जैन (बहरोल वाले) सागर	500	■ श्री अशोक कुमार चक्रेश कुमार जैन मकरोनिया	2500
■ श्री सुरेन्द्र कुमार जैन घड़ी	6000	■ श्रीमती विभूति हर्ष सिंघई भोपाल	3000
■ श्री संतोष जैन घड़ी, सागर	8850	■ श्रीमती सुनीता पत्नी बसंत कुमारजी बड़वानी नेहानगर सागर	3000
■ श्री सतेन्द्र कुमार जैन बीटीआईआरटी सागर	5000	■ श्रीमती विद्युत श्री के.एल. जैन, इंदौर	5100
■ श्री संदीप कुमार जैन, बीटीआईआरटी सागर	5000	■ इंजी. सुनील कुमार जैन, अंकुर कॉलोनी, सागर	2000
■ श्री सुभाषचंद्र खाद वाले, सागर	5000	■ पं. निर्मल कुमार सिंघई, मकरोनिया, सागर	2000
■ श्रीमती निधि जैन 'खाद' सागर	5000	■ श्रीमती मोतीबाई खुर्देलिया, सागर	5000
■ श्री संतोष कुमार देवेन्द्र कुमार जैन लुहारी वाले, सागर	5000	■ श्रीमती वंदना खुर्देलिया, सागर	5000
■ श्री आदेश कुमार जैन आईजीएम कम्प्यूटर, सागर	5000	■ श्री वासु खुर्देलिया, सागर	5000
■ श्री दिनेश कुमार जैन (दिलीप) नेहा नगर, सागर	5000	■ श्री सुरेन्द्र कुमार खुर्देलिया	6000
■ श्री संतोष कुमार जैन (बैटरी वाले)	7500	■ बूँद मल्टीफूड प्रोसेसिंग प्रा.लि., सागर	21000
■ श्री सुभाषचंद्र चौधरी, सागर	2000	■ श्री अशोक कुमार जैन 'वीर' सागर	10000
		■ श्री हीरालाल जैन मकरोनिया, सागर	2100



गोल्ल देश

» पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन

रजवांस, सागर (मप्र)

लेखकद्वय जुड़वाँ भाई होने के साथ देश के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठाचार्य भी हैं।

गोल्लदेश के अन्वेषण में अनेक मनीषियों ने शोध किये हैं। उनके विचारों में एकरूपता न होने से गोल्लदेश की स्थिति का निर्णय नहीं हो पा रहा है क्योंकि अन्वेषकों के चिन्तन में एकरूपता नहीं आ पायी है। इनके शोधकार्य को नकारा भी नहीं जा सकता और एकरूपता न होने से स्वीकार करने में भी मन संकोच करता है। इनके चिन्तन विचारणीय है।

मनीषियों की दृष्टि में गोल्लदेश

1. श्री उद्योतन सूरि यमुना और नर्मदा के बीच का क्षेत्र¹
2. कविवर श्री नवल शाह गोयलगढ़, गोपाचल या ग्वालियर²
3. डॉ. स्मिथ बुन्देलखण्ड का क्षेत्र³
4. पं. बंशीधर जैन शास्त्री, बीना ग्वालियर को गोल्लदेश कहा है।
5. श्री नाथूराम प्रेमी सूरत के पास गोल्लदेश स्वीकारा है।⁴
6. श्री परमानन्द जी शास्त्री गुना जिले में गोलाकोट को गोल्लदेश⁵
7. श्री मोहनलाल जी शास्त्री ओरछा स्टेट में गोल्लदेश कहा है।⁶
8. श्री रामजीत जैन एडवोकेट श्रवणबेलगोला दक्षिण में गोल्लदेश⁷
9. डॉ. कस्तूरचंद जैन सुमन गोलाकोट को ही गोल्लदेश कहते हैं।⁸
10. डॉ. कस्तूरचंद जैन कासलीवाल गोल्लदेश कहा⁹
11. पाण्डे नेमीचंद जैन चिंतित कोलकाता गोलाकोट को गोल्लदेश स्वीकार किया¹⁰
12. डॉ. नन्दलाल जैन रीवा महाराष्ट्र, कर्नाटक या आंध्रप्रदेश में¹¹
13. पं. फूलचन्द्र जैन शान्ति गोल्लदेश दक्षिण में होना चाहिए¹²
14. पं. प्रभूलाल जैन प्रेमी पोहरी ग्वालियर को गोल्लदेश कहा है।
15. डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर नागपुर दक्षिण में गोल्लदेश माना है।^{12क}
16. डॉ. कुन्दनलाल जैन गोदावरी के आस-पास गोल्लदेश माना है।^{12ए}
17. डॉ. यशवंत कुमार मलैया ग्वालियर का निकटवर्ती क्षेत्र गोल्लदेश माना है।
18. डॉ. दरबारी लाल कोठिया अहार जी के पास गोलपुर, गोल्लदेश है।^{12बी}
19. डॉ. हम्पा नागराजैया गोदावरी के पश्चिम में गोल्लदेश कहा है।¹³
20. दीवान प्रतिपाल सिंह बुन्देलखण्ड का क्षेत्र¹⁴
21. ब्र. जयकुमार जैन निशान्त चन्देल राज्य की सीमा

22. डॉ. जगदीश चन्द्र जैन गोदावरी नदी के आस पास¹⁶

इन विद्वान मनीषियों के शोध कार्यों, प्रमाणों एवं चिन्तन से निष्कर्ष निकलता है कि गोल्ल देश का अस्तित्व अवश्य रहा है किन्तु या कहाँ था यह विचारणीय है इसके निर्धारण के लिए कुछ बिन्दु दृष्ट्य हैं।

गोल्ल देश

गोल्ल देश का प्रमाण सातवीं शताब्दी में श्री उद्योतन सूरि द्वारा रचित कुवलय-माला-कहा नामक ग्रन्थ में अनेक देश एवं भाषाओं के नाम दिये गये हैं उसमें गोल्ल देश का नामोल्लेख है। जिसका स्थान मथुरा से विदिशा तक माना गया है।

शिलालेख की प्रमाणिकता अपने आप में प्रमाणिक रही है। शिलालेख लिखने की विशेष परम्परा रही है जो इतिहास के प्रथमाधार रहे हैं।

इनमें श्रवणबेलगोला स्थित चन्द्रगिरि के नवमी मंडप का शिलालेख क्रमांक 40(64) दृष्ट्य है-

गोल्लाचार्य इति प्रसिद्ध मुनिपोभूद्गोल्ल देशाधिपः।

पूर्व केन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः॥113॥

एरडू कट्टे वस्ति के पश्चिम की ओर मण्डप के द्वितीय स्तम्भ पर शिलालेख क्रमांक 47(127)

वीरणन्दि विवुधेन्द्र सन्ततौ नूतन चन्दिल नरेन्द्र वंश-

चूडामणिः प्रथित-गोल्लादेश भूपालकः किमपि कारणेनसः॥114॥¹⁷

इसमें लिखा है कि गोल्लाचार्य चन्देल वंश के राजा गोल्ल देश के अधिपति थे। इन्होंने किसी कारणवश दीक्षा ग्रहण की थी। इस शिलालेख से प्रकट होता है कि चन्देलवंश के राजा गोल्लदेश के अधिपति थे। अतः चंदेलवंशीय राज्य की सीमाओं से गोल्लदेश का निर्धारण किया जा सकता है।

गूगल विकिपीडिया

वर्तमान में इंटरनेट गूगल विकिपीडिया के द्वारा लगभग सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसमें चंदेल राज्य की स्थिति का केन्द्र खजुराहो माना है। यहाँ चन्देल राजा द्वारा बनवाये अनेक मंदिर भी हैं।

प्रतिहारों के पतन के साथ ही चन्देल नौवीं शताब्दी में सत्ता में आये। इनका साम्राज्य उत्तर में यमुना से लेकर सागर (मध्यप्रदेश मध्य भारत) तक और धसान से विन्ध्य पहाड़ियों तक फैला हुआ था। सुप्रसिद्ध कालिंजर का किला, खजुराहो, महोबा और अजयगढ़ इनके प्रमुख गढ़ थे।¹⁸

चंदेलवंश मध्यकालीन भारत का प्रसिद्ध राजवंश था, जिसने आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक स्वतंत्र रूप से यमुना और नर्मदा के बीच बुन्देलखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी भाग पर राज किया।¹⁸ श्री अयोध्या प्रसाद पांडेय ने चंदेलकालीन बुन्देलखण्ड के इतिहास पृ. 24-40 पर लिखा है कि चंदेल राज्य की सीमा वर्तमान बुन्देलखण्ड के साथ गौड़, खस, कौशल, काश्मीर, मैथिल, मालवा, चेदि, कुरु एवं गुर्जर तक थी। जिसका उल्लेख शिलालेखों में गोल्लदेश के नाम से किया गया है।

ग्वालियर गुर्जर, प्रतिहार, तोमर तथा कछवाहा राजवंशों की राजधानी रहा है।

धसान (दशार्ण) नदी भोपाल के निकटवर्ती पर्वतमाला से निकलकर

सिलवानी, बेगमगंज, सागर के नरयावली, उल्दन, धामोनी, बरायठा, ललितपुर के गिरार, मडावरा, टीकमगढ़ के बड़ागाँव, ककरवाहा, मौखरा, सुजारा चन्द्रपुरा छतरपुर से टीकमगढ़ या प्राचीन बिजावर से ओरछा राज्य की सीमा बनाती हुई बेतवा नदी में मिलती है। धसान नदी के दोनों किनारों पर गोलापूर्वादि दिगम्बर जैन जातियाँ निवास करती हैं। गोलापूर्व के बहुत से गोत्र जिन ग्रामों के नाम पर बने वे सब धसान नदी के पास ही पाये जाते हैं।

भाषा एवं संस्कृति की एकरूपता होने के कारण मथुरा से विदिशा तक के क्षेत्र को ही गोल्लदेश कहा जाता रहा होगा। इसमें ग्वालियर, गोलाकोट, खजुराहो, महोबा, कलिंगर आदि स्थान समाहित हो जाते रहें हैं। इन सभी क्षेत्रों को गोल्लदेश माना जा सकता है।

कविवर नवलशाह ने वर्धमान पुराण में गोयलगढ़ का कथन किया है।

दोहा

तिन में गोलापूर्व की उत्पत्ति कहुं बखान।
सम्बोधे श्री आदि जिन, इक्ष्वाकुवंश परमान॥285॥

चौपाई

गोयलगढ़ के वासी वैस, आये जहँ श्री आदि जिनेश।
चरण कमल प्रण में धरिशीश, अरुअस्तुति कीनी जगदीश॥286॥

तब प्रभु कृपावन्त अति भये, श्रावक व्रत तिनहू को दिये।
क्रिया चरण की दीनी शेष, आदर सहित सही निज ठीक॥287॥

पूरब थापे नेतुजु येह, गोयलगढ़ थानक तिन गेह।
ताते गोलापूरब नाम, भाषौ श्री जिनवर अभिराम॥288॥²⁰

इससे यह ध्वनित हो जाता है कि गोयलगढ़ का संबंध गोल्ल देश से

रहा है इस ही स्थान पर ही गोल्ल देश में निवास करने वाली गोलापूर्व, गोलालारे और गोलश्रृंगार आदि जैन जातियाँ निवास करती हैं। जो गोल्लदेश की स्थिति का निर्धारण करती हैं।

जातियाँ और देश-भारत के कई देश-प्रदेशों के नाम जातियों के नाम पर पड़े हैं जैसे- गुर्जर से गुजरात, मालव से मालवा, मराठा से महाराष्ट्र काठी से काठियावाड़, गौड़ से गौड़वाना, राजपूत से राजपूताना, और बुन्देला से बुन्देलखण्ड आदि देशों के नाम जातियाके के आधार पर पड़े हैं।

गोलापूर्वादि जातियाँ जिस क्षेत्र में निवास करती थी उनके गोत्र उन नगरों के नाम पर हैं। जैसे- चन्देरी से चन्देरिया, पपौहरिया, धवौलिया, गुगौरिया, पटौरिया, कनकपुरिया, भरतपुरिया हीरापुरिया आदि। अतः जिन नगरों के नाम पर गोत्र हैं उन नगरों का क्षेत्र गोल्लदेश कहा जा सकता है।

गोल्लदेश का उल्लेख कुवलयमाला नामक ग्रन्थ में हैं इसका रचना काल 783 ईस्वी है।²¹ जबकि चन्देल शासन काल 9वीं शताब्दी से माना गया है। चन्देल शासन जो गोल्लाचार्य बने उनका नाम गोल्लदेश के कारण पड़ा होगा क्योंकि गोल्लाचार्य से पहले गोल्लदेश का उल्लेख प्राप्त है।

शिलालेख एवं शान्त्रे के प्रमाण एवं विद्वानों के अभिमत से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि गोल्लदेश उत्तर भारत में चन्देल राज्य की सीमा मथुरा से विदिशा से अवस्थित था। इनकी भाषा आदि भी ब्रज, बुन्देलखण्डी रही है। श्रवणवेलगोला के शिलालेख में चन्देलवंशीय राजा को गोल्लदेश का अधिपति कहा है। जो प्रमाणिक भी हैं, इससे निश्चय हो जाता है कि चन्देलवंश की राज्य सीमा ही गोल्ल देश था। वर्तमान इतिहासकारों ने चन्देलवंशीय राज्य की सीमा मथुरा से विदिशा को ही स्वीकारा है। अतः यही गोल्ल देश कहा जा सकता है।

सन्दर्भ :-

- | | | | |
|-----|--|-------|--|
| 1- | कुवलयमाला कहा उद्योतन सूरि भाग 2 पृष्ठ 550-551, 558-559 | 12- | गोलापूर्वान्वय के आलोक में- डॉ दरबारीलाल कोठिया अभिनन्दन ग्रन्थ पृष्ठ 52 |
| 2- | वर्धमानपुराण कवि परिचय छन्द 285-288 | 12क- | गोलापूर्वान्वय : इतिहास और परम्परा आलेख पृष्ठ 4-8 डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर नागपुर |
| 3- | बुन्देलखण्ड का इतिहास अयोध्या प्रसाद पाण्डे पृष्ठ 20-30 | 12ए- | शोधादर्श पत्रिका, अप्रैल 1992 पृष्ठ 31-40 |
| 4- | अ. भा.दिगम्बर जैन गोलापूर्व डायरेक्टरी प्रकाशक मोहनलाल जैन शास्त्री सागर पृष्ठ क | 12बी- | डॉ दरबारी लाल कोठिया का भाषण 1966 ईस्वी अहार प्रकाशन पृष्ठ 3 |
| 5- | श्री परमानन्द जी शान्त्रे आलेख अनेकान्त जून 1969 पृष्ठ 50 | 13- | गोल्लाचार्य- किंग विकमिंग एमंग एसेटिक्स डॉ. हम्पा नागराजैया आलेख पृष्ठ1-4 |
| 6- | अ. भा.दिगम्बर जैन गोलापूर्व डायरेक्टरी प्रकाशक मोहनलाल जैन शास्त्री सागर | 14- | श्रवणवेलगोला सहित अनेक अभिलेखों एवं जैन साहित्य में गोल्लदेश एवं गोल्लाचार्य ब्र जयकुमार जैन निशान्त आलेख जैन सिद्धान्त जनवरी-जून 2018 |
| 7- | गोल्लदेश श्री रामजीत जैन एडवोकेट आलेख अनेकान्त मार्च 1995 पृष्ठ 18-23 | 16- | जैनागम साहित्य भारतीय समाज पृष्ठ 488 |
| 8- | पं. बंशीधर जैन व्याकरणाचार्य अभिनन्दन ग्रन्थ लेख गोलापूर्वान्वय एक परिशीलन | 17- | जैन शिलालेख संग्रह पृष्ठ 313 |
| 9- | खण्डेलवाल जैन समाज का इतिहास पृष्ठ 58 | 18- | मुक्तज्ञान कोश विकिपीडिया |
| 10- | गोलालारे जैन जाति इतिहास पृष्ठ 45 | 20- | वर्धमान पुराण कवि परिचय छन्द 285-288 |
| 11- | गोलालारे जैन जाति इतिहासपृष्ठ 45 | 21- | जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश भाग 1 इतिहास पृष्ठ 329 |



जैन धर्म में स्वच्छता की अवधारणा

» प्रो. डॉ. वीरसागर जैन 'शास्त्री'

विभागाध्यक्ष, लालबहादुर शास्त्री, संस्कृत वि.वि., नई दिल्ली

स्वच्छता आज का एक ज्वलंत विषय है। भारत सरकार के निर्देशों पर आज सर्वत्र बड़े ही व्यापक स्तर पर स्वच्छता अभियान चल रहा है। विचारणीय है कि स्वच्छता के सम्बन्ध में जैन धर्म क्या कहता है। जैन धर्म अहिंसावादी धर्म है। उसका कहना है कि सफाई करने से भी सूक्ष्म जीवों की हिंसा होती है, अतः हमें सफाई करने के बाद प्रायश्चित्त लेना चाहिए, जैसा कि 'आलोचना-पाठ' में कहा है -



“झाड़ू ले जगा बुहारी। चींटी आदिक जीव विदारी।”

इसी प्रकार के विचार अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर अनेक जैन आचार्यों ने प्रकट किये हैं। इनसे ज्ञात होता है कि जैन धर्म झाड़ू आदि से सफाई करने को अच्छा कार्य नहीं मानता है, अपितु उसकी गणना पापकार्यों में ही करता है और उसका प्रायश्चित्त लेने का विधान भी बनाता है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि जैन धर्म गंदगी का पक्षधर है। जैन धर्म गंदगी का किंचित् भी पक्षधर नहीं है, अपितु शुचिता और शुद्धता पर बहुत अधिक बल देता है। व्यावहारिक रूप में भी उसकी शुद्धि की बातें विश्वप्रसिद्ध हैं। जैन घरों में आज भी जो स्वच्छता-शुद्धता दिखाई देती है, वह अन्यत्र दुर्लभ ही है। दरअसल, बात यह है कि जैन आचार्य 'सफाई रखो' - यह तो कहते हैं, किन्तु 'सफाई करो' - यह नहीं कहते हैं। 'गंदगी मत फैलाओ' - यह तो कहते हैं, किन्तु 'झाड़ू आदि से सफाई करके हिंसात्मक कार्य करो' - यह नहीं कह रहे हैं तथा उनका यही चिन्तन बहुत यहाँ महत्वपूर्ण है, जो बड़े ध्यान से समझने योग्य है। सफाई रखना और सफाई करना - दोनों बातों में बड़ा अंतर है।

जैन आचार्यों के ये विचार ऊपर से देखने पर किसी को कुछ अटपटे-से लग सकते हैं, किन्तु यदि गम्भीरतापूर्वक चिन्तन किया जाए तो बड़े ही काम के सिद्ध होते हैं, क्योंकि इन्हीं से हमारी समस्या समूल समाप्त होगी। जैन आचार्यों के ये विचार स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए बड़े ही काम के हैं, अत्यंत मौलिक एवं अर्थपूर्ण हैं। इनमें बड़ा रहस्य छुपा हुआ है। इसके द्वारा जैन आचार्य कहना यह चाहते हैं कि हमारी जीवन-शैली ऐसी होनी चाहिए कि कूड़ा फैले ही नहीं, क्योंकि यदि कूड़ा उत्पन्न होगा तो वह कहीं-न-कहीं तो रहेगा ही और उससे वातावरण भी गंदा होगा ही।

आज हम देख रहे हैं कि हम अपने घर या कार्यालय को तो जैसे-तैसे स्वच्छ कर लेते हैं, परन्तु वहाँ से जो कूड़ा निकलता है, उससे बड़े-बड़े कूड़े के पहाड़ खड़े हो जाते हैं। उनमें से अनेक दुर्गन्धित गैसों निकलती रहती हैं

और नाना प्रकार की भयंकर समस्याएँ खड़ी होती रहती हैं। वर्तमान में दिल्ली को ही देख लीजिए, यहाँ भलस्वा और गाजीपुर में तो दो बड़े-बड़े कूड़े के पहाड़ बन ही गये हैं, सरकार ने अभी-अभी दो और स्थान इस कार्य के लिए आवंटित कर दिए हैं। समझ में नहीं आ रहा कि ऐसा कब तक किया जा सकेगा। अभी से ही सारी धरती और सारा आकाश कूड़े से भरता जा रहा है। आगे क्या होगा? हमारा स्वच्छता अभियान इस विधि से कैसे सफल होगा? यही कारण है कि आज हमें जैन आचार्यों के इस उपदेश पर ध्यान देना होगा कि 'सफाई करो, सफाई करो' - चिल्लाने की बजाय 'कूड़ा मत पैदा करो, गंदगी मत फैलाओ' - कहा जाए और साथ में यह भी कहा जाए कि जो अधिक/खतरनाक कूड़ा फैलाएगा उसे प्रायश्चित्त/दंड का भागी बनना होगा।

हम देखते हैं कि प्राचीन काल में भी हमारे देश में प्रायः सर्वत्र ऐसा ही था, प्रथम तो कूड़ा पैदा ही नहीं होता था और जो कुछ होता था तो उसका अन्य उपयोग हो जाता था; पर आज हमारी जीवनशैली बहुत खराब हो गई है और हम बहुत अधिक एवं बड़े ही खतरनाक कूड़े का उत्पादन कर रहे हैं। विचारणीय है कि हम इतने सारे एवं खतरनाक कूड़े का नाश

कैसे करेंगे? अतः यदि हमें अपने स्वच्छता अभियान को सफल बनाना है तो उन सब कार्यों को हतोत्साहित करना होगा, जिनसे अधिक/खतरनाक कूड़ा फैलता है, गंदगी फैलती है। यद्यपि यह सम्भव नहीं है कि कूड़ा बिल्कुल ही न पैदा न हो, होगा, अवश्य होगा और हमें उसकी सफाई भी अवश्य करनी ही होगी, अन्यथा अधिक गंदगी फैलेगी; परन्तु फिर भी सफाई करने की बजाय सफाई रखने वाली अवधारणा को हमें बहुत अधिक प्रोत्साहित करना होगा, तभी हमारा स्वच्छता अभियान सही अर्थों में सफल होगा। यूँ ही विकास के नाम पर विनाश की आँधी चलाना उचित नहीं है।

सफाई कैसे रखी जाए अथवा गंदगी कैसे कम फैले - इस विषय पर भी जैन आचार्यों का मार्गदर्शन बहुत महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में उन्होंने अनेक उपाय बताये हैं। यथा -

1. आरम्भ कार्य (जैसे- पृथ्वी खोदना, पानी फैलाना, अग्नि जलाना, वायु को बाधित करना, पेड़-पौधों को नुकसान पहुँचाना) कम से कम किये जाएँ। 'आरम्भ' जैनदर्शन का एक विशेष पारिभाषिक शब्द है। जिन कार्यों से सूक्ष्म जीवों को पीड़ा पहुँचे उन्हें आरम्भ कहते हैं। बहुत आरम्भकार्य करने से बहुत गंदगी फैलती है।

2. परिग्रह कम से कम इकट्ठा किया जाए। अनावश्यक परिग्रह इकट्ठा करने से बहुत गंदगी फैलती है। अनावश्यक वस्तुएँ काम नहीं आ पाती, खराब हो जाती हैं।

3. शुद्ध सात्विक भोजन किया जाए। भोजन की कच्ची, पश्ची सारी सामग्री अत्यंत सीमित मात्रा में एवं अत्यंत सावधानी से रखी जाए। भोजन वेस्ट न किया जाए।

इसी प्रकार के और भी अनेक उपाय बताए हैं। यदि हम सब इन उपायों पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान दें तो सहज ही गंदगी कम फैलेगी और हमारा 'स्वच्छ भारत अभियान' पूर्ण सफल होगा।



कुछ रिश्ते बड़े मीठे होते हैं...

“बहू... कहाँ मर गई?”
अंदर से आवाज- “जिंदा हूँ माँ जी।”
“तो फिर मेरी चाय क्यूँ अभी तक नहीं आई, कबसे पूजा करके बैठी हूँ।”
“ला रही हूँ माँ जी।” बहू चाय के साथ, भजिया भी ले आई।
सास ने कहा- “तेल का खिलाकर क्या मारोगी?”
बहू ने कहा- “ठीक हैं माँ जी ले जाती हूँ।”
सास ने कहा- “रहने दे अब बना दिया है तो खा लेती हूँ।”
सास ने भजिया उठाई और कहा- “कितनी गंदी भजिया बनाई है तुमने।”

बहू- “माँ जी मुझे कपड़े धोने हैं मैं जाती हूँ।”
बहू दरवाजे के पास छिपकर खड़ी हो गयी। सास भजिया पर टूट पड़ी और पूरी भजिया खत्म कर दी। बहू मुस्कराई और काम पर लग गई। दोपहर के खाने का वक्त हुआ। सास ने फिर आवाज लगाई- “कुछ खाने को मिलेगा।”

बहू ने आवाज नहीं दी। सास फिर चिल्लाई- “भूखे मारोगी क्या?”
बहू आई। सामने खिचड़ी रख दी। सास गुस्से से- “ये क्या है, मुझे नहीं खाना इसे। ले जाओ।”

बहू ने कहा- “आपको डॉक्टर ने दिन में खिचड़ी खाने को कहा है, खाना तो पड़ेगा ही।”

सास मुंह बनाते हुए, “हाँ तू मेरी माँ बन जा।” बहू फिर मुस्कराई और चली गई।

आज इनके घर पूजा थी। बहू सुबह 4 बजे से उठ गई। पहले स्नान किया, फिर फूल लाई। माला बनाई। रसोई साफ की। पकवान और भोजन बनाया। सुबह के 10 बज गए। अब सास भी उठ चुकी थी। बहू अब पंडित जी के साथ भगवान के वस्त्र तैयार कर रही थी। आज ऑफिस की छुट्टी भी थी। उनके पति भी घर पर थे। पूजा शुरू हुई। सास चिल्लाती बहू ये नहीं है, वो नहीं है। बहू दौड़ी-दौड़ी आती और सब करती। अब दोपहर के 3 बज गये थे। आरती की तैयारी चल रही थी। पंडित जी ने सबको आरती के लिए बुलाया और सबके हाथों में थाली दी। जैसे ही बहू ने थाली पकड़ी, थाली हाथों से गिर पड़ी। शायद भोजन बनाते हुए बहू के हाथों में तेल लगा था, जिसे वो पोंछना भूल गयी थी। सारे लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। कैसी बहू है, कुछ नहीं आता। एक काम भी ठीक से नहीं कर सकती। ना जाने कैसी बहू उठा लाए। एक आरती की थाली भी संभाल नहीं सकी। उसके पति भी गुस्सा हो गए पर सास चुप रही। कुछ नहीं कहा। बस यही बोल के छोड़ दिया- “सीख रही है, सब सीख जाएगी धीरे-धीरे।”

अब सबको खाना परोसा जाने लगा, बहू दौड़-दौड़ के खाना देती, फिर पानी लाती। करीब 70- 80 लोग हो गये थे, इधर दो नौकर और बहू अकेली फिर भी वहाँ सारा काम, बहुत ही अच्छे तरीके से करती। अब उसकी सास और कुछ आस-पड़ोस के लोग खाने पर बैठे, बहू ने खाना परोसना शुरू किया, सबको खाना दे दिया गया।

जैसे ही पहला निवाला सास ने खाया- “तुमने नमक ठीक नहीं डाला



क्या। एक काम ठीक से नहीं करती। पता नहीं मेरे बाद कैसे ये घर संभालेगी।”

आस-पड़ोस वालों को तो जानते ही हो ना साहब। वो बस बहाना ढूँढते हैं नुक्स निकालने का। फिर वो सब शुरू हो गये- ऐसा खाना है, ऐसी बहू है, ये वो वगैरहा-वगैरहा। दिन का खाना हो चुका था, अब बहू बर्तन साफ करने नौकरों के साथ लग गई। रात में जगराता का कार्यक्रम रखा गया था। बहू भी एक दो गीत गाने के लिए स्टेज पर चढ़ी। सास जोर से चिल्लाई- “मेरी नाक मत कटा देना, गाना नहीं आता तो मत गा, वापस आ जा।”

बहू मुस्कराई और गाने लगी। सबने उसके गाने की तारीफ की, पर सास मुंह फूलाते हुए बोली, “इससे अच्छा तो मैं गाती थी जवानी में, तुझे तो कुछ भी नहीं आता।” बहू मुस्कराई और चली गई। अब रात का खाना खिलाया जा रहा था। उसके पति के ऑफिस के दोस्त साइड में ही ड्रिंक करने लगे। उसका पति चिल्लाता- थोड़ा बर्फ लाओ, तो सास चिल्लाती यहाँ दाल नहीं है, फिर चिल्लाता कोल्ड ड्रिंक नहीं है, पापड़ ले आओ। इधर-उधर आखिरी में उसके पति की शराब गिर पड़ी उसके एक दोस्त पर और बोटल टूट गई। पति गुस्से में दो झापड़ अपनी पत्नी को लगाते हुए कहता है- “जाहिल कहीं की। देखकर नहीं कर सकती। तुझे इतना भी काम नहीं आता।”

सारे लोग देखने लगे। उसकी पत्नी रोते हुए कमरे की तरफ दौड़ी, फिर उसके दोस्तों ने कहा- “क्या यार पूरा मूड खराब कर दिया, यहाँ नहीं बुलाया होता, हम कहीं और पार्टी कर लेते। कैसी अनपढ़-गंवार बीवी ला रखी है तूने। उसे तो मेहमानों की इज्जत और काम करना तक नहीं आता, तुमने तो हमारी बेइज्जती कर दी।”

अब आस-पड़ोस की औरतों को और बहाना मिल गया था। वो कहने लगीं, “देखो क्या कर दिया तुम्हारी बहू ने। कोई काम की नहीं है। मैं तो कहती हूँ अपने बेटे की दूसरी शादी करा दो, छुटकारा पाओ इस गंवार से।”

सास उठी और अपने बेटे के पास जाकर उसे थप्पड़ मारा और कहा- “अरे नालायक, तुमने मेरी बहू को मारा, तेरी हिम्मत कैसे हुई। तेरी टाँग तोड़ दूंगी।” उसके बेटे के दोस्त कुछ कहने ही वाले थे कि उसकी माँ ने घूरते हुए कहा- “चुप, बिल्कुल चुप। यहाँ दारू पीने आये हो, जबकि पता है आज पूजा है और तुम्हें पार्टी करनी है, कैसे संस्कार दिये हैं तुम्हारे, माता-पिता ने। और किसने मेरी बहू को जाहिल बोला, जरा इधर आओ। चप्पल से मारूंगी

अगर मेरी बहू को किसी ने शब्द भी कहा तो। अरे पापी, तूने उस लड़की को बस इसलिए मारा कि तेरी शराब टूट गयी। वो बच्ची सुबह चार बजे से उठी है। घर का सारा काम कर रही है। ना सुबह से नाश्ता किया ना दिन का खाना खाया। फिर भी हंसते हुए सबकी बातें सुनते हुए, ताने सुनते हुए घर के काम में लगी रही। तेरे यार दोस्तो को वो अच्छी नहीं लगी। जूते से मारूंगी तेरे दोस्तों को जो कभी उन्होंने ऐसा कहा।”

उसके यार दोस्त चुपके से खिसक लिए। अब सास, बहू के कमरे मे गयी, और बहू का हाथ पकड़कर बाहर लाई। सबके सामने कहने लगी, “किसने कहा था अपनी बहू को घर से निकाल के दूसरी बहू ले आना। जरा सामने आओ।” कोई सामने नहीं आया।

फिर सास ने कहा, “तुम जानते भी क्या हो इस लड़की के बारे में। ये मेरी ‘माँ’ भी है, ‘बेटी’ भी। माँ इसलिए कि मुझे गलत काम करने पर डाँटती हैं और बेटी इसलिए, कभी-कभी मेरी दिल की भावनाएं समझ जाती हैं। मेरी दिन-रात सेवा करती है। मेरे हजार ताने सुनती है पर एक शब्द भी गलत नहीं कहती। ना सामने ना पीठ पीछे, और तुम कहते हो, दूसरी बहू ले आऊं।”

“याद है ना छुटकी की दादी, अपनी बहू की करतूत।” सास ने गुस्से से पड़ोस की महिला को कहा, “अभी पिछले हफ्ते ही तुम्हें मियां-बीवी भूखे

छोड़ घूमने चले गये थे। मेरी इसी बहू ने 7 दिनों तक तुम्हारे घर पर खाना-पानी यहाँ तक कि तुम्हारे पैर दबाने जाती थी और तुम इसे जाहिल बोलती हो। जाहिल तो तुम सब हो जो कोयले और हीरे में फर्क नहीं जानते। अगर आइंदा मेरी बहू के बारे में किसी ने एक लफज भी बोला तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा क्योंकि ये मेरी बहू नहीं, मेरी बेटी है।” बहू सिसकियाँ लेते हुये फिर कमरों में चली गई।

सास ने एक प्लेट उठायी और भोजन परोसा और बहू के कमरे में खुद ले गयी। सास को भोजन लाते देखा तो बहू ने कहा- “अरे माँ जी आप क्या कर रही हों, मैं खुद ले लेती।” सास ने प्यार से ताना मारते हुये कहा, “डर मत इसमें जहर नहीं है, मार नहीं डालूंगी तुझे। तुझे नई सास चाहिए होगी, पर मुझे अभी भी तू ही मेरे घर की बहू चाहिए।”

बहू ने अपनी सास को रोते हुए गले से लगा लिया। सास भी रो दी पहली बार और कहा- “चल खाना खा ले।”

फिर उसके आंसू पोंछते हुए बोली- “अरे तू मेरी बहू नहीं, मेरी बेटी है।”

कुछ रिश्ते बहुत मीठे होते हैं, बस बातें कड़वी होती हैं। बहू को प्यार देकर देखो, वो तुम्हारे परिवार के लिए अपने घर का आँगन छोड़कर आती है।

● संकलन : अनुपमा जैन, सनावद

पर्यावरण संरक्षण के प्रति संकेत



इंदौर। आज जब संपूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण से चिंतित है ऐसे में पर्यावरण को प्रदूषण से रोकने के विविध उपाय करने में भारत अग्रगण्य है। प्रदूषण रोकने में पेड़ों की कटाई रोकना और नये पेड़ लगाना बहुत कारगर उपाय है। जिस कार्य में युवा वर्ग उत्साहित होकर भाग लेने लगे तो समझना चाहिए कि वह सफलता का लक्ष्य प्राप्त करेगा। युवा पीढ़ी का पर्यावरण के प्रति जाकरूकता के शुभ संकेत हैं। ‘युवा संस्कार समिति गोलापूर्व जैन’ इन्दौर के युवाओं द्वारा श्री अतिशय क्षेत्र मलयगिरी पर समिति के संरक्षक डी.के. जैन पूर्व डी.एस.पी., व समन्वयक डॉ. अरविंद जैन के मार्गदर्शन, निर्देशन में वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न करवाया गया। डॉ. महेन्द्रकुमार जैन ‘मनुज’ ने बताया कि वृक्षारोपण के इस कार्यक्रम में विशेष रूप से मलयगिरी क्षेत्र इंदौर के संरक्षक पारस जैन, सुपुत्री डॉ. श्रीमति प्रीति जैन (सपरिवार), महिला संगठन की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती माला जैन, समाज के प्रत्येक कार्य में अग्रणी श्रीमती रश्मि जैन, महिला संगठन की सक्रिय कार्यकर्ता श्रीमती श्वेता जैन एवं समाज के मंत्री प्रवीण जैन, सांस्कृतिक मंत्री अविनेष जैन, समाज के ऊर्जावान व्यक्तित्व आशीष जैन रामबाग, समिति की तरफ से पंडित राजकुमार जैन, प्रवीण कुमार जैन सुखलिया, ऋषभ जैन, पवन जैन गोम्मटगिरी, आलोक जैन अरिहंत नगर आदि उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए। संपूर्ण कार्यक्रम बहुत ही आनंद के साथ संपन्न हुआ। पर्यावरण प्रेमियों ने इस कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

● डॉ. महेन्द्रकुमार जैन ‘मनुज’

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के परम आशीर्वाद और मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज की प्रेरणा से आयोजित जैन युवा प्रतिभा सम्मान-2020

मैत्री समूह यंग जैन अवार्ड 2020 के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित करता है। यंग जैन अवार्ड 2020 के लिए न्यूनतम योग्यता अंक

- 2020 में आयोजित परीक्षा में 10वीं में 85+% या
- 12वीं विज्ञान में 80+%, या 12वीं कला/वाणिज्य में 75+% या
- 2020 में आयोजित किसी प्रतियोगी परीक्षा में चयन
- सीनियर अवार्डी - 2020 में ग्रेजुएशन / पोस्ट ग्रेजुएशन (केवल पूर्व यंग जैन अवार्डीस के लिए)

(शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवारों और राष्ट्रीय / राज्य स्तर के एथलीटों / या संगीत, कला में विशेष उपलब्धियों को न्यूनतम अंकों की बाध्यता नहीं होगी)

आवेदन सिर्फ ऑनलाइन www.maitreesamoooh.com पर।

आवेदन फॉर्म की लिंक

<http://maitreesamoooh.com/yja2020>

आवेदन की अंतिम तिथि : 15 सितंबर 2020

आवेदन संबंधी पूछताछ

samoooh.saitree@gmail.com

मो. 9773536530, 9425424985,

8983694093, 9406550299

मैत्री समूह सम्पर्क

9425432295, 9425424984

अ.मा. गोलापूर्व महिला इकाइयों की विभिन्न गतिविधियाँ संपन्न

अखिल भारतीय गोलापूर्व महासभा की महिला इकाइयों द्वारा विभिन्न अवसरों पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। गोलापूर्व महिला इकाई छिंदवाड़ा की बहनों ने राखी के अवसर पर राखी की बहुत सुंदर-सुंदर थाली सजाई। मूक पशुओं की आत्मा की शांति हेतु 1 अगस्त 2020 को गणोकार मंत्र का पाठ किया। प्रत्येक घर में 1 घंटे सुबह 8 बजे से रात्रि 900 बजे तक सभी सदस्यों ने अपने घर पर परिवार के साथ पाठ किया। गोलापूर्व महिला इकाई मकरोनिचा द्वारा मोक्ष सप्तमी के अवसर पर लाडू सजाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई। गोलापूर्व महिला इकाई द्वारा कजलियों के अवसर पर सोलह श्रृंगार प्रतियोगिता आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के परिणाम का कार्यक्रम ऑनलाइन रखा गया। सभी प्रतिभागियों ने फल, फूल, सब्जी से गाने बनाये और उनसे श्रृंगार किया। हरियाली तीज पर सोलह श्रृंगार किये। इसमें सभी ने प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया। साथ ही रक्षाबंधन के दिन उपसर्ग दूर होकर 700 मुनियों के प्राणों की रक्षा हुई थी उसी को ध्यान में रखते हुए गणोकार महामंत्र के पाठ का आयोजन किया गया। इकाई की बहनों ने अपने घर पर पाठ किया।

गोलापूर्व महिला इकाई सागर क्रमांक 1 ने कलश दशमी के पावन अवसर पर कलश सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें प्रथम स्थान आरती सवाई, द्वितीय स्थान साधना जैन एवं हिमांशी जैन ने तथा तृतीय स्थान रुधिर सांधेलिया व सुनीता जी ने प्राप्त किया है। साथ ही सविता पडवार, दीपा सिंघई, रजनी आई टी आई, सरिता आदिनाथ मेडिको, समता जैन, रक्षा बिनेका ने विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। इसी प्रकार 1008 भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी के

निर्वाण कल्याणक पर लाडू बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई सभी ने बहुत आकर्षक लाडू बनाए और शुद्धि का भी पूर्ण ध्यान रखा। गोलापूर्व महिला इकाई सागर क्रमांक 02 द्वारा मोक्ष सप्तमी के पावन अवसर पर आरती थाल सजाओ एवं भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में आरती थाल एवं भजन के लिए पृथक-पृथक प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार की घोषणा की गई। इसी प्रकार स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक फैसी ड्रेस कॉम्पिटिशन का आयोजन किया गया जिसमें इकाई की बहनों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता की थीम थी- भारत देश के लिए जिए हैं, भारत देश के लिए मरे हैं, या भारत देश के लिए कार्य कर रहे हैं, ऐसे कोई भी, देश पर या देश प्रेम पर प्रस्तुति देना थी।

मुकुट सप्तमी के पावन अवसर पर गोलापूर्व महिला इकाई दमोह के 24 परिवारों ने कोरोना वायरस शान्ति के लिए पन्द्रह घंटे का श्री भक्तामर जी का पाठ किया। श्री पार्श्वनाथ जी के निर्वाण महोत्सव पर गोलापूर्व महिला इकाई भोपाल द्वारा ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी, धार्मिक पहेलियां आयोजित की गईं। इन सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन ग्रुप की सदस्या श्रीमती ऋतिका जैन जी द्वारा कराया गया। महिलाओं ने इसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। गोलापूर्व महिला इकाई कोतमा द्वारा घर घर जाकर पारिवारिक सर्वे का कार्य शुरू किया गया। (चित्र मुखपृष्ठ पर)

● संकलन चक्रेश शास्त्री, भोपाल

प्रभारी महिला महासभा



जैन जन्म शासन दिव्यकल्याण कार्यक्रम
श्री विद्यानंद गुरुवे नमः श्री शाक्तिसागर गुरुवे नमः श्री वसुन्दी गुरुवे नमः

प.पू. क्षपकराज शिरोमणि
श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की
प्रथम पुण्यतिथि

मंगलवार, 22 सितम्बर 2020 के अवसर पर

“आलेख प्रतियोगिता”

पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा
प.पू. श्रेष्ठ निर्यापकाचार्य श्री वसुन्दी जी मुनिराज

मुनि श्री नमिकाण्ड जी मुनि श्री वृहदाण्ड जी मुनि श्री शिवाण्ड जी मुनि श्री जाम्बवन्त जी देव श्री विश्वानन्द जी सुख श्री अमलानन्द जी सुख श्री भालानन्द जी

आलेख विषयः
क्षपकराज शिरोमणि आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराजः व्यक्तित्व व कृतित्व
जमा करने की अंतिम तिथि : गुरुवार, 10 सितम्बर 2020
आलेख शब्द सीमा : अधिकतम 1000 शब्द
पुरस्कार घोषणा- 19 सितम्बर, 2020 (यम सल्लेखना दिवस)

-: सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार श्रेणी :-
प्रथम पुरस्कार : 3100 /- तृतीय पुरस्कार : 1100 /-
द्वितीय पुरस्कार : 2100 /- सांत्वना पुरस्कार (5) : 500/-

आयोजक : जय शान्तिसागर निकेतन, मण्डोला, गाजियाबाद उप
पुरस्कार प्रदाता - अरविंद जैन अध्यक्ष, अशोक नगर, दिल्ली
महामंत्री, जय शान्तिसागर निकेतन, मंडोला

श्रीवाणी In association with GPC SUBSCRIBE NOW
f vasunandiji 9024620835 श्री वाणी www.shrivani.in Shrivani

इंटरनेशनल प्रथमाचार्य १०८ शांतिसागरजी महाराज ओलम्पियाड (IPSOP)

मन मन में हो शांतिसागर हो, घर घर में हो शांतिसागर ...

संपूर्ण विश्व में प्रथम बार किसी जैन संत पर ओलम्पियाड परीक्षा का आयोजन हो रहा है। जिन्होंने मुनि परंपरा को पुर्नर्जिवित किया। अपने त्याग, तपस्या और आचरण से विश्व में आदर्श प्रस्तुत किया, पंचमकाल में समाधि की उत्कृष्ट साधना हमारे मानसपटल पर अंकित की, उनके कारण आज आचार्य मुनि आर्यिका संघ भारतवर्ष में दृष्टिपथ है। ऐसे महान संत को दिक्षा लेकर १०१ वर्ष पूरे हुए हैं। प्रथमाचार्य का गुणगौरव करना विदेश और भारत के श्रावकों का परम कर्तव्य है.उनका जीवन परिचय हमें याद होना ही चाहिए। इसलिए **प्रथमाचार्य १०८ शांतिसागरजी महाराज ओलम्पियाड (IPSOP)** का आयोजन किया जा रहा है। अतः बच्चों से लेकर वृद्ध तक हर जैन इस परीक्षा में सहभागी होकर महान संत के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करे।

उम्र ३ वर्ष से ८० साल तक सबके लिए

१) प्रथमाचार्य का समाधी स्थान कौनसा है ? अ) भोजपुर ब) कुंयलगिरी क) मांगीतुंगी = ब

प्रथम पुरस्कार रु. ५ लाख
द्वितीय पुरस्कार रु. ३ लाख
तृतीय पुरस्कार रु. १ लाख
संयोजक पुरस्कार रु. ५१ हजार

प्रतियोगिता नियम

१) परीक्षा हिंदी और कन्नड़ में होगी।
२) अपना नाम अपने गांव के संयोजक के पास ही देना है।
३) परीक्षा २०२१ के दिवस में होगी।
४) यह परीक्षा अपने अपने गांव के मंदिर में लिखित होगी।
५) अच्छे अंक प्राप्त करने वालों को १००१ मोल्ल मेडल, सिल्वर मेडल, ब्रॉज मेडल से सम्मानित किया जाएगा और परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

परीक्षा शुल्क केश, ऑनलाईन तथा मुगलपे से भर सकते हैं।
Google Pay No : 7083787961
FOR ONLINE PAYMENT : A/c No. : Samavshran Jubilant Foundation
A/C No. : 6025446542 MICR Code : 413014104
IFS Code : MAHB0001409 Branch Code : 001409

परीक्षा शुल्क रु. १३०/- (भारत में)
\$28 (भारत के बाहर)

डॉ. सुधीर शास्त्री, चारामती
9657290660

वेबसाइट पर परिवार की जानकारी भरें एवं जनगणना में समाविष्ट हों

दिगम्बर जैन गोलापूर्व समाज के समस्त परिवारों के लिए, एक मंच पर, साथ लाने के लिए अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा ने जो महायज्ञ ऑनलाइन जनगणना के माध्यम से प्रारम्भ किया है, वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करके आप निम्न जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, रजिस्ट्रेशन न होने पर निम्न जानकारी से वंचित रहेंगे:-

1. हमारी अपनी समाज का गौरवशाली इतिहास की अति दुर्लभ जानकारियां।
 2. समाज के होने वाले आगामी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम के आयोजक की त्वरित जानकारी।
 3. समाज में होने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी।
 4. आपके, निजवंश के सुदूर परिवारों से जुड़ाव हो सकेगा।
 5. विदेश, देश, राज्य, जिला, तहसील, गांव में निवासरत समाज जन की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।
 6. मेट्रोमोनियल से संबंधित जानकारी ले सकेंगे।
 7. स्मृतिशेष के माध्यम से जो व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं रहे उनकी मेमोरी को आगे सहेज कर रखना।
- तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों की जानकारियां आपको इस वेबसाइट के माध्यम से समय-समय पर मिलती रहेंगी अति शीघ्र अपनी प्रविष्टि वेबसाइट पर समाविष्ट करें।

ऑनलाइन जनगणना में रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार भी समझी जा सकती है-

1. कंप्यूटर, लेपटॉप या मोबाइल पर वेबसाइट ओपन करें www.golapurvajainsamaj.com अथवा मोबाइल पर एप्लीकेशन डाउनलोड करे-<http://golapurvajainsamaj.com/public/DJGPMS.apk>
 2. ओपन करने के पश्चात आपको दो ऑप्शन दिखेंगे LOGIN और REGISTER
 3. REGISTER पर क्लिक करे एवं अपना नाम, मोबाइल नम्बर तथा स्वयं के द्वारा पासवर्ड बना कर डाले इसके बाद Create Account पर क्लिक करे।
 4. आपको एक OTP प्राप्त होगा, OTP अपने मोबाइल पर डाले, इसके बाद आपको एक फार्म प्राप्त होगा, उसमें परिवार के मुखिया की जानकारी भरना है, फार्म सफलतापूर्वक सम्मिट होने के बाद घर के अन्य सदस्यों की जानकारी भरने ले लिए साइट में ही Copy ऑप्शन पर चुन कर परिवार के प्रत्येक सदस्यों के अलग-अलग फार्म द्वारा जानकारी भरी जाएगी।
 5. परिवार के मुखिया एवं सभी सदस्यों की अलग-अलग फोटो प्रत्येक फार्म के साथ जोड़ना आवश्यक है वरना आपका फार्म Approve नहीं किया जा सकेगा, यह कार्य आपके डाटा की सुरक्षा के लिए किया जा रहा है।
 6. सभी संयुक्त परिवारों के लिए, एक महत्वपूर्ण बात का ध्यान रखना होगा कि एक संयुक्त परिवार में जितने भी विवाहित जोड़े होंगे, उनके परिवार की एंट्री अलग से डाली जाए एवं जितने भी अविवाहित बेटा-बेटियां हैं, उनकी एंट्री अपने माता-पिता के साथ ही डलेगी अर्थात संयुक्त परिवार में जितने भी कपल हैं उनकी अलग-अलग परिवार आईडी बनेगी।
 7. किसी कारणवश आपके मोबाइल नंबर पर ओ.टी.पी. नहीं आता है, तो अपने शहर के जनगणना टीम के सदस्य से संपर्क करें, जिसकी जानकारी वेबसाइट पर जनगणना वाले ऑप्शन में संयोजक टीम के द्वारा प्राप्त हो सकेगी।
- सहयोग के लिए हमेशा तत्पर हमारी टीम के स्थानीय सदस्य जो कि आप के लिए सहयोग प्रदान करेंगे इन सभी की जानकारी वेबसाइट पर संयोजक टीम में, जनगणना टीम के द्वारा प्राप्त हो सकेगी।

जनगणना एवं वेबसाइट की टेक्निकल से संबंधित किसी भी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

संयोजक-राजेश जैन-9303270923, सहसंयोजक-विवेक जैन-9754340315, दीपेश जैन-9993818201

हार्दिक शुभकामनाएँ...



सन्तोष कुमार जयकुमार

वी.आई.पी. एरिस्टोक्रेट, अमेरिकन टूरिस्टर सूटकेस, ब्रीफकेस
स्ट्राली, लेडीज पर्स, विवाह शादी के हारमुकुट, टार्च, ताला
छाता, हौजरी, सौन्दर्य सामग्री व उपहार सामान के विक्रेता

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.) 470-002

फोन-07582-243755